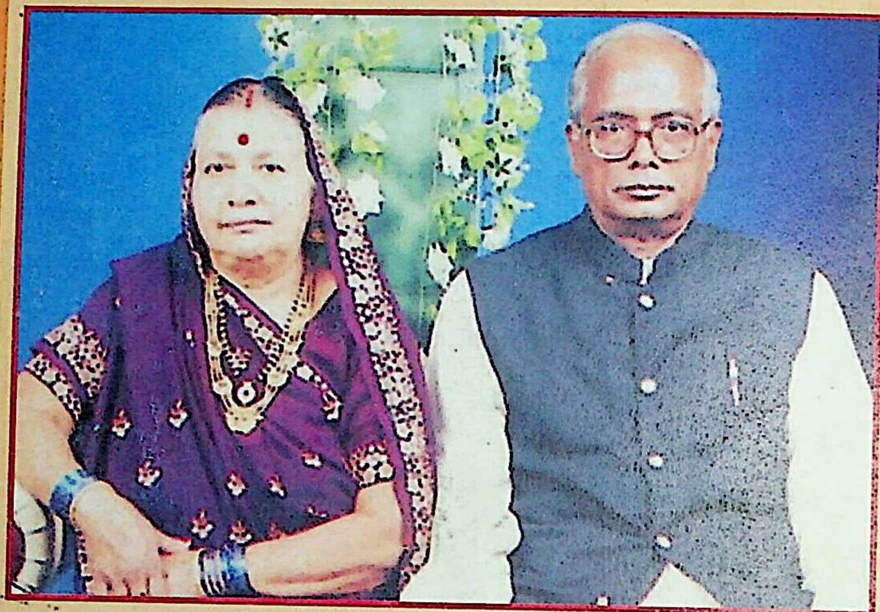
प्रार्थना सुमन

भजन



पं० कंचन कुमार

प्रस्तुत पुस्तक प्रार्थना सुमन के प्रायोजक गुप्ता परिवार



श्रीमती निर्मला देवी गुप्ता एवं श्री विक्रमादित्य गुप्त



श्री सुधीर कुमार आर्य एवं श्रीमती सीमा गुप्ता



श्री सौमित्र गुप्ता एवं श्रीमती प्रेमलता गुप्ता



शिखा गुप्ता



सिद्धार्थ गुप्ता



श्रुति गुप्ता

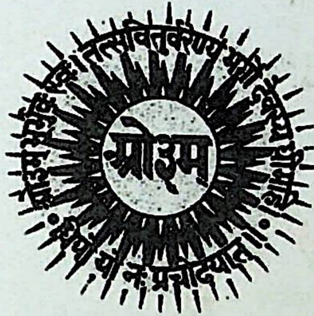


तन्मय गुप्ता

9.3 ब्र. आकाक्षाँ - आर्या

प्रार्थना सुमन

(भजन)



संकलन–सम्पादन–रचनाकार

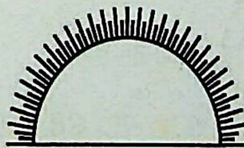
पं. कंचन कुमार

208-B, पश्चिम विहार एक्सटेंशन,

नई दिल्ली –110 063

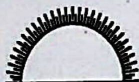
फोन : 011 - 25217058

प्रकाशकः



दीप्ति प्रकाशन

प्रकाशक :



दीप्ति प्रकाशन

पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63

वितरक :

गायत्री सत्संग सभा

208-B पश्चिम विहार एक्सटेंशन, नई दिल्ली-63

फोन : 011-25217058

संकलन-सम्पादन-रचनाकार

पं.कंचन कुमार

फोन : 09868717038

संपादन सहयोग

दिव्या आर्या

सेवा : 50/- रुपये मात्र

मुद्रक :

एक्सपो प्रिंट एण्ड मीडिया

WZ-97/12, सुन्दर पैलेस, ज्वाला हेड़ी,

पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63 मो.: 9810670015

जनहित में प्रकाशित एवं वितरित

ईश्वर स्तुति

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुष्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्व मम देव देव।।

तुम्हीं हो माता, पिता तुम्ही हो।
तुम्हीं हो भ्राता सखा हमारे।
तुम्हीं हो विद्या, धन भी तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो सर्वस्व देव प्यारे।

नमस्ते सते ते जगत्-कारणाय।
नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय।
नमोउद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय।
नमो ब्रह्मणें व्यापिने शाश्वताय।

नमस्ते निराकार निर्गुण निरूपम्।
नमस्ते शिवम् सत्य सुन्दर स्वरूपम्।।
नमस्ते अगोचर अगम ओजदायकम।
नमस्ते निरंजन निगम नीतिनायकम।।
नमस्ते महेश्वर महा मोक्षदाता।
नमस्ते विभू विश्वव्यापक विधाता।।
नमस्ते सदा सच्चिदानन्द स्वामी।
नमस्ते नियन्ता प्रणाम नमामि।।

आत्मउद्गार

जीवन संगीत

भजन, गीत एवं संगीत मनुष्य की आत्मा को आवेशों की लहरों में डूबने के लिए संसार में नहीं छोड़ देते बल्कि उसे उन लहरों में खेलते हुए पार उतरने की शक्ति देते हैं। उनमें जीवन का अमर संदेश है, जीवन की प्रेरणा है और ऐसी पूर्णता है जो ह्रदय के सब अभावों को भर देती है।

गीत संगीत मनुष्य के मन को बांधता है तन को प्रफुल्लित करता है। संगीत हमारी संस्कृति में प्रकृति के सौन्दर्य का उदगम माना गया है। भारतीय संगीत का आरम्भ ६००० ई० पू० माना गया है। हमारे ऋषि मुनियों ने संस्कृत के वेदों की रचना की एवं मंत्रों का संगीतमय ध्वनि में उच्चारण किया। उसके बाद गीत एवं संगीत हमारी संस्कृति से, जनजीवन से धार्मिक पर्वों एवं सांस्कृतिक उल्लासों के माध्यम से जुड़ता चला गया।

गीत संगीत की परिभाषा केवल मानवीय गायन तक ही सीमित नहीं वरन इसके अन्दर पशुओं की विविध बोलियां, पक्षियों की चहचहाट, वायु की सनसनाहट, कीट पतंगों का मधुर गुन्जन, एवं प्राकृतिक वातावरण की मनोरम छटा का भी प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

ऊपर से गिरते झरनों को देखें तो तेज गति से गिरता व बहता हुआ जल अपने प्रवाह मार्ग के आघात प्रतिघातों से चोट खाता भंवर बनाता कल-कल ध्वनि से आगे बहता घाटियों पर्वतों पहाड़ियों जंगलों में प्रतिध्वनित होकर संगीत का पर्याय बन जाता है।

वृक्षों की डालियों पर असंख्य पक्षी आनन्द से चहचहाते फुदकते फिरते अपने कलरव से प्रकृति की छटा में संगीत गुन्जायमान करते है।

वृक्षों की झूमती डालियां, पक्षियों की चहचहाट एवं उनमें अठखेलियां करती वायु प्राकृतिक संगीत का रूप धारण कर लेती है।

गाय, भैंस, भेड़, बकरी कितने जीव जन्तु रम्भाते एवं मिमियाते हैं भंवरे, मधु-मक्खियां, कोयल, बुलबुले, चिड़ियां बाग बगीचों में अपने स्वर से संगीतमय वातावरण उत्पन्न करती है।

वर्षा ऋतु की रिमझिम बरसती फुहार के संगीत में कोयल की कूह-कूह सुनाई देने लगती है। बादलों, घटाओं की गर्जना में भी मोर पंख फैला कर नृत्य करने लगते हैं। मौन पशु पक्षी अपने अपने क्रिया कलापों से संगीत का आनन्द अपने व्यवहार से व्यक्त करते हैं। बीन की आवाज सर्प जब सुन लेता है तो वह भी अपने बिल या झाड़ी से निकल कर अपने फन को ऊँचा उठाकर नृत्य करने, झूमने लगता है।

गीत संगीत कानों को ही प्रिय नहीं लगता बल्कि हृदय को भी धैर्य तथा आनन्द देने वाला होता है। इसके प्रभाव से अनेक आत्माओं को सांसारिक समस्याओं एवं मस्तिष्कीय परेशानियों से छुटकारा मिल जाता है। प्रस्तुत पुस्तक प्रार्थना सुमन में उसी आत्मिक आनन्द को समेटने का एक छोटा सा प्रयास किया गया है, कितना सफल होगा इसका मुल्यांकन तो प्रबुद्ध गीत संगीत प्रेमी भक्त ही करेंगे। मैंने स्वरचित २० भजन भी इस संकलन में रखे हैं।

प्रभु करे कि इस प्रयास से प्रत्येक मानव के जीवन में नई चेतना का संचार हो।

शुभकामनाओं सहित

-पं.कंचन कुमार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान प्रभु तुम सर्वान्तर्यामी हो। हे सर्वेश्वर, सर्व व्यापक प्रभु तुम अनादिकाल से, अनन्तकाल से संसार पर अपने उपकारों की वर्षा करते हो। हम जानते हैं कि मेघों की ओट में तुम ही मधुर हास्य करते हो। अरूण किरणों में हमने तुम्हारे चरणों को स्पर्श किया है। झरनों, नदियों, जलप्रपातों, जलधारा की कल कल में तुम्हारा ही स्वर है। हे प्रभो, तुम ही विश्व के कण कण में व्याप्त हो। तुम्हारा प्रताप ही वन, पर्वत आकाश, सागर, सूर्य, अग्नि, जल पृथ्वी के विविध रूपों में व्याप्त है। सावन भादों की जलधारा, कंपन करते पत्तों में तुम्हारा ही गीत है। चंचल सुवासित पवन में, नदी की तरंगों पर तुम ही नृत्य करते हो। सावन के बादलों में तुम्हारा ही उन्माद है।

हे जगदीश्वर, हम जानते है तुम्हारा प्रेम ही पत्ते-पत्ते पर स्वर्णाभा बनकर चमक रहा है। तुम्हारे प्रेम से ही अलसाए मेघ आकाश में झूम रहे हैं। तुम ही चुपके से नीरव रात्री में चले जाते हो और प्रभात की स्वर्णबेला में चले आते हो। पक्षियों, जीव जन्तु, एवं जलचर चौपायों में तुम्हारा ही गुन्जन सुनाई देता है। प्राणी मात्र की आकांक्षाओं कामनाओं को तुम ही प्रतिपल पूर्ण करते हो। तुम्हारी छाया में ही परम तृप्ति है।

हे पावन-प्रभो, तुम ही आषाढ़ की संध्या में बरसात की जलधारा, जलकण में, तुम ही बसन्त शिशिर के द्वार खोलते हो। प्रकृति की अनुभूति में तुम्हारा ही गीत है। तुम्हारा प्रकाश वृक्षों के पत्तों पर नृत्य कर हृदय को उल्लास से भरता है। तुम्हारा प्रकाश ही पक्षियों को कलरव प्रदान करता है, हृदय को दिव्य आनन्द से भरता है।

हे जगत पिता, जहां तक दृष्टि जाती है तुम्हारी सृष्टि में मंगल ही मंगल दिखाई देता है। तुम न जाने कहां से धरती पर प्रकाश पराग बिखेरते हो। समुद्र में अनमोल हीरे, मोती, रत्न, पन्नों के खजाने तुमने ही भरे हैं। हम नहीं जानते कि कौन से राग पर नन्दन वन के यौवन का मद जाग उठता है। आम्र-मंजरी की सुगन्ध में, नये पल्लवों के राग पर, चन्द्रकिरण की सुधा से भीगे आकाश में, अश्रुओं के आनन्द भरे स्पर्श में कौन सी वस्तु है उससे वायु पुलकित हो उठती है।

हे प्रभो, हमारी हृदय रूपी वीणा की तारों में तुम्हारा ही स्पन्दन है। लेकन हम युगों-युगों से आपको नहीं देख पाते हैं। हे नाथ, तुम ऐसा कर दो कि हम तुम्हारा प्रेम पा सके। ऐसी कृपा करो कि हम अपना जीवन तुम्हारी भक्ति, पूजा, सिमरन एवं संसार के प्राणीमात्र की सेवा में लगा सकें।

जगतपिता परमेश्वर, हममे सच्ची श्रद्धा हो। तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठ कर अपनी सभी प्रकार की आसुरी प्रवृतियों पर विजय पाने वाले बने। हे परमेश्वर, मन को मैला करने वाली भावनाओं, स्वार्थ, संकीर्णताओं, काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष, ईर्ष्या आदि कुटिल भावनाओं को हम दूर करें।

प्रभो, अपने गीतों, भजनों के पंख से हम तुम्हारे चरणों का स्पर्श करना चाहते हैं। हे प्रभो कृपा करो, मानसरोवर की ओर जाने वाले हंस जिस तरह दिन रात रूके बिना उड़ान भरते रहते हैं उसी तरह हम भी जीवन पथ एवं महा मृत्यु के पथ पर बढ़ते रहे। हे जगदीश्वर, हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो तथा हम विद्या एवं ज्ञान से पूर्ण बने।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

- पं.कंचन कुमार

भजन-सूची

प्राणायाम महिमा

बस ध्यान लगाने से, मन शान्त होता है ।
प्राणायाम करने से, सब काम होता है ।।

पहला है भस्त्रिका, हृदय रोग आये न ।
फिर है कपालभाति, शूगर सताये न ।
अग्निसार में मोटापे से, आराम होता है ।।

अनुलोम विलोम करो, बी.पी. होता है ठीक ।
त्रिबन्ध लगाने से, तबीयत होती नियमित ।
सब काम करे दाता, तेरा नाम होता है ।।

भ्रामरी करने से, टेंशन न कोई तकलीफ ।
ओंकार जपने से, प्रभु देते है आशीश ।
भक्तों का रखवाला, भगवान होता है ।।

रचना : कंचन कुमार

जिस आदमी को पढ़ने का शौक होता है वह मूर्ख नहीं रहता। भगवान का भजन करने वाले को पाप नहीं रहता, चुप रहने वाले की किसी से लड़ाई नहीं होती और जागने वाले को भय नहीं रहता।

–गीता प्रवचन से

परम पिता से प्रीत

परम पिता से प्रीत लगा, भवसागर से पार हो जा।

सत्संग दे विच्च आया कर, गुण ईश्वर के गाया कर।
जीवन वेद अनुसार बना, भवसागर से पार हो जा।।

अन्दर है प्रीतम तेरा, मन मंदिर में है डेरा।
ज्ञान की सच्ची जोत जगा, भवसागर से पार हो जा।

चल रही विषयों की अंधेरी, जोत बुझाई जिसने तेरी।
उससे अपना आप छुड़ा, भवसागर से पार हो जा।।

विषयों को नन्दलाल तू छोड़, परमपिता से नाता जोड़।
जीवन अपना शुद्ध बना, भवसागर से पार हो जा।।

पत्नी का विरह, अपनों से अनादर, बचा हुआ कर्ज, दुष्ट राजा की सेवा, दरिद्रता, तथा मूर्खो की सभा, ये सब बिना अग्नि के मनुष्य को जलाते हैं।

सत्संग वाली नगरी चल रे मना

पी प्रभु ज्ञान का जल रे मना। सत्संग वाली नगरी चल रे मना।।

इस नगरी में प्रेम की गंगा, जो भी नहाये हो जाए चंगा।
मल मल के हो निर्मल रे मना।। सत्संग........

सत्संग के हैं अजब नजारे, बहुत सुहाने बहुत ही प्यारे।
पा सुख शान्ति का फल रे मना।। सत्संग........

सत्संग का ये असर हुआ है, बाहर से सब बदल गया है।
अन्दर से तू बदल रे मना।। सत्संग........

सत्संग का तो फल है निराला, मन मंदिर में करके उजाला।
कर जीवन को सफल रे मना।। सत्संग........

किस्मत का चमका है सितारा, उदय हुआ है भाग्य हमारा।
अवसर जाये न निकल रे मना।। सत्संग........

चल रे पथिक शुभ कर्म कमाले, इस अवसर से लाभ उठाले।
देर न कर इक पल रे मना।। सत्संग........

जैसे फूल में गन्ध, तिलों में तेल, लकड़ी में आग, दूध में घी, गन्ने में गुड़, उसी तरह कण-कण में परमात्मा है। इसे पहचानना चाहिए।

सांचा प्रभु का नाम

सांचा बस एक प्रभु का नाम।
मन रे जप ले तू सुबहो शाम।।

वो अमृत का सच्चा सागर।
क्यों भटके तू प्यासा।।
इस अमृत से प्यास बुझा ले।
दूर हो तेरी निराशा।।
शरण में आकर शीश झुकाकर, कर उसको प्रणाम।।

हर मुश्किल में वो ही आकर।
सबको धीर बंधाता।।
भंवर में अटकी नैया को भी ।
वो ही पार लगाता।।
संकट रूपी इस नैया को, पल में लेता थाम।।

वो घट घट की जानन हारा।
वो ही पालन हारा।।
हर निर्बल और दीन दुखी का।
वो ही एक सहारा।।
वो है प्रेम का भूखा प्यारे, मांगे न कोई दाम।।

तुझे फूलों में देखूं

तुझे फूलों में देखूं, सितारों में देखूं।
कण कण में बसा है, नाम तेरा।
जहां देखूं प्रभु तेरा काम देखूं।।

मेरे जीने का, तू है सहारा।
मुझे जान से भी, है तू प्यारा।।
छुप के बैठा है अन्तर में प्रभु मेरा।
जहां देखूं प्रभु तेरा काम देखूं।।

प्रभु मैं मांगू कुछ न तुमसे।
दूर न होना कभी तुम हमसे।।
आके पलको में बस जाओ मेरे भगवन।
जहां देखूं प्रभु तेरा काम देखूं।।

हर सांस में तुझे मिलने की आस है।
ऐसा लगे तू कहीं आस पास है।।
तेरे दर्शन की प्यास बुझाओ भगवन।
जहां देखूं प्रभु तेरा काम देखूं।।

कबिरा कुंआ एक है, पनिहारी अनेक।
बरतन सबके न्यारे है, पर पानी सबमें एक।।

क्यों दूर है इस भक्ति से

तर्ज : ये बन्धन तो प्यार का बन्धन है।

क्यों दूर है इस भक्ति से, प्रभु भक्ति की शक्ति से,
मग़रूर क्यों है मस्ती से, पूछो अपनी हस्ती से।
ज़ीवन तो एक दिन जाना है, लौट के नहीं आना है।।

इस मन मन्दिर में वो है उनकी प्यारी मूरत।
जहां भी देखूं वही दिखे उनकी प्यारी सूरत।।
तू कर्महीन क्यों होया, क्यों व्यर्थ की बात में खोया।।
दुनिया जागी तू सोया, जब आंख खुली तो रोया।। जीवन तो...

गुज़रान यहां कुछ दिन की, दुनिया एक सराए।
जग दो दिन का मेला, कोई आए कोई जाए।।
जो चाहो गर कुछ पाना, उस प्रभु का ध्यान लगाना।
जीवन चाहो तर जाना, प्रभु के चरणों में आना।। जीवन तो...

सुन वेदों में बहती है, इक अमृत की धारा।
जिसने पिया ये अमृत, उसने जनम संवारा।।
वो ही तो है महादानी, सब उनकी मेहरबानी।
अब भी छोड़ो नादानी, सुन वेद की अमृत वाणी।। जीवन तो...

रचना :- कंचन कुमार

जो बन्दा खुदी से जुदा हो गया।
खुदा की कसम वो खुदा हो गया।।

हम आए शरण तुम्हारी

हम आए शरण तुम्हारी।
हम आए शरण तुम्हारी।।

तुम हो सारे जग के पालक।
मातां-पिता तुम हम हैं बालक।
रक्षा करो हमारी।। हम आए....

काम क्रोध से हमें बचाना।
टूटी नैया पार लगाना।
रैन बड़ी अंधियारी।। हम आए....

इस कुटिया में अमृत भर दो।
रोम रोम मेरा पुलकित कर दो।
तेरे बने पुजारी।। हम आए....

पतितों को हम गले लगाएं।
दुखियों के हम कष्ट मिटाएं।
बन कर हम हितकारी।। हम आए....

मीठे मीठे वचन सुनायें।
फूल बने सबको महकायें।
होकर हम बलकारी।। हम आए....

बुरे भले हैं तेरे भगवन।
आशानन्द हैं तेरे अर्पण।
भिक्षा डाल भंडारी।। हम आए....

एक याद तुम्हारी याद रहे



एक याद तुम्हारी याद रहे।
और दिल में किसी की याद न हो।।
मेरे सुन्दर दिल की बगिया में।
कोई तेरे बिना आबाद न हो।।

ये मेरी निगाहें तेरे ही।
दीदार की भगवन प्यासी हो।।
तेरे दीद बिना दिलबर प्यारे।
ये जीवन यूं बरबाद न हो।।

तेरी याद की मस्ती में खोकर।
भवसागर से तर जाऊं मैं।।
तेरा नाम रहे हर दम लब पर।
बस और कोई फरियाद न हो।।

हर गीत मेरा तेरी भक्ति का।
दीवाना बना दे दुनिया को।।
न वीर रहे कोई दिल ऐसा।
जिस दिल में तुम्हारी याद न हो।।

मुझे ज्ञान दो

तर्ज : किसी राह पे किसी मोड़ पर

मुझे ज्ञान दो वरदान दो।
मैं शरण तुम्हारी सदा रहूँ।
हे जगतपिता, हे जगतपिता......।।

मैं तुम्हारे चरणों की धूल हूँ।
हाँ मैं धूल हूं-हां मैं धूल हूं।।
मेरा मन रहे तेरी भक्ति में।
मुझे अपनों चरणों का ध्यान दो।।

है बड़ी कृपा प्रभु आपकी।
प्रभु आपकी - प्रभु आपकी।।
मुझे मिल गया तेरा आसरा।
मुझे शक्ति भक्ति का दान दो।।

तुम्हें क्या करूँ अर्पण प्रभु।
अर्पण प्रभु-अर्पण प्रभु।।
है तेरा तुझे अर्पण प्रभु।
मुझे बुद्धि बल और ज्ञान दो।।

रचना : कंचन कुमार

मत खोलो प्रभु मेरा खाता

मत खोलो प्रभु जी मेरा खाता।
मेरा जनम जनम का नाता।।

कौन जनम मैंने पाप न किन्हे।
कौन जनम तू ने माफ न कीन्हे।
मैं हूं दीन, तुम हो विधाता।।

खाता मेरा काला प्यारे।
पापों से रंग डाला प्यारे।
मैं हूं याचक तुम मेरे दाता।।

तू ने सबकी झोली भर दी।
तू ने सबकी पीड़ा हर ली।
मेरे अवगुण बख्शो विधाता।।

पूत कपूत भले ही होए।
पिता न अपने प्रण को खोए।
कभी होती न माता कुमाता।।

तीन चीजों में सदा सन्तोष करना चाहिए, अपनी पत्नी में, भोजन में तथा धन में। तीन चीजों में कभी संन्तोष नहीं करना चाहिए, अध्ययन में, जप में तथा दान में।

तृष्णा न जाए मन से

तृष्णा न जाए मन से, भक्ति न आए मन में।
जतन करूं मैं हज़ार, कैसे लगेगी नैया पार।।

इक पल माया, साथ न छोड़े।
जिधर जिधर चाहे मुझे मोड़े।।
प्रभु भक्ति से प्रभु सिमरन से।
मेरा रिश्ता नाता तोड़े।।

माया न जाए मन से, भक्ति न आए मन में।
जीवन न जाए बेकार, कैसे लगेगी नैया पार।।

क्षमा करो मेरे प्रभुवर स्वामी।
चंचलता मन की लाचारी।।
लगन जगा दो मन में स्वामी।
तुम हो प्रभु जी अन्तर्यामी।।

मन न बने अनुरागी, भावना बने न त्यागी।
दया करो करतार, हो कैसे लगेगी नैया पार।।

रहिमन चुप हो बैठिये, देख दिनन के फेर।
जब नीके दिन आयेंगे, बनत न लागे देर।।

छुक-छुक रेल चली

छुक-छुक, छुक-छुक रेल चली है जीवन की।
हंसना, रोना, जागना, सोना, खोना, पाना, सुख, दुख।

छोटी-छोटी सी बातों से मोटी-मोटी खबरों तक।
ये गाड़ी ले जाएगी हमको, मां की गोद से कबरों तक।
सब चिल्लाते रह जाएंगे रूक रूक रूक रूक रूक।।

सामां बांध के रखों लेकिन, चोरों से होशियार रहो।
जाने कब चलना पड़ जाए चलने को तैयार रहो।
जाने कब सीटी बज जाए, सिगनल जाए झुक।।

पाप और पुण्य की गठरी बांधे सत्य नगर को जाना है।
जीवन नगरी छोड़ के हमको दूर सफर पे जाना है।
ये भी सोच ले हमने क्या क्या माल किया है बुक।।

रात और दिन इस रेल के डिब्बे, और सांसों का इंजन है।
उम्र है इस गाड़ी के पहिये, और चिता स्टेशन है।
जैसे दो पटरी हो ऐसे, साथ चले सुख-दुख।।

सांस एक ऱोज़ हवाओं में बिखर जायेगी।
तेरी मिट्टी कभी मिट्टी में उतर जायेगी।।
किसको मालूम सफर खत्म कहां होता है।
जाने किस मोड़ पे ये रेल ठहर जायेगी।।

उद्धार करो भगवान

उद्धार करो भगवान, तुम्हरी शरण पड़े।
भव पार करो भगवान, तुम्हारी शरण पड़े।।

कैसे तेरा नाम ध्याएं।
कैसे तुम्हरी लगन जगाएं।
हृदय जगा दो ज्ञान।। तुम्हरी....

पन्थ मतों की सुन-सुन बातें।
द्वार तेरे तक पहुंच न पाते।
भटके बीच जहान।। तुम्हरी....

तू ही श्यामल कृष्ण मुरारी।
राम तू ही, तू ही त्रिपुरारी।
तुम ही बने हनुमान।। तुम्हरी....

ऐसी अन्दर जोत जगा दो।
हम दीनों को गले लगा लो।
हे प्रभु जी दया निधान।। तुम्हरी....

काबू में अपना मन नहीं तो ध्यान क्या करे।
आंखे न करे दीदार तो भगवान क्या करे।।

दुख भी मुझे प्यारे हैं

तर्ज : संसार है एक नदिया

सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुख भी मुझे प्यारे हैं।
छोड़ूं मैं किसे भगवन, दोनों ही तुम्हारे हैं।

सुख-दुख ही दुनिया की, गाड़ी को चलाते हैं।
सुख-दुख की हम सबको, इंसान बनाते हैं।
संसार की नदिया के, दोनो ही किनारे हैं।।

दुख चाहे न कोई भी, सब सुख को तरसते हैं।
दुख में सब रोते हैं, सुख में सब हंसते हैं।
सुख मिले उसके पीछे, दुख ही तो सहारे हैं।।

सुख में तेरा शुक्र करूं दुख में फरियाद करूं।
जिस हाल में रखे मुझे, मैं तुमको याद करूं।
मैंने तो तेरे आगे, ये हाथ पसारे हैं।।

जो है तेरी रज़ा उसमें, देखूं मैं पकड़ कैसे।
मैं कैसे कहूं मेरे, कर्मों के हैं फल कैसे।
चख कर भी न देखूंगा, मीठे है कि खारे हैं।।

दुख की धूप कभी सर पर है, कभी तो है सुख की छाया
बदल बदल कर समय सभी पर बारी बारी आया।

धीरे धीरे मोड़

तर्ज : धीरे-धीरे बोल कोई

धीरे-धीरे मोड़ तू इस मन को,
इस मन को तू, इस मन को।
मन मोड़ा फ़िर डर नहीं,
कोई दूर प्रभु का घर नहीं।।

मन लोभी मन कपटी मन है चोर।
कहते आए यह पल-पल में और।।
कुछ जान ले, कुछ मान ले।
होना है विचलित नहीं, कोई दूर प्रभु का घर नहीं।।

जप, तप, तीरथ सब होते बेकार।
जब तक मन में रहते भरे विकार।।
बेईमान क्यों, नादान क्यों।
गफलत ऐसे कर नहीं, कोई दूर प्रभु का घर नहीं।।

जीत लिया मन फिर ईश्वर नहीं दूर।
जान बूझ क्यों इंसा तू मज़बूर।।
अभ्यास से, बैराग से,
कुछ भी है दुष्कर नहीं, कोई दूर प्रभु का घर नहीं।।

माया मरी न मन मरा, मर मर गए शरीर।
आशा तृष्णा न मरी, कह गए दास कबीर।।

तेरे चरणों में (गज़ल)

तर्ज : दिल में एक लहर सी

तेरे चरणों में ज़िन्दगी है मेरी।
मैं हूं बन्दा, तू बन्दगी है मेरी।।

तुझ तलक मैं पहुंच नहीं पाता।
चलते रहना ही ज़िन्दगी है मेरी।।

तू मिले तो करार मिल जाए।
ऐसी तकदीर तो नहीं है मेरी।।

तेरी यादों में खो गया है अमर।
दर हकीकत ये बेखुदी है मेरी।।

राह दुश्वार है दूर है मंजिल,
हर कदम को सम्भालना होगा।
पांव में चुभा हुआ हर कांटा,
चलते चलते निकालना होगा।।

जैसे महान पर्वत हवा के झकोरों से विकम्पित नहीं होता वैसे ही बुद्धिमान लोग निन्दा और स्तुति से विचलित नहीं होते।।

-महात्मा बुद्ध

नमस्कार–नमस्कार

आये तेरे द्वार नमस्कार नमस्कार।
सब जग के आधार नमस्कार नमस्कार।।
सर्वाधार प्रभु जी हम आए तेरे द्वार।
हम आये तेरे द्वार, नमस्कार नमस्कार।।

सूरज और चांद में तेरा ही उजाला है।
तूने पहन रखी है सितारों की माला है।
सब जग के आधार नमस्कार नमस्कार।।

पर्वतों की चोटियों को बादल हैं चूमते।
पृथ्वी सूर्य, चांद सितारे गा रहे हैं झूमते।
नियम के अनुसार नमस्कार नमस्कार।।

कोयल की ये कूह-कूह सब के मन को भा रही।
शीतल मन्द पवन मेरा गीत मधुर ही गा रही।
जपत रही सौ बार नमस्कार नमस्कार।।

एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूल ही सींचिये, फुलहि फलहिं अघाय।।

मेरे प्रभु जी

तर्ज : मुझे तेरी मोहब्बत का सहारा.....

मेरे प्रभु जी मुझे तो बस तुम्हारा ही सहारा है।
मेरे जीवन की कश्ती को प्रभु तुमने उबारा है।।

खुशी से झूमता हूँ मैं,
मगन होकर के भक्ति में।
मैं खुद को भूल जाता हूँ,
भजन गाता हूँ मस्ती में।
जिधर देखूँ नजारों में तुम्हारा ही नजारा है।।

मुझे अपनी ही छाया से,
कभी तुम दूर न करना।
ये विनती है मेरे भगवन,
मुझे अपनी नजर रखना।
मैं क्या अर्पण करूँ तुमको मेरा सब कुछ तुम्हारा है।।

ये धरती आसमां बादल,
सितारे, चाँद, सूरज, धुप।
तुम्हारे ही बनाए हैं,
तुम्हारा ही सभी में रूप।
तुम्ही कण-कण में बसते हो ये जग सारा तुम्हारा है।।

रचना : 'भानु सिंह बादल'

हर पल में हो

तर्ज : झिलमिल सितारों का

हर पल में हो प्रभु सुमिरन तेरा,
ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा।
तेरी सेवा करते करते,
बीते हर क्षण मेरा।।

याद तेरी को सदा दिल में बसाऊं।
आठों पहर बस तेरे गीत गाऊं।
तेरे चरणों में, रहे मन मेरा।।

ख्वाहिशें जग की न, मुझको सताएं।
चिन्ता हरगिज न नज़दीक आएं।
करता रहूं प्रभु चिन्तन तेरा।

ऐसा तेरी भक्ति में दास खो जाए।
मैं न रहूं बस, तू ही तू हो जाए।
सफल हो जाए नर तन मेरा।।

कट जाने पर भी चन्दन का वृक्ष सुगन्ध नहीं छोड़ता। बूढ़ा हो जाने पर भी हाथी अपनी लीलाओं को नहीं त्याग देता। कोल्हू में पेरी जाने पर भी ईख मिठास को नहीं छोड़ देती। इसी प्रकार गरीब हो जाने पर भी कुलीन अपने शील गुणों को नहीं छोड़ता।

ज़िन्दगी में भूलकर (ग़ज़ल)

जिन्दगी में भूल कर न पाप कर।
हर घड़ी परमात्मा का जाप कर।।

भक्ति शक्ति मुक्ति मिलती मोल न।
जितना भी करना है अपने आप कर।।

भूल से हो जाये कोई पाप तो।
बैठ कर कुछ काल पश्चाताप कर।।

आयेगा परमात्मा तुझको नजर।
आईनां दिल का तू पहले साफ कर।।

राह में कांटे बहुत मंजिल कठिन।
हर कदम चलना सम्भल कर नाप कर।।

न करने योग्य काम नहीं करना चाहिये।
करने योग्य काम में आलस्य नहीं करना चाहिये।
जिससे नशा चढ़े वो पदार्थ नहीं पीना चाहिये।
काम सिद्ध होने से पहले मन्त्र नहीं प्रकट करना चाहिये।

जीवन में गुण अवगुण दो रास्ते हैं
अन्तर केवल ग्रहण करने का है। कर्म किसी के सगे नहीं होते। जैसे अग्नि किसी की सगी नहीं होती। कर्म ही मनुष्य को संसार चक्र में भ्रमण कराते हैं।

कोई कछु कहे मन लागा

कोई कछु कहे मन लागा।
मन लागा रे लागा।। कछु कहे

ऐसी प्रीत लगा मन मोहना।
ज्यों सोने में सुहागा।। मन

जनम जनम का सोया मनवा।
गुरू के शबद सुन जागा।। मन

मात पिता सुत कुटुम्ब कबीला।
टूट गया जो धागा।। मन

मीरा रे प्रभु गिरधर नागर।
भाग हमारा जागा।। मन

तुलसी अपने राम को रीझ भजो या खीज।
भूमि पड़े सब उपजे हैं उल्टे सीधे बीज।

सुन नाथ अरज

सुन नाथ अरज अब मेरी।
मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी।।

तुम मानुष तन मोहे दिन्हा।
भजन प्रभु तुम्हारा नहीं किन्हा।
विषयों ने मेरी मति फेरी।।

सुत दारादिक ये परिवारा।
सब स्वार्थ का है संसारा।
जिन हेतु पाप किये ढेरी।।

माया में ये जीव लुभाया।
रूप नहीं पर तुम्हारा जाना।
पड़ा जन्म मरण की फेरी।।

भवसागर में नीर अपारा।
मोहे कृपालु प्रभु करो पारा।
ब्रह्मानन्द करो नहीं देरी।।

प्रार्थना का उद्देश्य मनुष्य को पूर्ण बनाना है।
मैले हृदय से प्रार्थना करना व्यर्थ है।
–महात्मा गांधी

हे जगपिता हे जग प्रभु

हे जगपिता हे जग प्रभु, मुझे अपने नाम का दान दो।
तुझे अपने मन में मैं देख लूं, वह दृष्टि दो वह ज्ञान दो।।

मेरे मन में तेरा ही रंग हो, मेरी प्रार्थना में उमंग हो।
मेरा काम क्रोध से जंग हो, मुझे लोभ मोह से त्राण दो।।

मुझे मेरी भक्ति का फल मिले, मुझे धैर्य शक्ति प्रबल मिले।
मिले जो विचार अटल मिले, मुझे ऐसी ऊंची उड़ान दो।।

तेरी वेदवाणी सुना करूँ, तेरा ओ३म नाम जपा करूँ।
तेरा सामगान सुना करूँ, यही सोच दो यही ध्यान दो।।

मेरा श्रेष्ठतम व्यवहार हो, मेरा उच्चतम आचार हो।
मेरा प्राणियों से प्यार हो, मुझे ऐसा प्यार महान दो।।

ईश्वर नाम अमोल है, दामन बिना बिकाय।
तुलसी अचरज देखिए, कोई ग्राहक न आए।।

वन में सुन्दर खिले हुए फूलों वाला एक ही वृक्ष अपनी सुगन्ध से सारे वन को सुगन्धित कर देता है इसी प्रकार एक ही सुपुत्र सारे कुल का नाम ऊंचा कर देता है।

नदी किनारे

नदी किनारे खड़ा है पगले फिर भी मन है प्यासा।
प्रभु का नाम तो पास है बन्दे फिर क्यों छोड़े आशा।।

इस जग की नदियां में देखो प्रभु का जल है प्यारा।
छल छल कल कल निर्मल है जल प्रभु सुमिरन की धारा।।
जीवन की गति ऐसो है जस जल में पड़े बतासा।
प्रभु का नाम तो पास है बन्दे फिर क्यों छोड़े आशा।।

जल दर्पण तू देख ले मुख को, प्रभु जल ही तन धोता।
निर्मल तन मन हो जावे रे, रोज़ लगा ले गोता।।
श्याम दास हरि जल का प्यासा, जीवन तोला मासा।
प्रभु का नाम तो पास है बन्दे, फिर क्यों छोड़े आशा।।

एक ही सूखे वृक्ष में आग लगने पर
सारा वन जल जाता है।
इसी प्रकार एक ही कुपुत्र सारे
कुल को बदनाम कर देता है।।

सेवक हैं हम तुम्हारे

तर्ज : गुज़रा हुआ जमाना

सेवक है हम तुम्हारे स्वामी है तू हमारा।
मेरे प्रभु तेरा सहारा।।

तेरे सिवा जगत में गमख़ार कोई नहीं है।
जन्मों से भटकी रूह का आधार कोई नहीं है।
मानुष जनम सा अवसर, फिर न मिले दोबारा।।

तू ही है मित्र बन्धु, बान्धव सखा है प्यारा।
माता पिता भी तू है, आराध्य इष्ट हमारा।
कहने को जग है अपना, पर झूठ का पसारा।।

तूने मुझे सुधारा देकर विवेक शक्ति।
ऐ दीन बन्धु दी है अपनी पवित्र भक्ति।
तोड़े जगत के बन्धन माया से करके न्यारा।।

देकर के नाम दासा किरपा अपार की है।
मन की सकल मलिनता पल भर में दूर की है।
उज्जवल किया सुनिर्मल मन को मेरे संवारा।।

फलों से लदा हुआ वृक्ष सदैव झुक जाता है। इस प्रकार यदि आप महान बनना चाहते हैं तो आप नम्र और विनयी बनें।

-राम कृष्ण परम हंस

डूबतों को बचा लेने वाले

डूबतों को बचा लेने वाले।
मेरी नैया है तेरे हवाले

लाख अपनों को मैंने पुकारा,
सब के सब कर गए हैं किनारा।
और कोई न देता दिखाई,
सिर्फ तेरा ही अब तो सहारा।
कौन तुझ बिना भंवर से निकाले।। मेरी

जिस समय तू बचाने पे आवे,
आग में भी बचा कर दिखावे।
जिस पे तेरी दया दृष्टि होवे,
कैसे उस पे कहीं आंच आवे।
आंधियों में भी तू ही सम्भाले।। मेरी

पृथ्वी सागर व पर्वत बनाए,
तू ने धरती पे दरिया बहाए।
चांद सूरज करोड़ों सितारे,
फूल आकाश में भी खिलाए।
तेरे सब काम जग से निराले।। मेरी

बिन तेरे चैन मिलता नहीं है,
फूल आशा का खिलता नहीं है।
तेरी मरज़ी बिना तो जहां में,
एक पत्ता भी हिलता नहीं है।
तेरे बस में अन्धेरे उजाले।। मेरी

रचना : सत्यपाल "पथिक"

तुम बिन हमारा कौन है

ईश्वर तुम्ही दया करो तुम बिना हमारा कौन है।
दुर्बलता दीनता हरो तुम बिन हमारा कौन है।।

माता तू ही तू ही पिता, बन्धु तू ही तू ही सखा।
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है।।

जग को रचाने वाला तू दुखड़े मिटाने वाला तू।
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है।।

तेरी दया को छोड़कर, कुछ भी नहीं हमें खबर।
जायें तो जायें हम किधर, तुम बिन हमारा कौन है।।

तेरी लगन तेरा मनन, भक्ति तेरी तेरा भजन।
तेरी ही आते हम शरण, तुम बिन हमारा कौन है।।

पुत्र हैं हम सभी तेरे तू है पिता परमात्मा।
श्रेष्ठ मार्ग पर चला तुम बिन हमारा कौन है।।

जो सबसे प्रेम करता है वही सबसे उत्तम भक्ति करता है।

प्रार्थना वो पंख है जिससे आत्मा स्वर्ग की ओर उड़ती है।
ध्यान वो आंख है जिसमें प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं।

भोर भई उठ जाग मन

तर्ज : दर्शन दो घनश्याम मोरी

भोर भई उठ जाग जाग मन,
कब से सोया रे।
प्रभु भजन में लाग सवेरा,
कब से होया रे।।

निसि बासर तोहे सन्त जगावें,
तोहे तेरा कारज समझावें।
सुनता न उनकी आवाज़,
नींद में उन्मत सोया रे।।

मोह ममता का देख अन्धेरा,
चित में किया पांचो ने डेरा।
लूटे तुझे दिन रात, माल,
सब तेरा ही खोया रे।।

दास जाग जागन की बेला,
कर साँचे साहिब से मेला।
जन्म लगे न फिर हाथ हाथ,
इस बार भी खोया रे।।

प्रभात में प्रभु की प्रार्थना प्रभु की कृपा खज़ानों को खोलने की कुंजी है। सायं काल में प्रभु की प्रार्थना प्रभु की सुरक्षा में बन्द होने की कुंजी है।

प्रभु हर दिल में

तर्ज : यूं ही तुम मुझसे बात करती हो

प्रभु हर दिल में वास करता है, जर्रे-जर्रे में वो समाया है।
उसकी महिमा को जानते ही नहीं, जिसने संसार ये रचाया है।।

नीले नभ में ये सितारे देखो, बड़े रंगीन नजारे देखो।
बहती वायु के फब्बारे देखो, चाँद सूरज के इशारे देखो।
फूल पत्ती व लता दे रही है तेरा पता
सबके आंचल में तू समाया है।।..प्रभु....

ऊंचे शैलों की निराली सी छटा, जिसपे छाई है सुनहरी सी घटा।
कहीं ऊंचे हैं बर्फ के टीले, सुर्ख अग्नि की कहीं जलती लटा।
कहीं नदियों का मिलन, कहीं सागर को नमन
तुम्हें करने को सर झुकाया है।।..प्रभु....

सारी सृष्टि को रचाने वाला, नित नये नाच नचाने वाला।
पापी दुष्टों को रूलाने वाला, सबको कष्टों से बचाने वाला।
कोई क्या जान सके नहीं पहचान सके
बड़ी बेमोल उसकी माया है। *"बेमोल"*

आदमी जो कमाता है वह नहीं, जो बचाता है वह उसे धनी बनाता है। पढ़ी हुई नहीं याद रक्खी बातें आदमी को महत्व प्रदान करती हैं। इसी तरह खाया हुआ नहीं, जितना भोजन पचता रहे वही मनुष्य को सशक्त बनाता है।

–महाभारत

जीवन तुम्हारा तुम्हारे ही अर्पण

तर्ज : आवाज देकर हमें तुम

यह जीवन तुम्हारा तुम्हारे ही अर्पण।
इसे अपने चरणों के काबिल बना दो।।

हो करूणा के सागर दया के हो दाता।
तुम्हीं जग के पालक तुम्ही हो विधाता।
यह सोया है मनवा इसे तुम जगा दो।।

मैं पथ से गिरूं तो मुझे थाम लेना।
दया करके सद्बुद्धि देते ही रहना।
जो सच्चा हो मार्ग वही तुम दिखा दो।।

तुम्हारे हवाले है जीवन की नैया।
इसे पार कर दो ऐ मेरे खिवैया।
कहीं डूब जाये ना इसको बचा लो।।

दरश को मैं आया हूँ जन्मों का मारा।
भटकता है मनवा यह अब भी हमारा।
इसे वश में करने की युक्ति बता दो।।

प्रभु तेरा ओ३म् नाम

प्रभु तेरा ओ३म् नाम सब का सहारा है।
सारे ब्रह्माण्ड का जीवन आधारा है।।

तू है सुखों का दाता, तू ही भवसागर त्राता।
भक्तों को पार लगाता, मन का उजियारा है।।

जग को रचाने वाला, बिगड़ी बनाने वाला।
दुखड़े मिटाने वाला, सखा तू हमारा है।

कण कण में तू है समाया, तेरी है सब में छाया।
किसी ने न भेद पाया, कैसा ये नजारा है।।

सुखमय संसार बनाया वेदों का ज्ञान कराया।
तेरे ही द्वार मैं आया प्रीतम प्रभु प्यारा है।

तलाशे यार में जो ठोकरें खाया नहीं करते।
कभी वो मंज़िलें मक़सूद को पाया नहीं करते।।

कबीर काजर रेखहू, अब तो डारी न जाई।
नैन में प्रीतम रम रहा, उसमें दूजो कहां समाई।।

करते हैं तेरा गुणगान

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत

कैसा सुन्दर जगत रचाया है तूने भगवान।
करते हैं तेरा गुणगान। करते हैं तेरा गुणगान।।
पृथ्वी सूरज चांद सितारे पर्वत और आसमान।
करते है तेरा गुणगान, करते हैं तेरा गुणगान।।

सेब अंगूर अनार बनाए, रंग बिरंगे फूल खिलाए।
छम-छम, छम-छम वर्षा आए, कोयल मीठे राग सुनाए।
ऋषि मुनि और योगी सारे, धरते तेरा ध्यान।। करते

मानव चोला अजब बनाया, सुई न धागा हाथ लगाया।
नस नाड़ी का जाल बिछाया, आत्मा को इसमें बिठलाया।
द्वार बनाए तूने इसके आंख नाक और कान।। करते हैं

द्वार तेरे पे जो भी आए, जीवन अपना सफल बनाए।
पर उपकार वो करता जाए, नन्दलाल वो न घबराए।
तन मन धन वह धर्म देश पर कर देते कुर्बान।। करते

प्रसन्नता उस तितली के समान है, जिसका यदि पीछा किया जाय तो कभी पकड़ में नहीं आती, लेकिन शान्तिपूर्वक बैठ जाने पर अपने आप पास आ जाती है।

-हैथर्नि

उठ नाम सिमर

उठ नाम सिमर मत सोय रहो।
मन अन्त समय पछतायेगा।।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया।
फिर हाथ कछु न आयेगा।।

हस विलास में बीती उमरिया।
बहुत गयी रही थोड़ी उमरिया।।
बुझ गया दीपक जल गई बाती।
कोई राह तुझको दिखायेगा।।

पाप बोझ से भर ली गगरिया।
जाना रे तुझ को दूर नगरिया।
जैसा करेगा वैसा भरेगा।
कोई साथ न तेरा निभाएगा।।

ओ३म् नाम धन भर लो ख़जाना।
रहना नहीं ये देश वीराना।।
प्रभु के चाकर होकर रहियो।
भव सागर से तर जायेगा।।

मन को हमेशा शान्त रखो,
पवित्र विचारों को हृदय में स्थान दो,
फिर संसार में तुम्हारा कोई विरोध नहीं कर सकता।
–स्वामी रामतीर्थ

सारे जहां के वाली

ओ सारे जहां के वाली, तेरी महिमा अजब निराली।
किसी ने तेरा भेद न पाया है, अजब ईश्वर तेरी माया है।।

जड़े नभ में सितारे, बड़े लगते है प्यारे,
घड़े वेद कैसे सारे, खड़े किसके सहारे। तू बता
दिया रवि में उजाला, रूप चन्द्रमा का आला,
लिया कौन सा मसाला, सारा जग रच डाला। तू बता
कहीं कड़ीला कड़क, कहीं नभ में भड़क,
अद्भुद रंग रूप दिखाए, यही नहीं समझ में आए।।

कहीं नीला ये गगन कहीं शीतल पवन,
कहीं वन उपवन, कहीं उजड़ा चमन। हे पिता
कहीं डालियो में फूल, कहीं फूल काले शूल,
कहीं कन्द कहीं मूल, कहीं कोई नहीं भूल। हे पिता
कहीं झाड़ बे पहाड़ कहीं बीहड़ उजाड़।
ये सब कुछ कौन रचाए, यही नहीं समझ में आए।।

कहीं नदियों की धार, कहीं सागर अपार,
कहीं रेत के अम्बार, कहीं माया के भण्डार हैं यहां।
कहीं पक्षियों की डार, कहीं पेड़ो की कतार,
कहीं भंवरों की गुन्जार, कहीं स्वरों की झंकार है यहां।
कहीं बैर और प्रीत, कहीं प्यार भरे गीत,
ये सब कुछ कौन सुनाए, यही नही समझ में आए।।

कोई करोड़ों का वाली, कोई जेब से है खाली,
कोई मनाता दीवाली, कैसी बात ये निराली। हे पिता
कोई प्रीतम के संग, करे रास और रंग,
कोई भोजन से भी तंग, कोई अंग से भी भंग। हे पिता
कोई सुन्दर सुडौल, कोई कुरूप बेमोल,
हम देख देख चकराये, यही नहीं समझ में आए।।

'बेमोल'

स्वर्ग नरक है इस धरती पर

स्वर्ग नरक है इस धरती पर नहीं गगन के देखो पार।
अच्छा कर्म तो सुख देवे है बुरा कर्म है दुख का सार।।

जो दुख पाता प्रभु से कहता क्यों प्रभु दुख तुम देते हो।
हमने किया नहीं कुछ ऐसा फिर क्यों नहीं सुख देते हो।
याद नहीं है उस प्राणी को, जन्म जन्म के पाप का भार।।

एक फकीर जो नंगा सोवे तन ढकने को नहीं बसन।
दुख सह कर मन निर्मल होगा करले करले पीर सहन।
दंड भोग के पाप कटेगा, कारागार बना संसार।।

सुख दुख दोनों एक समाना, दोनों प्रभु के हैं वरदान।
अंधकार तो दिन भी संग में यही प्रभु का परिचय ज्ञान।
प्रभु का सुमिरन नारायण कर दुख का जो करता संहार।।

पहले काटों को भी सीने से लगाया करते थे।
आज कोई फूल भी देता है तो डर लगता है।।

जिस घर में एक दूजे

तर्ज : मुझे इश्क है तुम्ही से

जिस घर में एक दूजे की बात जाये मानी
उस घर कभी न आए कोई भी परेशानी।।

आकाश में नहीं है स्वर्गो की कोई दुनिया।
बेकार के भरम में भटकी हुई है दुनिया।
वो ही घर है स्वर्ग होता जिसमें हो मधुर वाणी।।

माता पिता की सेवा भी फर्ज है हमारा।
माता पिता से ही है नामों निशां हमारा।
माता पिता की आज्ञा जाती है जहाँ मानी।।

सन्तान पैदा करके जो आजाद छोड़ देते।
माता पिता वो एक दिन सिर को पकड़ के रोते।
बच्चों पे शुरू से ही रखते जो है निगरानी।।

सन्तान जब बड़ी हो डण्डे से न मनाओ।
गर्मी को छोड़ करके फिर प्यार को अपनाओ।
जहाँ प्यार है वहीं है सुख चैन की निशानी।।

**जैसे कुम्हार ऊपर से बर्तन को चोट मारता है
लेकिन अन्दर से बर्तन को सहारा देता है
वैसे ही ऊपरी ताड़न से बच्चे दोषमुक्त होते हैं।**

आनन्द स्त्रोत

तर्ज : वो दिल कहां से लाऊँ।

आनन्द स्त्रोत बह रहा, पर तू उदास है।
अचरज है जल में रहकर मछली को प्यास है।।

फूलों में ज्यों सुवास, ईख में मिठास है।
भगवान का त्यों विश्व के कण कण में वास है।।

टुक ज्ञान चक्षु खोल के देख तो सही।
जिसको तू ढूंढता है वो तेरे पास है।।

कुछ तो समय निकाल आत्म शुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है।।

आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक।
कि जब तलक 'प्रकाश' तू इन्द्रियों का दास है।।

सज्जनों का साधारण बात में कहा हुआ वचन पत्थर पर लिखे अक्षर सरीखा होता है, और तुच्छ आदमी की कसम खाकर दिया हुआ वचन भी पानी पर खिंची लकीर सा होता है।

-शेक्सपियर

तेरा रब नहीं वसदा दूर

तेरा रब नहीं वसदा दूर, वे अंखिया खोल ज़रा।
वे अंखिया खोल ज़रा, वे अंखिया खोल ज़रा।।

फूल बास मुख दर्पण न्याई, व्याप रहा घट घट के माही।
मैं मेरी कर दूर, वे अंखिया खेल ज़रा।

बिन सत्संग मिले नहीं मारग, आरफ कहंदे कोल है शाह रब
हर वेले भरपूर, वे अंखिया खोल ज़रा।।

ज्यों पत्थर विच आग समावे, बिन पुरूषार्थ नज़र न आवे।
सत्संग करो ज़रूर, वे अंखिया खोल ज़रा।।

बिन सत्संग न सोझी पावे, मुरशद बिन राह हथ न आवे।
खास ए गल मशहूर, वे अंखियां खोल ज़रा।।

"मैं" नू मार मुकावे जेड़ा, साफ करे हर दिल दा वेड़ा।
कड दे दिलो ग़रूर, वे अंखिया खोल ज़रा।।

पूरा सतगुरू जे मिल जावे, निज घट दे विच घर दिखलावे।
परगट होवे नूर, वे अंखिया खोल ज़रा।।

जिस तरह आग के साथ धुंआ रहता है
उसी तरह हर अच्छे काम के साथ उसका
एक बुरा पहलु भी होता है। हमें उन कामों में
लगना चाहिए, जिनका बुरा पहलू छोटे से छोटा हो
और जिनकी अच्छाई की कोई सीमा न हो।

–स्वामी विवेकानन्द

कुछ न बिगड़ेगा तेरा

कुछ न बिगड़ेगा तेरा, प्रभु की शरण आने के बाद।
हर खुशी मिल जाएगी, चरणों में झुक जाने के बाद।

जब तलक है भेद मन में, कुछ नहीं बन पाएगा।
रंग लाएगी ये भक्ति, भेद मिट जाने के बाद।।

फूलों से पूछो के उन पर, कैसे छाई है बहार।
कब तलक काँटों पे सोया, डाल कर आने के बाद।।

प्रेम की मंजिल में राही, कष्ट आते हैं जरूर।
बीज फलता है सदा, मिट्टी में मिल जाने के बाद।।

कौन करता है किसी को, याद मर जाने के बाद।
सूंघता कोई नहीं है फूल मुरझाने के बाद।।

देख कर काली घटा को, ए भौंरे मत हो उदास।
बंद कलियाँ भी खिलेगी, रात ढल जाने के बाद।।

ज़िन्दगी विषयों में खोई, हरि भजन भी न किया।
होश में आया है इंसा, ठोकरे खाने के बाद।।

जिस खुशी को ढुंढता फिरता है दुनिया में सदा।
वो खुशी मिल जाएगी, चरणों में झुक जाने के बाद।।

जागो रे

जागो रे, ऐ दौलत के दीवानों।
जागो रे ऐ दौलत के दीवानों।।

दौलत लड़का दे सकती पर, पुत्र दिलाना मुश्किल है।
दौलत नौकर दे सकती पर, सेवक पाना मुश्किल है।।
दौलत औरत दे सकती पर, पत्नी नहीं दिला सकती।
दौलत बिस्तर दे सकती, पर नींद कभी न ला सकती।।

ऐनक मिलती दौलत से, पर नैन कहां से लाओगे।
रोटी मिलती दौलत से, पर भूख कहां से लाओगे।।
दौलत से बादाम मिलेंगे, पर ताकत न आएगी।
सुख दिलाएगी ये दौलत, शांति नहीं दिलाएगी।।

कुछ पैसे में जाकर सज्जनों, ज़हर अभी ले आओगे।
बीस करोड़ में भी अमृत की, बूंद एक न पाओगे।।
दौलत गीता दे सकती है, पर ज्ञान नहीं दे सकती है।
दौलत मंदिर दे सकती, भगवान नहीं दे सकती है।।

धन से सुर्खी पाउडर ले लो, सुन्दरता न पाओगे।
बाजा ले लो दौलत से पर, कंठ कहां से लाओगे।।
लाख सितारे चमके रवि बिन दूर अंधेरा न होगा।
आत्म ज्ञान के बिना सुखों का कभी सवेरा न होगा।।

रहमता करदा ए

रहमता करदा ए जी, झोलियाँ भरदा ए जी ।
सबको बनाने वाला, सबको चलाने वाला,
एक ओ३म् ही प्यारा है ।।

कोई आन पड़े जे शरणी, कर देन्दा मालो माल ।
तुसी लुटलो संगताँ लुटलो मेरा दाता दीन दयाल ।
भरे भण्डारे नी... आख दे सारे नी...
सबको बनाने वाला, सबको चलाने वाला,
एक ओ३म् ही प्यारा है ।।

मेरा रब है सबतों प्यारा, एनु समझे न कोई बन्दा ।
ओ मिन्टा चे विच कटदा, चौरासी वाला फेरा ।
देर वही लाँदा है जी, बिगड़ी बनान्दा ए जी,
सबको बनाने वाला, सबको चलाने वाला,
एक ओ३म् ही प्यारा है ।।

मेरे दाता जी दा द्वारा, सारी दुनिया कोलों न्यारा ।
सारे दुःखों दी एको दवाई, जेड़ा जपदाँ जान्दा प्यारा ।
ये मस्त बनाँदा ए जी, पार लगाँदा ए जी,
सबको बनाने वाला, सबको चलाने वाला,
एक ओ३म् ही प्यारा है ।।

उस प्रभु की शरण आओ रे

तर्ज : मैं ससुराल नहीं जाऊंगी

उस प्रभु की शरण आओ रे,
बेड़ा पार तेरा होगा।।

दुनिया में जो तू पाता है,
देने वाला वो दाता है।
उसका ध्यान लगाओ रे,
बेड़ा पार तेरा होगा।।

मोह माया और कपट को त्यागो,
आलस छोड़ो नींद से जागो।
भक्ति में मन को लगाओ रे,
बेड़ा पार तेरा होगा।।

समय अमोलक तुम नहीं खोना,
वर्ना पड़ेगा बाद में रोना।
नेकी कर्म कमाओ रे,
बेड़ा पार तेरा होगा।।

प्रेम का प्याला पीओ मस्ती से,
हरि गुण गाओ सब भक्ति से।
जीवन सफल बनाओ रे,
बेड़ा पार तेरा होगा।।

रचना : कंचन कुमार

मैं हूँ शरण तुम्हारी

तर्ज : वो दिल कहाँ से लाऊं

मैं हूँ शरण तुम्हारी प्रभु मुझको आसरा दो।
भटके न व्यर्थ जीवन-भक्ति में मन लगा दो।।

सुमिरन करूं मैं हरदम, सारे जगत के दाता।
गाऊँ मैं महिमा तेरी, हे जगतपिता विधाता।
खाली है मेरी झोली, अपनी दया से भर दो।।
मैं हूँ शरण तुम्हारी...............

मेरे सर पे हाथ रखना, मुझे पाक साफ रखना।
मेरी सब खता भुलाना, नादान हूँ माफ करना।
जगे जोत मेरे मन में-ऐसी लगन जगा दो।।
मैं हूँ शरण तुम्हारी...............

मैं तुमसे फिर गया हूँ, पापों से घिर गया हूँ।
माया में फंस के अपनी, नजरों से गिर गया हूँ।
कंचन हो मेरी काया, सत की डगर लगा दो।।

रचना : कंचन कुमार

मौन के वृक्ष पर शांति के फल लगते हैं।
अभाव के वृक्ष पर क्रांति के फल लगते हैं ।।

मंदिर है भगवान का

न यह तेरा न यह मेरा, मंदिर है भगवान का।
पानी उसका भूमि उसकी, सब कुछ उसी महान का।।

हम सब खेल खिलौने उसके, खेल रहा है करतार रे।
उसकी ज्योति सबमें चमके, सब में उसी का प्यार रे।
मन मंदिर में दर्शन कर ले, उस प्राणों के प्राण का।।

तीर्थ जाये मंदिर जाये, अनगिन देव मनाए रे।
दीन रूप में प्रभु खड़े हैं, देख के नैन चुराए रे।
मन की आंखे खुल जाये तो, क्या करना और ज्ञान का।।

कौन है ऊँचा कौन है नीचा, सब है एक समान रे।
प्रेम की ज्योति जगा हृदय में सब में प्रभु पहचान रे।
सरल हृदय को शरण में राखे, प्रभु भोले नादान रे।।

सुसंग और कुसंग दो ऐसी बातें है जो हमारे जीवन को बना सकती है और बिगाड़ सकती है। कुसंग में चाहे तुम कुछ भी गलत बात न सीखों पर दुनिया में बदनाम अवश्य ही हो जाओगे। मदिरा के पात्र में चाहे दूध ही हो पर संसार उसे मदिरा ही समझेगा। इसीलिए कभी कुसंग में न जाएं।

–सन्त ज्ञानेश्वर

ओ३म् नाम बोल

ओ३म् नाम ओ३म् नाम ओ३म् नाम बोल।
सुबह शाम आठोयाम, ओ३म् नाम बोल।
काहे प्राणी भटक रहा है, जीवन है अनमोल रे।।

न कर बन्दे मेरी मेरी, जीवन खाक की ढेरी।
चार दिनों की चाँदनी है, और फिर रात अन्धेरी।
धर्मराज के आगे तेरे, खुल जायेंगे पोल रे।।

माटी के रंगीन खिलोने, माटी में मिल जायेगा।
आज नही तो कल यहाँ पर, कर्मों का फल पायेगा।
हीरा जन्म न फेर मिलेगा कूड़े में न रोल रे।।

साथी खाली हाथ गये है, होश तुझे क्यों आए न।
जोड़-जोड भर लिए खज़ाने, साथ गई एक पाई न।
भवसागर के अन्दर तेरी, नैया रही है डोल रे।।

जिसको समझे साथी अपना, वो एक दर्शन मेला।
अन्तकाल पछताएगा, जायेगा जब तू अकेला।
सुन्दर तन पे दाग लगाया, मैली चादर ओढ़ रे।।

लाख चौरासी के चक्कर में, काहे भटक रहा है।
भले बुरे कर्मों की फांसी, जिसपे लटक रहा है।
सांस-सांस में ओ३म् सिमर ले, लागे कोई ना मोल रे।।

ओ३म् नाम......

सदियों से जीव भटकता

सदियों से जीव भटकता पर चैन कभी न पाया।
सौ बार मरा जी जीकर फिर भी जीना न आया।।

पशुओं वृक्षों में घूमा, पर पर उपकार न सीखा।
नया पाप करने की खातिर सीखा नित नया तरीका।
पशु पुरूष में क्या अंतर यह ज्ञान अभी न आया।।

तह करके ताक पे रख दी, जीवन की सभी किताबें।
या खून पिया निर्धन का या विषयों की जहर शराबें।
प्रभु नाम के अमृत रस का इक जाम न पीना आया।।

निर्धन गरीब तड़पा भी, पर तेरी दया पिघली ना।
पत्थर बन गया कलेजा, सीमेंट बन गया सीना।
सीने से सी ना निकली, एक ज़ख्म न सीना आया।।

कभी मोर पपीहा बनकर, पीपी ना कभी पुकारा।
सत्संग की वर्षा ऋतु में, मन धोकर नहीं निखारा।
कई बार तेरे जीवन में, सावन का महीना आया।।

इस चौरासी के चक्कर ने, तुझे यूं चक्कर में डाला।
इस जीवन तख्ती पर, कई बार सवाल निकाला।
हर बार गलत ही निकला, इक बार सही न आया।।

तेरे कर्मों का लेखा जोखा, जब प्रभु ने देखा भाला।
नत्थासिंह सर से पैरों तक, तेरा जीवन निकला काला।
सब पुण्य पड़ गये फीके, पापों का पसीना आया।।

जिस आदमी का

तर्ज : इस रेशमी पाज़ेब की

जिस आदमी का सर झुके भगवान के आगे।
सारी दुनिया झुकती है उस इन्सान के आगे।।

खुले आकाश में उड़ती पतंगे, साथ में डोरी।
उसे क्या डर भला जिसकी प्रभु के हाथ में डोरी।
ताकत फीकी पड़ती है उस बलवान के आगे।।

बसे वह देवता बन कर ज़माने के ख्यालों में।
उसी के नाम के चर्चे अंधेरों में उजालों मे।
सूरज भी क्या चमके उसकी शान के आगे।

बड़े से भी बड़ा लालच उसे फिसला नहीं सकता।
मुसिबत के दिनों में, वह कभी घबरा नहीं सकता।
उसको ठहरा पाओगे हर तूफान के आगे।

वह सारे इम्तहानों में हमेशा पास होता है।
पथिक जीवन की राहों में न कभी उदास होता है।
मंज़िल खुद आ जाती है उस मेहमान के आगे।।

**प्रभु की कृपा को पाना हो तो।
सदा प्रसन्न रहना सीखों।।**

मन का दीया तो जला ले

ज़िन्दगी का सफर करने वाले।
अपने मन का दीया तो जला ले।।

वक्त की धार यह कह रही है।
कष्ट क्यों आत्मा सह रही है।।
देख ऐसी जगह तू खड़ा है।
ज्ञान गंगा जहां बह रही है।।
बढ़ के गंगा में डुबकी लगा ले।

रात लम्बी है गहरा अंधेरा।
कौन जाने कहां हो बसेरा।।
तू है अनजान मंजिल का राही।
चलते रहना ही है काम तेरा।।
रोशनी से डगर जगमगा ले।

सूनी सूनी ये मंजिल की राहें।
चूमना तेरे कदमों को चाहें।।
गहन वन में कहीं खो न जाना।
भटक जाएं न तेरी निगाहें।।
हर कदम सोच कर तू उठा ले।

बस तुझे है अकेले ही चलना।
बहुत मुमकिन है गिरना फिसलना।।
गिर के गिरना नहीं बात कुछ भी।
है बड़ी बात गिर के सम्भलना।।
यह "पथिक" बात दिल में बसा ले।

मानव तू अगर चाहे

तर्ज : ए मेरे दिले नादाँ

मानव तू अगर चाहे दुनिया को झुका देना।
बस ईश्वर के आगे सर अपना झुका देना।।

राजी हो प्रभु जिसमें वह काम सही होगा।
भगवान जो चाहेगा दुनिया में वही होगा।
उसे अपना बना करके उलझन को मिटा देना।।

रक्षक है अनाथों का दुखियों का सहारा है।
भव पार किया उसने जिसने ही पुकारा है।
उसे अपना बना करके उलझन सुलझा लेना।।

धरती और सागर के रत्नों को जो पाना हो।
आकाश में उड़ना हो, पाताल में जाना हो।
डोरी परमेश्वर को, पहले पकड़ा देना।।

चाहेंगी सदा तुझको खुशियां और आशाएं।
चूमेंगी चरण मेरे सब और सफलताएं।
जीवन को पथिक उसकी राहों पे लगा देना।।

भार झोंक कर 'भार' में, रहिमन उतरे पार।
वे डूबे मंझधार में, जिनके सिर पर भार।।

हे नाथ दयालु हो

हे नाथ दयालु हो, बस इतनी दया कर दो।
आया मैं शरण तेरी, भक्ति के भाव कर दो।।

तेरे रंग में रंग जाये, ये चंचल मन मेरा।
रहे साफ न हो धुंधला, मन का दर्पण मेरा।
हर शय से तुझे देखुं मेरे देव यही वर दो।।

मरता हूँ जीता हूं जी कर फिर मरता हूँ।
नौ मास गर्भ की जेल जाने से मैं डरता हूं।
बन्धन से छूट जाऊँ कुछ और नजर कर दो।।

हो जाऊँ अलग जग के दुख और संतापो से।
भगवन ले बचा मुझको दुर्गण और पापों से।
गाऊँ मैं गीत हरदम तेरे ही मधुर स्वर दो।।

जिस दर पे सर न झुके उसे दर नहीं कहते।
दर दर पे जो सर झुके उसे सर नहीं कहते।।

जिसको हर चीज में भगवान नजर आता है।
मुझे वो आदमी इंसान नजर आता है।।

जगत में चिन्ता

तर्ज : तुम्हीं हो माता पिता तुम्ही हो

जगत् में चिन्ता मिटी उन्हीं की।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।
वो ही हमेशा हरे भरे हैं।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

न पाया राजा-वजीर बनकर।
न पाया तुझ को फकीर बनकर।।
उन्हीं को दर्शन हुए हैं तेरे।
जो तेरे चरणों मं आ चुके हैं।।

न पाया तुझ को किसी ने बल से।
न पाया तुझ को किसी ने छल से।।
वहीं परमपद को पा गये हैं।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

किसी ने जग में करी भलाई।
किसी ने जग में करी बुराई।।
वही सुमार्ग पर चल पड़े हैं।
तो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

प्रभु जी विनती सुनो हमारी।
बनाओ बिगड़ी दशा हमारी।।
निराश्रितों के हो आसरा तुम।
तुम्हारे चरणों में आ चुके हैं।।

तेरी मेहरबानी

तर्ज : ये माना मेरी जॉं

तेरी मेहरबानी का बोझ इतना।
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूं।।
मैं आ तो गया हूं मगर जानता हूं।
मैं सिर को झुकाने के काबिल नहीं हूं।।

ये माना कि दाता हो तुम कुल जहां के।
मगर कैसे झोली फैलाऊं मैं आके।।
जो पहले दिया है वो कुछ कम नहीं है।
मैं ज्यादा उठाने के काबिल नहीं हूं।।

तुम्हीं ने अता की, मुझे जिन्दगानी।
तेरी महिमा फिर भी मैंने न जानी।।
कर्ज़दार तेरी दया का हूं इतना।
जिसे मैं चुकाने के काबिल नहीं हूं।।

ज़माने की चाहत में खुद को मिटाया।
तेरा नाम हरगिज जुबां पे न आया।।
गुनहगार हूं मैं, सजावार हूं मैं।
तुम्हें मुंह दिखाने के काबिल नहीं हूं।।

यही मांगता हूं सिर को झुका लूं।
तेरा दीद इक बार जी भर के पा लूं।।
सिवा दिल के टुकड़े के-ए-मेरे मालिक।
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूं।।

एक तेरी दया का दान मिले

एक तेरी दया का दान मिले, एक तेरा सहारा मिल जाये।
भवसागर में बहती मेरी, नैया को किनारा मिल जाये।।

जीवन की टेढ़ी राहों में, चलकर न तुझ को जान सका।
आशाओं की झोली भर जाये, इक तेरा द्वारा मिल जाए।।

मैं दीन हूं दीनदयाल है तू, अल्पज्ञ हूं मैं सर्वज्ञ है तू।
अज्ञान का पर्दा हट जाये, तेरा उजियारा मिल जाये।।

इस दुर्लभ अवसर को पाकर, कोई उत्तम कर्म कमा न सका।
अब दिल की तड़प ये कहती है, यही प्रीतम प्यारा मिल जाये।।

अपने मुझको अपना न सके, औरों को उलाहना क्यों कर दूं।
तू सर्वकरों का दाता है, वरदान तुम्हारा मिल जाये।।

मैं नर हूं तू, नारायण है, इतना तो भेद ज़रूरी है।
यदि शरण तेरी मैं पा न सका, नर तन तो दुबारा मिल जाये।।

इसकी परवाह मत करो चाहे ज़माना खिलाफ है।
रास्ता वही चले चलो जो सीधा और साफ़ है।

जलाएं दीप कुछ ऐसे

तर्ज : नहीं ये हो नहीं सकता–बरसात

जलाएं दीप कुछ ऐसे अंधेरा मन का मिट जाए।
सभी दिन होवे मंगलमय, उजाला फिर से छा जाए।
सुख शांति होवे घर घर, खुशियां नई आए।
सभी खुशियां नई आए, सभी खुशियां नई आए।

जियें खुद सब को जीन दे, कुछ ऐसे काम कर पाएं।
करे दुख दूर दुखियों के सेवा निष्काम कर जाएं।
हंसते हंसाते मिलकर चले, हम मिल कर चले।
सुपावन प्रेम की गंगा, लहर आनन्द की लाएं।
नया वर्ष होवे मंगलमय, उजाला फिर से छा जाए।

प्रभु से प्रेम की ज्योति, जो इस दिल में जगाएगा।
वो मोह माया अंधेरे से, कभी ठोकर न खाएगा।
प्रभु बिन कोई न सहाई तेरा न सहाई तेरा।
नई सुबह की बेला में, नया एक रंग आ जाए।
नया वर्ष होवे मंगलमय, उजाला फिर से छा जाए।

रचना–कंचन कुमार

दीवाना दीपक से इलैहदा उस दीपक की लौ समझे।
जो उस प्रभु का हो दीवाना फिर क्यों किसी को दो समझे।।

कीर्तन

नाथ तुम बड़े दयालु

नाथ तुम बड़े दयालु हो, प्रभु जी तुम बड़े दयालु हो

और न कोई हमारा है।
मुझे बस तेरा सहारा है।।
नैया डोल रही है मेरी।
प्रभु जी अब करो न तुम देरी।। नाथ.....

तेरा यश गाया वेदों ने।
पार नहीं पाया वेदों ने।।
नीति-नीति गाया वेदों ने।
नाथ तुम बड़े दयालु।। नाथ.....

भले हैं बुरे हैं तेरे हैं।
तेरी माया के घेरे हैं।।
फिर भी हम बालक तेरे हैं।
फिर भी हम बालक तेरे हैं।।

जन्म-जन्म भूला फिरा, पाया न तेरा नाम।
अबकी यदि संयोग हो सिमरूं में आठों याम।।

तुम्हारा नाम मिले भगवन।
सुबह और शाम मिले भगवन।।
भक्ति का दान मिले भगवन।
भक्ति का दान मिले भगवन।। नाथ.....

ईश्वर जो करता है

ईश्वर जो करता हे अच्छा ही करता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।

जब से दुनियां बनी है तब से रोज बदलती है।
जो शय आज यहां है कल वो आगे चलती है।
देख के अदला बदली तू आहें क्यों भरता है।।

दुख सुख आते जाते रहते सब के जीवन में।
पतझड़ और बहारें दोनों जैसे गुलशन में।
चढ़ता है तूफान कभी और कभी उतरता है।।

कितनी लम्बी रात हो फिर भी दिन तो आएगा।
जल में कमल खिलेगा फिर से वो मुस्काएगा।
देता है जो कष्ट वही कष्टों को हरता है।।

वो ही दाना फलता है जो मिट्टी में मिल जाए।
सहे "पथिक" जो कांटे वो ही मंजिल अपनी पाए।
भट्टी में पड़ कर सोने का रंग निखरता है।।

जिस तरह लड्डू या मीठा खाने के बाद सारे पकवान फीके लगते हैं उसी तरह भक्ति का रस पीने के बाद सारे रस फीके लगते हैं।

जे भवसागर तर जाणा ई

तर्ज : मेरे यार दा डोला चलया

सारे रल मिल यश गुन गाओ वे।
जे भवसागर तर जाणा ई।।
प्रभु भगती च मन नू लगाओ वे।
जे भवसागर तर जाणा ई।।

तुसी आओ इदे द्वार, ये है सच्ची सरकार
देवे कष्ट निवार।।
आज तुसी वी कर्म कमाओ वे।
जे भवसागर तर जाणा ई।।

जेड़ा श्रद्धा ले के आवे, प्रभु नू विनती सुनावे
दर तो भर भर झोली पावे।।
आज तुसी वी झोली फैलाओ वे।
जे भवसागर तर जाणा ई।।

वो है दुनिया दा वाली, करे आप रखवाली
तू वी बन जा सवाली।।
तुसी ओदा ध्यान लगाओ वे।
जे भवसागर तर जाना ई।।

–रचना कंचन कुमार

एक पल के रूकने से दूर हो गई मंजिल।
सिर्फ हम नहीं चलते रस्ते भी चलते हैं।।

कर्मों की है ये माया

तर्ज : कभी गम से दिल लगाया

कर्मों की है ये माया, कर्मों के खेल सारे।
कर्मों के इस जहाँ में क्या-क्या अजब नज़ारे।।

कर्मों से ही बने है, तकदीर आदमी की।
इंसा जहाँ में आता, कर्मों के ही सहारे।।

कोई राजा कोई भिखारी, सब कर्मों के तमाशे।
महलों में रहता कोई, कोई फिरते मारे-मारे।।

कोई संत कोई डाकू, कोई छीने कोई बांटे।
कोई जीते सारी दुनियां, और कोई सबसे हारे।।

मजबूर देख भूखा, कोई बिन करे ही खाए।
कोई रोशनी को तरसे, कोई लूटता नज़ारे।।

सब कर्मों की है माया अब तक कोई न जाना।
तुम कर्म ऐसे करना, देवे सभी दुआएँ।।

तुमने चाहा ही नही, हालात बदल सकते थे।
मेरी आँख के आँसू, तेरी आँख में ढल सकते थे।।
तुम तो ठहरे ही रहे, झील के पानी की तरह।
दरिया की तरह बहते, तो आगे भी निकल सकते थे।।

मुझे रास आ गया है

मुझे रास आ गया हे तेरें दर पे सर झुकाना।
तुम्हें मिल गया पुजारी, मुझे मिल गया ठिकाना।।

तेरी बन्दगी से पहले, मुझे जानता न कोई।
लब पर अगर न होता , तेरे नाम का तराना।।

मुझे कोई ग़म नहीं है, बदले अगर ज़माना।
मेरी ज़िन्दगी के मालिक, कहीं तुम बदल न जाना।।

बेघर बेदर हूं मैं, तेरे दर पे आ गया हूं।
तेरा दर ही बन चुका है, अब मेरा आशियाना।।

बस आरजू यही है, दम निकले तेरे दर पे।
दर तेरे आ गया हूं, दर दर अब रूलाना।।

दुष्ट को चाहे कितना ही सिखाओं पढ़ाओं, उसे सज्जन नहीं बनाया जा सकता। क्योंकि नीम के पेड़ को चाहे जड़ से चोटी तक दूध और घी से सींच दो, तब भी उसमें मिठास नहीं आ सकती। अर्थात नीम न होय मीठो, चाहे सीचों गुड़ घी से।

कैसी ये दुनिया

तर्ज : तुम संग प्रीत लगाई सजना

कैसी ये दुनिया बनाई दाता।
दाता दाता - ओ दाता।
ओ मेरे भगवान मेरे विधाता।।

तूने जगत में जीव बनाया।
चक्र चौरासी का फेर चलाया।।
चांद और तारे तू ने बनाए।
और कही पुरवाई दाता।।

रात बनाई तूने दिवस बनाया।
कई रंगो में इसको सजाया।।
कहीं है समन्दर कहीं सहरा है।
और कहीं धरती बनाई दाता।।

महिमा का तेरी कोई पार नहीं पाता।
कोई आता है और कोई जाता।।
ऋषि मुनियों ने जोर लगाया।
हाथ किसी के न आई दाता।।

रचना : कंचन कुमार।

कोई समझेगा क्या राज़े गुलशन।
जब तक उलझे न कांटों से दामन।।

जीवन है ये क्या जीवन

तर्ज : एक प्यार का नग्मा है

जीवन है ये क्या जीवन, जिसमें न रवानी है।
ज़िन्दगी और कुछ भी नहीं, दो दिन की कहानी है।।

करे प्यार जो हर दिल सें, डूबो को किनारा दे।
गिरतों को उठा उपर, बांहों का सहारा दे।
उपकार के जीवन की, यही श्रेष्ठ कहानी है।।

कांटा जो किसी को लगे, चलता पग रूक जाए।
सी सीने से निकले तेरी, और उसके तू काम आए।
इंसा ही नहीं वो जिसकी आंखों में न पानी है।।

यश कुछ भी कमा न सका, प्रभु के भी न गुण गाए।
ये जीना भी क्या जीना, जो किसी के न काम आए।
जीते जी जीने की, कुछ सार न जानी है।।

खुद खाया तो क्या खाया, औरो को खिला न सका।
दो घूंट पानी की, प्यासे को पिला न सका।
पथिक तेरी इस जग को, फिर याद क्यों आनी है।।

कभी इंसान तूफानों से घबराया नहीं करते ।
वो बन्दे क्या मुसीबत में मुस्काया नहीं करते।।
जो सुख दुख सर्दी गर्मी हंस हंस के सहते है।
बिना पानी के भी वो कमल कुम्हलाया नहीं करते।।

पागल सब संसार

पागल सब संसार देखा, पागल सब संसार।
ये जग दीवानों की बस्ती, देख सोच विचार।।

कोई देखा धन का पागल, पूजा करता धन की।
धन कारण सुख चैन गवाए मिटी न इच्छा मन की।
अन्त समय धन संग न जाए जोड़ जोड़ गया हार।।

कोई देखा रूप का पागल, यौवन का दीवाना।
पल पल बीती जाए जवानी, जीवन है ढल जाना।
जिस यौवन का मान करे तू, वो यौवन दिन चार।।

कोई देखा ज्ञान का पागल, पढ़ पढ़ नैन गवाए।
प्रेम बिना कभी ज्ञान न उपजे, बिरथा जनम गवांए।
सच्चा ज्ञान उसी ने पाया, करता जो उपकार।।

इन पागल दिमागों में भरे खुशियों के लच्छे हैं।
हमे पागल ही रहने दो हम पागल ही अच्छे हैं।।

खुदा को भुल गए लोग फिक्रे रोज़ी में।
रोटी तो याद रही देने वाले का ख़याल नही।।

वो ही पालन हारा

तर्ज : दीदी तेरा देवर दीवाना

वो ही जग का है पालन हारा।
प्रभु नाम तो सबका है सहारा।।
होगा जब उसका इशारा।
एक दिन मिल जाएगा किनारा।।

वो संग है तेरे तू है आंखे फेरे।
भटकता फिरे है तू सांझ सवेरे।।
उसको जिसने दिल से पुकारा।
एक दिन मिल जाएगा किनारा।।

क्या तिनका क्या पर्वत है सब उसकी माया।
वो कण कण बसा जग उसमें समाया।।
जो प्राणी तेरा नाम अधारा।
एक दिन मिल जाएगा किनारा।।

रचना : कंचन कुमार

अच्छी स्त्री से विवाह, जीवन के तूफ़ान में बन्दरगाह की तरह है, बुरी स्त्री से, बन्दरगाह में तूफ़ान की तरह।

नारी प्रकृति की बेटी है, उस पर क्रोध न करो।
उसका हृदय कोमल होता है, उस पर विश्वास करो।

कारीगर वो कारीगर

तर्ज : बाजीगर ओ बाजीगर

कारीगर वो कारीगर, वो है बड़ा कारीगर।
उसकी दुनिया निराली, वो ही सबका है माली।
कण कण में बसा वो ईश्वर।।

पर्वत की चोटी कहीं पे, चूमती है आसमां को।
कही पे रेशमी घटाए, बांधे है इस गुलिस्ता को।।
कही है चांद सितारे, कहीं पे सागर बनाया।
बारीश कहीं कहीं सूखा, कहीं पे धूप कहीं छाया।।
कण कण में समाएं, पर नज़र न आए,
वो ही सबसे बड़ा जादूगर।।

बीते पलो की ये टोली, लोगो जी कुछ गा रही है।
रुकती समय की नहीं गाड़ी, धीरे धीरे जा रही है।।
कल आज और कल का उसने, कैसा ये चक्कर चलाया।
सभी खिलौने सबकी चाबी, वो ही जाने उसकी माया।।
वो सबको नाच नचाए, पर नजर न आए,
वो ही सबसे बड़ा बाजीगर।।

रचना-कंचन कुमार

प्रत्येक व्यक्ति के अभिप्राय को सुनो परन्तु सुनकर एकदम बहक मत जाओ। उस पर विचार करो, जिससे आत्मा सहमत हो वही करो। बातें सुनने में जितनी कर्णप्रिय होती है, उनके अन्दर रहस्य नहीं होता। रहस्य वस्तु की प्राप्ति में है, दर्शन में नहीं। मिश्री का स्वाद चखने से आता है। देखने से नही।

ओ३म् की छाया तले

तर्ज : हे नीले गगन के तले

ओउम् की छाया तले, जीवन की जोत जले।
महिमा से उसकी सुबह आए महिमा से शाम ढले।।

ओउम् का नाम लेकें, ओउम् का ध्यान करके।
जीवन ये सरस चले।।

न कोई अपना, न है पराया।
सबको लगाले गले।।

न कोई ऊँचा, न कोई नीचा।
सब में ही ब्रह्म रमे।।

हृदय में प्रेम डोले, मुख से मधुर बोले।
सत्य वचन तू कहे।।

इस जीवन का, क्या है भरोसा।
पल में पंछी उड़े।।

न कोई बंधु, न कोई बांधव।
स्वार्थ में सब हैं खड़े।।

सच्चे मित्र हीरों की तरह कीमती और दुर्लभ हैं, झूठे दोस्त पतझड़ की पत्तियों की तरह हर जगह मिलते हैं।
-अरस्तु

हम सब मिलके दाता

हम सब मिलके आये दाता तेरे दरबार।
भर दे झोली सब की तेरे पूर्ण भण्डार।।

होवे जब प्रातः काल निर्मल होके तत्काल।
अपना मस्तक झुका के, करके तेरा ख्याल।
तेरे दर पर आके बैठे सारा परिवार।।

लेके दिल में फरियाद करते हम तुम को याद।
जब हो मुश्किल की घड़ियां तुम से मांगे इमदाद।
सब से बढ़के ऊँचा जग में तेरा दरबार।।

चाहे दिन हो विपरीत, होवे तुझ से ही प्रीत।
सच्ची श्रद्धा से गावें, तेरी भक्ति के गीत।
होवे सब का प्रभु जी तेरे चरणों में प्यार।।

तू है हम सब का वाली करता सब की रखवाली।
हम हैं रंग रंग के पौधे, तुम्हीं हम सब के माली।
पथिक बगीचा है यह तेरा सुंदर संसार।।

संसार में रहो किन्तु संसार के माया मोह से निर्लिप्त रहो। जिस प्रकार कमल कीच में विकसित होता है, तथापि उसके दल कीच के स्पर्श से परे निर्मल ही रहते हैं।

-विवेकानन्द

भक्ति कर भगवन की

तर्ज : संसार है एक नदिया

भक्ति कर भगवन की, तेरे काम जो आएगी।
जो बीत गई घड़ियां, तेरे हाथ न आएगी।।

मन झूठी माया का अभिमान क्यों करता है।
ये साथ नहीं जाए ये ध्यान क्यों धरता है।
काया भी नहीं तेरी ये छोड़ के जाएगी।।

इस दुनिया में तेरा कुछ दिन का बसेरा है।
अब प्रभु को मना पगले बस एक वो तेरा है।
ये दुनिया रूलाती है वो हंसती हंसाएगी।।

संसार में आकर के तेरा नाम जो लेवेगा।
इंसान वो हरदम ही खुशियों में खेलेगा।
अब भक्ति कर उसकी खुशियां घर आएगी।।

सृष्टि की रचना में प्रभुवर ही समाए हैं।
रचना करके जग की क्या खेल खिलाए है।
जगदीश की जो माया ये वाणी सुनाएगी।।

जो ऐसी चीज खरीदता है, जिसकी उसे जरूरत नहीं है, उसे एक दिन ऐसी चीज बेचनी पड़ती है जिसकी उसे सख्त जरूरत होती है।

कैसी प्रभु तूने कायनात बांधी

तर्ज : आधा है चन्द्रमा रात आधी

कैसी प्रभु तूने कायनात बांधी।
एक दिन के पीछे एक रात बांधी, साथ साथ बांधी।।

कभी थकते नहीं है ये घोड़े।
तूने सूरंज के रथ में जो जोड़े।।
रजनी ब्याहने चला चांद दुल्हा बना।
साथ चन्द्रमा के तारों की बारात बांधी।।

कैसी खुबी से बांधे ये मौसम।
वर्षा सर्दी हेमन्त और ग्रीष्म।।
ये बहार का समां और ये पतझड़ खिजा।
हवा बादलों के बीच बरसात बांधी।।

पक्षी जलचर व जन्तु चौपाये।
तूने सबके हैं जोड़े बनाये।।
नाग और नागनी राग और रागनी।
साथ स्त्री के पुरुषों की जात बांधी।।

नत्था सिंह हैं अनन्त तेरी माया।
जग के कण कण में तू है समाया।।
जग से बाहर नहीं फिर भी जाहिर नहीं।
अपने दामन में ऐसी करामात बांधी।।

तू ने खूब रचा

तू ने खूब रचा भगवान खिलौना माटी का।
माटी का रे माटी का, माटी का रे माटी का।।

कान दिए हरि भजन सुनन को।
तू मुंख से कर गुणगान।।

जिवहा दी हरि भजन करन को।
दी आंखे कर पहचान।।

शीश दिया प्रभु शरण झुकन को
और हाथ दिए कर दान।।

ओ३म नाम का बना के बेडा।
और उतरो भव से पार।।

हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य तब आता है, जब पराये अपने हो जाते हैं और सबसे बड़ा दुर्भाग्य या संकट तब आता है, जब अपने पराये हो जाते हैं।

- रविन्द्रनाथ ठाकुर

कुन्दन बना दो

प्रभु मेरे जीवन को कुन्दन बना दो।
कोई खोट इस में रहने न पाये।।

करो मेरे जीवन में ऐसा उजाला।
हर श्वास हो तेरे चिन्तन की माला।
मेरे दिल की दुनिया को इतना बदल दो।
कि दुनिया तेरी मुझे गले से लगाये।।

घटाओं की रिमझिम पवन के तराने।
लताओं का नाच और वृक्षों के गाने।।
नज़र जिस तरफ जाये भगवान मेरी।
अमर ज्योति तेरी उधर मुस्कराये।।

ज़गत को मैं अपना परिवार समझूं।
परिवार को तेरा उपकार समझूं।।
कुसंग, लोभ अभिमान, द्वेष और आलस्य।
कोई इन में मुझ को सताने न पाये।।

'काम' के समान कोई रोग नहीं है, 'मोह' के समान कोई शत्रु नहीं है। 'कोप' के समान कोई आग नहीं है तथा 'आत्मज्ञान' से बड़ा कोई सुख नहीं है।

मुझे ऐसा बना दो

तर्ज : छू लेने दो

मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता,
जीवन में लगे ठोकर न कहीं।
जाने अनजाने भी मुझ से,
अपकार ~~नुकसान~~ किसी का हो न कहीं।।

उपकार सदा करता जाऊं,
दुनिया अपकार भले ही करे।
बदनामी न हो जग में मेरी
कोई नाम भले ही दे न कहीं।।

जो तेरा बनकर रहता है,
कांटों में फूल सा खिलता है।
कितने ही कांटे पांव चुभें,
पर फूल भी हों कांटे न कहीं।।

तू ही बस मेरा ऐसा है,
दुख में भी साथ नहीं तजता।
दुनिया मुझे प्यार करे न करे,
खोऊँ तेरा भी न प्यार कहीं।।

मन हो मधु पूर्ण कलश मेरा,
आंखों से ज्योति छलकती हो।
तुम से मधु ऐसा पीने को,
जागता ही रहूं सोऊँ न कहीं।।

मैं क्या हूं, राह मेरी क्या है,
जीवन ये कंटीली राहें है।
इस राह पे चलते चलते कभी,
मेरे पांव थकें न, रूके न कहीं।।

मेरे दाता के दरबार में

मेरे दाता के दरबार में सब लोगों का खाता।
जो कोई जैसी करनी करता, वैसा ही फल पाता।।

क्या साधु, क्या सन्त गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सब की कर्म कहानी।
अन्तर्यामी अंदर बैठा, सब का हिसाब लगाता।।

बड़े बड़े कानून प्रभु के, बड़ी बड़ी मर्यादा।
किसी को कौड़ी कम नहीं देता, मिले न पाई ज्यादा।
इसीलिए वह दुनिया का जगत्पति कहलाता।।

चले न उस के आगे रिश्वत, चले नहीं चालाकी।
उस की लेन देन की बंदे, रीति बड़ी है बांकी।
समझदार तो चुप है रहता, मूरख शोर मचाता।।

उजली करनी कर ले बन्दे, कर्म न करयो काला।
लाख आंख से देख रहा है, वो तुझे देखने वाला।
उसकी तेज नजर से बंदे, कोई नहीं बच पाता।।

पुत्र वही है, जो पिता का भक्त है। पिता वही है, जो पोषक है। मित्र वही है जो विश्वासपात्र हो। पत्नी वही है, जो हृदय को आनन्दित करे।

पालने से लेकर कब्र तक ज्ञान प्राप्त करते रहो।

ओ३म् करूणा निधान है

जरा आ शरण में तू ओ३म् की, मेरा ओ३म् करूणा निधान है।
कण कण में है रमा हुआ, पत्ते पत्ते में विद्यमान है।।

ऋषि मुनि पा इसको तर गये योगी भी झोलियां भर गये।
अन्त नेति नेति हैं कर गए, ये नाम इतना महान है।।

इस नाम से तू लगा लगन, दिन रात इसमें तू हो मगन।
तुझे शक्ति इक मिल जाएगी, ये नाम मुक्ति का धाम है।।

ये नाम इतना महान् है, इस में भरा विज्ञान है।
हर लहर करती गान है, मेरे ओउम् का ही नाम है।।

इस नाम में इतना असर, दुख दर्द पीड़ा का न डर।
इच्छा पूर्ण हो तेरी प्रभु, मेरे देवता का प्रणाम है।।

थोड़ा नाम जपना जरूर चाई दा।
दुख ओ नू दसना जरूर चाई दा।
हनेरिया तुफानां होवे खुशियां मसाणां होवे।
ध्यान ओ दा रखना जरूर चाई दा।

दुनिया जिसे कहते है जादू का खिलौना है।
मिल जाए तो मिट्टी है खो जाए तो सोना है।।

याद कर ले घड़ी दो घड़ी

तर्ज : ज़िन्दगी की न टूटे लड़ी

उस प्रभु की कृपा बड़ी,
याद कर ले घड़ी दो घड़ी।
घण्टी बच जाये कब कूच की,
मौत हरदम सिरहाने खड़ी।। याद.....

किन्हीं शुभ कर्मों का फल है ये,
तुझे मानव का चोला मिला।
जो आया है जायेगा वो,
बन्द होगा न ये सिलसिला।
वेद की कहती एक एक कड़ी।। याद.....

इस जवानी पे इतरा न तू,
बातों बातों में मुंक जायेगी।
उभरा सीना सिकुड़ जायेगा,
और कमर तेरी झुक जायेगी।
टेक करके चलेगा छड़ी।। याद.....

जो करना है ले आज कर,
कुछ खबर प्यारे कल की नहीं।
मानव चोले को कर ले सफल,
ढील दे इसमें पल की नहीं।
टूट श्वासों की जाये लड़ी।। याद.....

प्रभु जी तेरी लीला

प्रभु जी तेरी लीला है अपरम्पार।
सबके मालिक सबके दाता, ओ जग के करतार।।

ओ अविनाशी, घट घट वासी, भेद न तेरा पाया।
सबकी नजरों में रह कर भी, नजर किसी को न आया।
पर जो तेरा हो जाए, हर रंग में तुझको पाए।
करे तेरा सदा दीदार।। प्रभु जी तेरी लीला....

ओ सत के बन्दे तेरी, हर एक बार निराली।
हम तो छुट्टियां करते है पर, तू न बैठे खाली।।
दिन रात और सांझ सवेरे, खुले रहते है दफतर तेरे।
हर रोज़ नियम अनुसार।। प्रभु जी तेरी लीला....

दिन में दुनिया काम करे, और रात को करे आराम।
रात न होती तो हो जाती, बोलो सबकी राम।।
क्या खूब नियम है तेरा, जाए रात और आए सवेरा।
हर रोज़ नियम अनुसार।। प्रभु जी तेरी लीला....

बिन मांगे दे मुफ्त सभी को, हवा रोशनी पानी।
दान करे और जतलाए न, गजब का वो है दानी।।
तू सबको ही देता दाता, तेरा दिया हुआ हर कोई खाता।
हे तेरे भरे भंडार।। प्रभु जी तेरी लीला....

मुस्कराना सीख ले

अपने दुःख में रोने वाले मुस्कराना सीख ले।
दूसरों के दर्द में आंसू बहाना सीख ले।।

जो खिलाने में मजा है, आप खाने में नहीं।
जिन्दगी में तू किसी के काम अपना सीख ले।।

कर गरीबों का भला बेनसीबों पर रहम।
सेवा में भगवान है तू दर्श पाना सीख ले।।

एक छोटा सा दीया है गम न कर इस बात का।
इन अंधेरों में किसी को राह दिखाना सीख ले।

कर्म तेरा हो भलाई धर्म तेरा प्रेम हो।
बेसहारों का सहारा बन उठाना सीख ले।।

वीर कर वो काम जिससे तू सदा जिन्दा रहे।
हर किसी को प्यार से अपना बनाना सीख ले।।

इतना आसां नहीं आबाद करना घर मोहब्बत का।
ये उसी का काम है जो खुद बरबाद होते हैं।।

फुरसत के वक्त भी न सिमरन का वक्त निकला।
उस वक्त, वक्त मांगा जब वक्त तंग आया।।

कीर्तन-झोली भर दे

तर्ज : सोणी दे नखरे.....

दाता हमारी झोली भर दे।
सबकी मुरादें पुरी कर दे।।

तेरे दर से सवाली, आहा-आहा।
जाए भर झोली खाली, आहा-आहा।।
तेरी शरण में आके, आहा-आहा।
मिल जाए खुशहाली, आहा-आहा।।

तेरा नाम अघारा, आहा-आहा।
सारे जग का सहारा, आहा-आहा।।
चाहे कितने हो तूफां, आहा-आहा।
मिले सब को किनारा, आहा-आहा।।

प्रभु भक्ति का प्याला, आहा-आहा।
पीले बन मतवाला, आहा-आहा।।
कोई फिक्र न कंचन, आहा-आहा।
जब वो है रखवाला, आहा-आहा।।

रचनाः कंचन कुमार

चरणों में तेरे हे प्रभु

चरणों में तेरे हे प्रभु अर्पण है जिन्दगी मेरी।
तू ही मेरा माता पिता, तेरी शरण बन्दगी मेरी।।

जब से लिया है मेंने जनम, मुझको मिले है गम ही गम।
चिन्ता भरे जहान में, तू ही है जिन्दगी मेरी।।

किसको सुनाए हम यहां, मतलब का है ये सारा जहां।
स्वार्थ भरे जहान में, तू ही है जिन्दगी मेरी।।

तेरी दया से हे प्रभु लाखें की पापी तर गए।
तेरा सहारा मेरे प्रभु कहती है ज़िन्दगी मेरी।।

पागल मन मेरा है बड़ा सागर शरणंर में आ पड़ा।
विनती करूं मैं हे प्रभु पापी है ज़िन्दगी मेरी।।

अन्न और जल के दान के समान कोई दान नहीं है।
द्वादशी के समान कोई तिथि नहीं है।
गायत्री से बढ़कर कोई मन्त्र नही है।
मां से बढ़कर कोई देवी देवता नही है।

बुरा काम करते समय मनुष्य हंसता है, आनन्द मनाता है किन्तु परिणाम भोगते समय रोना पड़ता है।

–महाभारत

तेरा ही आसरा है

तर्ज : मुझे इश्क है तुम्हीं से

सारे जहां के मालिक तेरा ही आसरा है।
राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।।

हम क्या बतायें तुझको, सब कुछ तुम्हें खबर है।
हर हाल में हमारी, तेरी तरफ नजर है।
किस्मत है वो हमारी, जो तेरा फैसला है।।

हाथों को हम दुआ की खातिर में लाये कैसे।
सज़दे में तेरे आकर, सिर को झुकायें कैसे।
मजबूरियां हमारी, सब तू ही जानता है।।

रो कर कटे या हंस कर, कटती है ज़िन्दगानी।
तू गम दे या खुशी दे सब तेरी मेहरबानी।
तेरी खुशी समझकर, सब ग़म भुला दिया है।।

दुनिया बनाके मालिक, जाने कहां छिपा है।
आता नहीं नजर तू, बस एक यही गिला है।
भेजा है इस जहां में, जो तेरा शुक्रिया है।।

प्रभु अपने बन्दों की खुद करता निगहबानी।
नया मंजर नया बिस्तर नया दाना नया पानी।।

तेरे नाम का सुमिरन

तेरे नाम का सुमिरन करके, मेरे मन में सुख भर आया।
तेरी कृपा को मैंने पाया, तेरी दया को मैंने पाया।।

दुनिया की ठोकर खाकर जब हुआ कभी बेसहारा।
न पाकर अपना कोई तब मैंने तुम्हे पुकारा।
हे नाथ मेरे सिर ऊपर तूने अमृत बरसाया।।

तू संग में था नित मेरे, ये नैना देख न पाए।
चंचल माया के रंग में, ये नैन रहे उलझाए।
जितनी भी बार गिरा हूं, तू ने पग पग मुझे उठाया।

भवसागर की लहरों में भटकायी मेरी जब नैया।
तट छूना भी मुश्किल था, नहीं दीखे कोई खिवैया।
तू लहर बना सागर की, मेरी नाव कनारे लाया।।

हर तरफ तुम्हीं हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा।
निर्लेप प्रभु जी मेरे, हर रूप में रंग तुम्हारा।
तेरी शरण में दाता, मैने तेरा ही तुम को चढ़ाया।।

हंसिबो खेलिबो करिबो ध्यान-गोरख वाणी।
कोई भी कार्य करो तो खेल समझ कर पूरा करो।।

तुम साधुओं की जिन्दगी भक्तों की आस हो।
मैं उनका दास हूं जो प्रभु तेरा दास हो।।

जागो रे जिन जागना

जागो रे जिन जागना, अब जागन की बार।
फेर क्या आगे नानका, जब सोवे पांव पसार।।

गुण गोविन्द गायों नहीं, जनम अकारथ कीन्ह।
कहे नानक हरिभज मना, जेहि विधि जग को मीन।।

जो प्राणी ममता तजै, लोभ मोह अहंकार।
कहे नानक ये विपद में, एक एक रघुनाथ।।

सुख में बहुसंगी भये, दुख में संग न कोय।
कहे नानक हरिभज मना, अन्त सहाई होय।।

संग सखा सब तज गए, कोई न निभयों साथ।
कहे नानक इस विपद में, एक एक रघुनाथ।।

झूठे मान काहे करे, जग सुपना ज्यों जान।
इनमें कछु तेरो नहीं नानक कहयों बखान।।

अपना हृदय पवित्र रखोगे तो,
दस प्राणियों की शक्ति रखोगे।

जागते रहिए मगर क्या होगा।
वक्त पर अपने सवेरा होगा।।

दयालू दया कर

तर्ज : ये दिल और उनकी

दयालू दया कर, दया कर दया कर।
ये प्याला मेरा प्रेम अमृत से दे भर।।

मुझे सोते जागते रहे ध्यान तेरा।
विषय वासना में लगे मन न मेरा।।
तेरा जाप करता हूं सर को झुका कर।
ये प्याला मेरा प्रेम अमृत से दे भर।।

मेरे मन के मन्दिर में प्रकाश कर दो।
अविधा व अन्धकार का नाश कर दो।।
करूं प्रार्थना मैं सर को झुका कर।
ये प्याला मेरा प्रेम अमृत से दें भर।।

सरल शब्द मे तीन अक्षर है स, र, ल, 'स' से सीता 'र' से राम, 'ल' से लक्ष्मण। जिस तरह प्रभु सरल है उसी तरह आप भी सरल बनो।

सीधे बनें। जंगल की टेढ़ी लकड़ियां जलाने के काम ही आती हैं लेकिन सीधी लकड़ियों से निर्माण होता है।।

हे ज्ञानरूप भगवन

हे ज्ञानरूप भगवन हमको भी ज्ञान दे दो।
करूणा के चार छींटे करूणा निधान दे दो।।

अपनी मदद हमेशा खुद आप कर सकें हम।
इन बाजुओं में शक्ति हे शक्तिमान दे दो।।

दाता तुम्हारे दर पर किस चीज की कमी है।
चाहो तो निर्धनों को दौलत की खान दे दो।।

डर है कहीं तुम्हारा रास्ता न भूल जाऊँ।
भक्तों की मंडली में हमकों भी स्थान दे दो।।

सुनते है जग में तुम हो बिगड़ी बनाने वाले।
आए है तेरी शरणी हमको भी मान दे दो।।

जल में तेल, दुष्ट से कही गई गुप्त बात, योग्य व्यक्ति को दिया गया दान तथा बुद्धिमान को दिया गया ज्ञान थोड़ा सा होने पर भी अपने आप विस्तार प्राप्त कर लेते हैं।

सोने की हिरनी न तो किसी ने बनायी, न किसी ने इसे देखा और न यह सुनने में ही आता है कि हिरनी सोने की भी होती है। फिर भी रघुनन्दन की तृष्णा देखिए। वास्तव में विनाश का समय आने पर बुद्धि विपरीत हो जाती है।

अगर हो सके न

तर्ज : परदेसियों से न अखियाँ मिलाना

अगर हो सके न किसी को सताना ।
किए जा भलाई चाहे, जो तू सुख पाना ।।

ओ...उसके न आगे ज़ोर, किसी का चलेगा ।
जैसा जो करेगा वो, वैसा ही भरेगा ।
सब कुछ यहीं पे बंदे, पड़ेगा चुकाना ।।

तेरी जिन्दगी है जैसे, पानी का बबूला ।
डोले क्यों पगले जाने, तू फूला-फूला ।
मिट जाए पल मे कब ये कुछ भी पता न ।।

ये माया है आनी, जानी छाया ।
न ही साथ जाए, न ही साथ लाया ।
खाली हाथ आया तुझको, खाली हाथ जाना ।।

ये सिलसिला तो चलता रहेगा ।
भलाई का बदला, भला ही मिलेगा ।
कभी भी किसी को बंदे, मत ठुकराना ।।

दुनिया बनाने वाला

तर्ज : कजरा मोहब्बत वाला

दुनिया बनाने वाला, जग को चलाने वाला।
सब का है दाता भगवान माने न माने इंसान।।

आंखे न हाथ जिसके, न कोई आकार देखो,
न है औजार कोई, न कोई आधार देखो।
रचना है फिर भी कैसी, अदभुत संसार देखो,
पतझड़ दिखाने वाला, बादल बरसाने वाला।
कहीं कहीं जंगल बियावान।। माने न माने

चलती न रिश्वतखोरी, उसके दरबार कोई,
संगी न साथी उसका, न रिश्तेदार कोई।
संगी न साथी उसका, न रिश्तेदान कोई,
सज्जन हंसाने वाला, दुर्जन रूलाने वाला।
सबको है देता अंजाम।। माने न माने

निर्जन भयानक वन से, जो चाहो पार जाना,
भक्ति तप ज्ञान द्वारा, भवसागर पार जाना।
पथिक मंजिल से अपनी, हिम्मत न हार जाना,
मारग दर्शाने वाला, उलझन सुलझाने वाला।
करता है सबका कल्याण।। माने न माने

एक झोली में

इक झोली में फूल भरे हैं, इक झोली में कांटे रे।
कोई कारण होगा।
तेरे बस में कुछ भी नहीं, ये तो बांटने वाला जाने रे।
कोई कारण होगा।।

पहले बनती है तकदीरें, फिर बनते है शरीर।
ये प्रभु की कारीगरी है, तू है क्यों गंभीर।
कोई कारण होगा।।

नाग भी डस ले तो मिल जाये, किसी को जीवन दान।
चींटी से भी मिट सकता है, किसी का नाम निशान।
कोई कारण होगा।।

धन का बिस्तर मिल जाये पर, नींद को तरसे नैन।
कांटों पर सोकर भी आये, किसी के मन को चैन।
कोई कारण होगा।।

सागर से भी बुझ सकती नहीं, कभी किसी की प्यास।
कभी एक ही बूंद से, हो जीती है पूरण आस।
कोई कारण होगा।।

कोई चले नहीं बिन मोटर के, कोई नंगे पैरों भाग रहा।
कोई महलों की अभिलाष करे, कोई बनी हवेली त्याग रहा।
कहीं ढेर पड़े ज़र ज़ेवर के कहीं कर्ज किसी से कोई मांग रहा।
कोई ले सड़क पर खर्राटे, कोई गद्दों पर भी जाग रहा।

शरण में आये हैं

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन्।
संभालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

न हममें बल है न हममें शक्ति, न हममें साधन न हममें भक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, जो तुम हो पालक तो हम हैं बालक।
जो तुंम हो ठाकुर तो हम पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

सुना है हमने कि हम तुम्हारे, तुम्ही हो सच्चे प्रभु हमारे।
तो सुध हमारी है क्यों बिसारी, दया करो है दयालु भगवन्।।

बुरे हैं जो हम तो है तुम्हारे, भले हैं जो हम तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे होकर के हम दुःखारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

प्रदान कर दो महान् शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहाओगे ताप-हारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

प्रार्थना परमात्मा के द्वार पर आपकी आत्मा की पुकार है। प्रार्थना उसके द्वार पर विवशताओं का क्रन्दन नहीं बल्कि वेदनाओं का विसर्जन है।

भजन सुनाता चल

तर्ज : गीत गाता चल

गीत गाता चल प्रभु के भजन सुनाता चल।
ओ बन्धु रे, प्रभु गुण गाते बीते हर घड़ी हर पल।।

वादा किया प्रभु से, नर तन पाया रे,
दुनिया में आके तूने वादा भुलाया रे।
अपनी ही धुन में रहा तू मगन,
मन से किया न कभी प्रभु का भजन।
ओ साथी रे, मन से हरि गुण गाले पल कुछ पल।।

सोच ले बन्दे तुझे, एक दिन जाना रे,
बड़ा ही कठिन फिर से नर तन पाना रे।
ओ कल कल करते बीतेगी ये उमर,
आने वाले कल की नहीं किसी को खबर।
ओ बन्धु रे, देखा किसी ने नहीं आने वाला कल।।

बन्धन और वन्दन में इतना ही फर्क है एक संसार से बांधता है एक संसार से मुक्त करता है।

दरिद्र, अपाहिज, रोगी, अनुदार और विपत्ति में पड़े हुये जीवों को अपने से छोटा मत समझो, उनसे घृणा मत करो, बल्कि उनकी सेवा करो और उन्हें सुख पहुंचाओ। ईश्वर न करे तुम्हारे भी जीवन में वैसी अवस्था हो सकती है।

-भगवान महावीर

मेरे देवता

तर्ज : बहुत प्यार करते हैं

मेरे देवता मुझको देना सहारा।
कहीं छूट जाए न, दामन तुम्हारा।।

तेरे रास्ते से हटाती है दुनिया।
इशारों से मुझको, बुलाती है दुनिया।
न समझूं मैं जग का झूठा इशारा।।

तेरे रास्ते से हटाए न कोई।
लगन का ये दीपक, बुझाए न कोई।
तुम्हीं मेरी नैया हो तुम्ही हो किनारा।।

सुबह शाम तुमको ध्याता रहूं मै।
तेरे प्रेम के गीत गाता रहूं मैं।
तेरा नाम है मुझको, प्राणों से प्यारा।।

मैंने यह हमेशा देखा है कि दुनिया में कामयाब होने के लिये आदमी को ऊपर से मूर्ख बने रहना चाहिये, पर वास्तव में बुद्धिमान होना चाहिए।

अगर तुम बहुत ऊँचा जाना चाहते हो
तो बहुत नीचे से चलना शुरू करो।
-साइरस

ओ३म् जपने से तर जायेगा

ओ३म् जपने से तर जायेगा ।
तेरा जीवन संवर जायेगा ।।

सब कहेंगे कहानी तेरी ।
काम अच्छे जो कर जायेगा ।।

बड़ी मुश्किल से नर तन मिला ।
पार भव से उतर जायेगा ।।

अपनी झोली तो फैला ज़रा ।
देने वाला वो भर जायेगा ।।

छोटा सा तो जीवन है

छोटा सा तो जीवन है, करता चल तू दान रे ।
काम कभी तू आ दुनिया के, आंसू पोंछ किसी दुखिया के ।
उठा गिरे को, बना मिटे को, अपना ही सा जान रे ।
मिटे किसी की यदि कंगाली, कर दे तू अपने को खाली ।
तेरी झोली भरने वाला, है तेरा भगवान रे ।
मिले अगर जो शूल राह पर सदा बिछा तू फूल राह पर ।
आज नहीं तो कल लाएगा, रंग तेरा बलिदान रे ।

प्रभु जी तुम बड़े दयालु

कीर्तन

प्रभु जी तुम बड़े दयालु हो।
बड़े दयालु हो प्रभु जी तुम बड़े कृपालु हो।।

हमको बस तेरा सहारा है।
सबका तू पालन हारा है।
सबके घर आंगन में खुशियाँ भरने वाले हो।।

मेरे मन तेरी भक्ति है।
मेरे तन तेरी शक्ति है।
सबके मन मंदिर को पावन करने वाले हो।।

तुम हो सच्चे करतार प्रभु।
करते हो बेड़ा पार प्रभु।
तिल-तिल जलती धूप में छाया करने वाले हो।।

जो भी दर तेरे आता है।
मुरादे कंचन पाता है।
तुम सबकी आशाऐं पूरी करने वाले हो।।

रचना : कंचन कुमार

लगन तुमसे लगा बैठे

लगन तुमसे लगा बैठे जो होगा देखा जाएगा।
ये दिल जग से हटा बैठे जो होगा देखा जाएगा।।

कभी दुनिया से डरते थे, छुप-छुप के याद करते थे।
वो अब परदा हठा बैठे, जो होगा देखा जाएगा।।

कभी ये ख्याल था दुनिया, हमें बदनाम कर देगी।
शर्म अब बेच खा बैठे, जो होगा देखा जाएगा।।

दीवाने बन गए तेरे, अब दुनिया से क्या मतलब।
ये दिल सबसे हटा बैठे, जो होगा देखा जाएगा।।

मै सब कुछ लुटा सकता हूँ, तुम्हारे इक इशारे पे।
ये दिल दुखता बना बैठे, जो होगा देखा जाएगा।।

तुम्हारी बेरुखी से, दिल मेरा ये टूट जाएगा।
अब हम सब कुछ लुटा बैठे, जो होगा देखा जाएगा।।

पल-पल तरसे थे, जिस पल के लिए ।
वो पल आया भी तो, कुछ पल के लिए ।।
सोचा था इस पल को, यादगार बना देंगे ।
पर ये पल ठहरा भी तो, कुछ पल के लिए ।।

वरदान जो मिल जाए

दाता तेरे सुनिरन का, वरदान जो मिल जाए।
मुरझाई कली दिल की, इक आन में खिल जाए।।

सुनते हैं तेरी रहमत, दिन-रात बरसती है।
एक बूंद जो मिल जाए, तकदीर बदल जाए।।

ये मन बड़ा चंचल है, चिंतन में नहीं लगता।
जितना इसे समझा लूं, उतना ही मचल जाए।।

हे नाथ! मेरे मन की, बस इतनी तमन्ना है।
पापों से बचा लेना, पांव न फिसल जाए।।

देवत्व के फूलों से, दामन को मेरे भर दो।
जीवन ये सुगन्धित हो, दुर्गन्ध निकल जाए।।

ऐ मानव तू दिल से, प्रभु का सिमरन कर ले।
दोषों भरे जीवन का कांटा ही बदल जाए।।

तुम्हारा दिल जितना हल्का होगा,
तुम्हारी प्रार्थना उतनी ऊँची होगी।।

इबादत करते हैं जो लोग जन्नत की तमन्ना में।
इबादत नहीं है वो तो सिर्फ तिज़ारत है।।

मेरा आपकी दया से

मेरा आपकी दया से, सब काम हो रहा है ।
करते तो तुम हो दाता, मेरा नाम हो रहा है ।।
करते तो तुम हो दाता..... मेरा नाम....

पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है ।
हैरान है ज़माना, मंज़िल भी मिल रही है ।
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा है ।।

तुम साथ हो जो मेरे, किस चीज की कमी है ।
किसी और चीज़ की ही, दरकार ही नहीं है ।
तेरे साथ से ये गुलशन, गुलफाम हो रहा है ।।

मैं तो नहीं हूँ क़ाबिल, तेरा साथ कैसे पाऊँ ।
टूटी हुई जुबां से, गुणगान कैसे गाऊँ ।
तेरी ही प्रेरणा से, ये तमाम हो रहा है ।।

मुझे हर कदम पे, तूने दिया सहारा ।
मेरी ज़िन्दगी बदल दी, करके तो इक इशारा ।
एहसान पे ये तेरा, एहसान हो रहा है ।।

तूफान आँधियों में, तूने ही मुझको थामा ।
तुम कृष्ण बन के आये, जब मैं बना सुदामा ।
तेरा क़रम ये मुझ पर, सरेआम हो रहा है ।।

एक बार भजन कर ले

एक बार भजन कर ले मुक्ति का यतन कर ले।
कट जायेंगे जन्म-मरण, प्रभु का चिन्तन कर ले।।

यह मानव का चोला हर बार नहीं मिलता,
जो गिर गया डाली से वो फूल नहीं खिलता।
मौका है ये जीवन का, गुलजार चमन कर ले।।

नर इन कानों से सुन तू ऋषियों की वाणी,
मन को ठहरा करके बन जा आत्मज्ञानी।
जिह्वा तो चले मुख में, अब ओउम् जपन कर ले।।

इस मैली चादर में, है दाग लगे कितने,
पर ज्ञान की साबुन में है झाग भरे इतने।
धुल जायेगी सब स्याही, उजला तन-मन कर ले।।

सुन वेदों में गूँज रही, मंत्रों की मधुर ध्वनियाँ,
बलिदान के इस युग में तू गूँथ नई कड़ियाँ।
अब तो प्रभु के आगे, नीची गर्दन कर ले।।

तू व्यापक डाली-डाली है

तू व्यापक डाली-डाली है, कोई जगह न तुझसे खाली है।

तेरी ही अद्भुत माया है, तूने ही जगत रचाया है।
सब पर ही तेरा साया है, जग बाग़ तेरा तू माली है।

सब वृक्ष और बेलें झूम रहीं, तेरे चरणों को है चूम रही।
तेरी प्रेम की वायु से झूम रही, तेरी महिमा अजब निलाली है।

सब पक्षी तुझे ही ध्याय रहें, तेरे ही सब गुण गाए रहे।
तेरे ध्यान में मन लगाय रहे, तू ही प्रभु सबका वाली है।

तू सब जग का दुःख हरता है, और सबका पालन करता है।
क्या राजा है क्या प्रजा है, तेरे दर पर सभी सवाली है।

सब मिलकर तेरे गुण गाते हैं, तेरे चरणों में शीश झुकाते हैं।
दो भक्ति दान यह चाहते हैं, तेरे दर पर अलख जगाली है।

देह धरे का दण्ड है, सब कोउ को होय।
ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मूरख भुगते रोय।।

देख कर पांव रखें, छान का पानी पिए
सत्य बोले मन से पवित्र आचरण करें। -मनुस्मृति

बिना उस प्रभु की कृपा से भरम मन का न जाता है।
करे वो प्रभु दया जिस पर वही सुख शांति पाता है।।

प्रभु जी इतनी सी

प्रभु जी इतनी सी दया कर दो, हमको भी तुम्हारा प्यार मिले।
कुछ और भले ही मिले न मिले, तेरी भक्ति का अधिकार मिले।।

सब कुछ पाया इस जीवन में, बस एक तमन्ना बाकी है।
हर प्रेम पुजारी के मन में, तेरी भक्ति का अधिकार मिले।।

वो जीवन भी क्या जीवन है, जिस जीवन में जीवन ही नहीं।।
जीवन तब जीवन बनता है, जब जीवन का आधार मिले।।

जिसने तुमसे जो कुछ मांगा, उसने तुमसे वो ही पाया।।
दुनिया को मिले दुनिया लेकिन, भक्तों को तेरा वो प्यार मिले।।

हम जन्म-जन्म के प्यासे हैं, और तुम करुणा के सागर हो।
करुणा निधि से करुणा रस की एक बूँद हमें एक बार मिले।।

इस मार्ग पर चलते-चलते, सदियां ही नहीं युग बीत गये।।
मिल जाये पथिक मंजिल अपनी हमको जो तुम्हारा द्वार मिले।।

न करने योग्य काम नहीं करना चाहिये।
करने योग्य काम में आलस्य नहीं करना चाहिये।
जिससे नशा चढ़े वो पेय नहीं पीना चाहिये।
कार्य सिद्ध होने से पहले मंत्र प्रकट नहीं करना चाहिये।

लगता है ईश्वर से यह दिल

तर्ज : मिलती है जिन्दगी में मोहब्बत कभी-कभी

लगता है ईश्वर से यह दिल कभी-कभी।
मिलती है सज्जनों की महफिल कभी -कभी।।

मिलते हैं जन्म अनेकों है जीव आत्मा को।
मिलता है आदमी का यह तन कभी-कभी।।

चलना तो रात-दिन है जीवन की राह में।
मिलती है आदमी को मंजिल कभी-कभी।।

मंझधार में हो नैया अंधियारी रात हो।
ऐसी दशा में मिलता है साहिल कभी-कभी।।

इक बूंद जल की प्यासा चातक है चाहता।
स्वाति में बरसता है ये बादल कभी-कभी।।

लाखों जहां में आये लाखों चले गये।
जीवन में है मिलता रहबर कभी-कभी।।

बोल सको तो मीठा बोलो, कटु बोलना मत सीखो।
लगा सको तो बाग लगाओ, आग लगाना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाओ, दिलों का जलाना मत सीखो।
मिटा सको तो अहं मिटाओ, प्रेम मिटाना मत सीखो।
बिछा सको तो फूल बिछाओ, शूल बिछाना मत सीखो।
बता सको तो सुपथ बताओ, पथ भटकाना मत सीखो।

प्रभु प्यारे से

प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है,
उसे हर दम आनन्द ही आनन्द है।

झूठी ममता से करके किनारा,
लेके सच्चे पिता का सहारा।
हुआ उसकी रज़ा में रज़ामन्द है,
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

जिस की कथनी में कोयल की चहक है,
जिसकी करनी में फूलों सी महक है।
प्रेम नरमी ही जिस की सुगन्ध है,
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

निंदा चुगली न जिसको सुहावे,
बुरी संगंत की रंगत न भावे।
सत्संगत ही जिसको पसन्द है,
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

दीन दुःखियों के दुःख जो मिटावे,
बनके सेवक भला सबका चाहे।
जिसके जीवन में पाखण्ड न घमण्ड है,
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

नर-नारी सब

नर नारी सब प्रातः शाम,
भज लो प्यारे ओ३म् का नाम।

ओ३म् नाम का पकड़ सहारा,
जो है सच्चा पिता हमारा।
वह ही है मुक्ति का धाम।

कैसा सुन्दर जगत रचाया,
सूरज चन्द्र, आकाश बनाया।
गुण गाता है जगत तमाम।।

पृथ्वी और पहाड़ बनाए,
नदिया नाले खूब सजाए।
कर बिन कर्म करें निष्काम।।

ऋषियों मुनियों ने है ध्याया,
अन्त किसी ने न उसका पाया।
करते हैं उसको प्रणाम।।

मन अपने को शुद्ध बनाओ,
विषय विकारों से बच जाओ।
वेदों का यह ही प्रमाण।।

हीरा जनम गंवाओं न तुम,
नन्दलाल घबराओ न तुम।
संध्या करो सुबह और शाम।।

मिलता है सच्चा सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल,
भगवान तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे बैरी खुद संसार बने,
चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बनें,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो,
चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
पर मन न डगमग मेरा हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे कांटों पर मुझे चलना हो,
चाहे अग्नि में भी जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।

मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

ओ३म् नाम के हीरे मोती

ओ३म् नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली गली।
ले लो रे कोई ओउम् का प्यारा, आवाज लगाऊँ गली-गली।।

माया के दीवानों सुन लो, इक दिन ऐसा आयेगा।
धन दौलत और रूप खजाना, धरा यही रह जायेगा।
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली।।

मित्र प्यारे सगे सम्बन्धी, इक दिन तुझे भुलायेंगे।
कल जो कहते थे अपना, अग्नि में तुझे जलायेंगे।
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाये कली-कली।।

क्यों करता है मेरी मेरी, तज दे इस अभिमान को।
छोड़ जगत के झूठे धंधे, जप ले प्रभु के नाम को।
गया समय फिर हाथ न आये, तब पछताये घड़ी-घड़ी।।

जिसको अपना कह कर के, मूरख तू इतराता है।
छोड़ दे बन्दे साथ विपद में, साथ नहीं कोई जाता है।
दो दिन का यह रैन बसेरा, आखिर होगी चलो चली।।

चार कार्यो में कोई साथ नहीं देता।
ये कार्य स्वयं करने होते हैं
भोजन, भजन, लग्न एवं मृत्यु।

चंचल मन नित

चंचल मन नित ओ३म् जपाकर,
ओ३म् जपाकर ओ३म्।
पल-पल, छिन-छिन, घड़ी-घड़ी, निशिदिन,
ओ३म् जपाकर ओ३म्।।

प्रातः समय की शुभ वेला में,
संध्या की पुलकित रजनी में।
रोम-रोम से निकले तेरे,
ओ३म् जपाकर ओ३म्।।

गहरा सागर टूटी नैया।
जीवन तरनी ओ३म् खिवैया।
पार करेंगे ओ३म्।।

सार तत्व की खोज किये जा।
नाम सरस रस रोज पिये जा।
पार करेंगे ओ३म्।।

पावक की लपटों में पड़कर सोना कुंदन बन जाता है,
भाव शुद्ध हो नन्हा धागा रक्षाबन्धन बन जाता है।
संघर्षों की भट्टी में तप जाना छोटी बात नहीं,
त्याग तपस्या से मानव माथे का चंदन बन जाता है।।

सब में ओ३म् समाया

मुझमें ओ३म् तुझ में ओ३म्, सब में ओ३म् समाया।
सब से करलो प्रीत जगत में, कोई नहीं पराया।।

जितने ये संसार में प्राणी, सब में एक ही ज्योति।
एक बाग के फूल हैं सारे, इक माला के मोती।
एक ही कारीगर ने सबको एक माटी से बनाया।।

एक बाप के बेटे हैं हम, एक हमारी माता।
दाना पानी देने वाला, एक हमारा दाता।
फिर ना जाने किस मूर्ख ने, लड़ना हमें सिखाया।।

छूतछात और भेदभाव की, दीवारों को तोड़े।
टूट गये हैं मन के मन्दिर, प्रेम से इनको जोड़े।
बदला जमाना हम भी बदले, समय है ऐसा आया।।

इस तरह से मत कमाना कि पाप आ जाए,
इस तरह से मत खाना कि मर्ज आ जाए।
इस तरह से मत खर्च करना कि कर्ज आ जाए,
इतना धीरे भी मत चलना कि देर हो जाए।।

जीवन की घड़ियां

जीवन की घड़ियों वृथा न खो,
ओ३म् जपो ओ३म् जपो।
चादर न लम्बी तान के सो,
ओ३म् जपो, ओ३म् जपो।।

ओ३म् ही जग का सार है,
जीवन है जीवन आधार है।
प्रीति न उसकी मन से तजो,
ओ३म् जपो ओ३म् जपो।।

चोला यही है कर्म का,
करने को सौदा धर्म का।
इसके बिना मार्ग न कोई,
ओ३म् जपो ओ३म् जपो।।

मन की गति सम्भालिये,
ईश्वर की ओर डालिये।
खोना न चाहे जीवन को जो,
ओ३म् जपो ओ३म् जपो।

नमस्कार भगवान तुम्हें

नमस्कार भगवान तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।

कण-कण में तुम बसे हुए हो तुझमें जगत् समाया है।
तिनका हो चाहे पर्वत हो सभी तुम्हारी माया है।।
तुम दुनिया के हर प्राणी के जीवन के आधार हो।। श्रद्धारूपी

सबके सच्चे पिता तुम्ही हो तुम्ही जगत् की माता हो।
भाई बन्धु सखा सहायक रक्षक पोषक दाता हो।।
चींटी से लेकर हाथी तक सब के सृजन हार हो।। श्रद्धारूपी

ऋषि-मुनि योगी जन सारे तुमसे ही वर पाते हैं।
क्या राजा क्या रंक तुम्हारे दर पर शीश झुकाते हैं।।
परम कृपालु परम दयालु करूणा के आधार हो।। श्रद्धारूपी

जीवन के तूफानों में प्रभु तुम ही एक सहारा हो।
डगमग डगमग नैया डोले तुम ही नाथ किनारा हो।।
तुम खेवट हो इस नैया के और तुम्ही पतवार हो।। श्रद्धारूपी

आँधियों से अपने रिश्ते तो बहुत पुराने हैं।
फिर भी हर हाल में चिराग़ तो जलाने हैं।।

तेरे करम से बेनियाज़

तेरी दया से हे प्रभु कौन सी शै मिली नहीं।
झोली ही मेरी तंग है, तेरे यहां कमी नहीं।।

जीने को जी रहा हूं मैं, मालिक तेरे बगैर भी।
ज़िन्दगी किसको कह सकूं, ऐसी तो जिन्दगी नहीं।।

कब से पुकारता है दिल, सुनता मगर कोई नहीं।
मेरा तो इस जहान में, तेरे सिवा कोई नहीं।।

माना कि मैं गरीब हूं, माना कि मैं फकीर हूं।
मुझसे न ऐसे रूठिये, कि जैसे मेरा कोई नहीं।।

सज़दा करूं किसको बता, जब तू ही सामने नहीं।
कायले बन्दगी तो हूं, काबिले बन्दगी नहीं।।

ग़म पे ग़म उठाये जा, तीरों पे तीर खाये जा।
उफ न कर लबों को सी, आशिकी हैं, दिल्लगी नहीं।।

इसकी नज़र मिली तो क्या, उसकी नज़र फिरी तो क्या।
जिस बन्दगी में होश हो, वो बन्दगी बन्दगी नहीं ।।

ओ३म् का सुमिरन

ओ३म् का सुमिरन किया करो, प्रभु के सहारे जिया करो।
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।

सुर दुर्लभ मानव तन तूने, बड़े भाग्य से पाया।
विषयों में फंसकर क्यों बन्दे, हीरा जन्म गंवाया।।
दुष्ट संग ना किया करो, सज्जनों से गुण लिया करो,
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसकी का लिया करो।।

पता नहीं कब रूक जाये यह चलते-चलते स्वांसा।
इक क्षण भर में खत्म होय यह जग का सभी तमासा।।
सुबह शाम रट लिया करो, याद प्रभु को किया करो,
जो दुनियां का मालिक है नाम उसी का लिया करो।।

मनुष्य मात्र से प्रेम बढ़ाना सबमें प्रभु समाया।
मिलकर रहना सब हैं अपने, कोई नहीं पराया।।
दुख ना किसी को दिया करो, द्वेष भाव ना किया करो।
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।

सच्चा सुख है प्रभु भक्ति में, बात न समझो झूठी।
वही मोक्ष पद पाते हैं जो, पीते नाम की बूटी।।
ओउम् नाम रस पिया करो, राघव भूल न किया करो,
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।

गायत्री महामाया

गायत्री महामाया तेरा ध्यान लगाया।
तेरा ध्यान लगाया, तेरा ध्यान लगाया।।

जद मैं तेरे मन्त्र उचारे, कष्ट क्लेश मिट गये सारे
मन मेरा हर्षाया, तेरा ध्यान लगाया।

जद में तेरी माला फेरी, दूर हुई मन दी मैं मेरी।
सुख सागर लहराया, तेरा ध्यान लगाया।

जद मैं तेरे अर्थ विचारे, बुद्धि ते ताले खुल गये सारे।
सब विच प्रभु नूं पाया, तेरा ध्यान लगाया।

दुःखी दिलां दे कष्ट मिटांदी, गायत्री जपया शांति आंदी।
सब अंधकार मिटाया, तेरा ध्यान लगाया।

बुद्धि मेरी नूं उज्जवल कर दो, गागर दे विच सागर भर दो।
जो मंगया सो पाया, तेरा ध्यान लगाया।

प्रातः सायं जो उसे ध्याये, मन मंदिर में उसे बिठाये।
जीवन सफल बनाया, तेरा ध्यान लगाया।।

फल मिलता है कर्म से।
कर्म बनते है विचार से।
विचार बनते हैं बुद्धि से।
बुद्धि मिलती है गायत्री से।

करो गायत्री जाप

करो गायत्री जाप, मनवा धुल जायेगा
मारो जोर से थाप फाटक खुल जायेगा।।

अमृत वेले मंदिर आओ।
धीरे धीरे कदम बढ़ाओ।
मन में करो अलाप, मनवा धुल जायेगा।।

राम श्याम ने इसको गाया।
चारों वेदों में है आया।
पढ़ कर देखों आप, मनवा धुल जायेगा।।

आनन्द स्वामी को आनन्द आया।
प्रभु आश्रित ने प्रभु को पाया।
श्वांस श्वांस से नाप, मनवा धुल जायेगा।।

१०० वर्ष तक जीना चाहो।
अमृत रस तुम पीना चाहो।
गायत्री है मां बाप, मनवा धुल जायेगा।।

आशानन्द जब कष्ट सतावे।
गायत्री मां की गोद में जावे।
करता क्यों विरलाप, मनवा धुल जायेगा।।

कीर्तनः प्रभु के दर आजा वे

तर्ज : चन्ना वे घर आजा वे.....

प्रभु के दर आजा वे।
तू बिगड़ी बना जा वे।।
मंगिया मुरादां सब मिल दिया ने।
दर ते शीश झुका जा वे।।

मन वांछित फल देने वाले।
खाली झोलियां भरने वाले।।
जो भी आते शरण तुम्हारी।
वो होते हैं किस्मत वाले।।

ये जग सारा झूठा सपना।
कौन यहाँ पर आखिर अपना।।
तुम हो दयालु हो परमेश्वर।
हम पर अपनी कृपा रखना।।

बादल क्यों फिरते हो घर-घर।
एक प्रभु के आ जाओ दर।।
मन कंचन हो जाए जिससे।
पीलो ज्ञान अमृत की गागर।।

रचना : भानु सिंह बादल
कंचन कुमार

गायत्री मन्त्रार्थ

ओ३म् अकार उकार मकार।
तीनों मात्रों का एक ओंकार।

परमेश्वर का उत्तम नाम, जानते हैं इसे खासो आम।
अर्थ विचार करे जो जाप, क्यों न कट जायें उनके ताप।।

भू हे प्राणों का भी प्राण, भुवः सब दुःख छुड़ावनहार।
स्वः है पाप सदा सुखरूप, धर्मियों को करे मुक्तस्वरूप।

तत् उस ईश्वर से हम लोग, भक्ति भाव से करें संयोग।
सवितुर् जग का सृजनहार, रविशशि हैं जिसका चमत्कार।।

वरेण्यम् ग्रहण करने के लायक, भर्गः शुद्ध पवित्र सहायक।
देवस्य ज्योतिर्मय और ज्ञान, धीमहि उसका धरें हम ध्यान।

धियः बुद्धियों के अवगुण हरे, यो पूर्वोक्त हमारी सहायता करे।
प्रचोदयात का प्रेरणा अर्थ, शुभ गुणों की देवे सामर्थ्य।।

प्राप्त करें हम धर्म और अर्थ, बीत न जावे जन्म व्यर्थ।
तन मन धन से करें उपकार, गायत्री का अर्थ विचार।।

अमीचन्द सन्ध्या कर दो काल।
सत्य धर्म के नियम पाल।।

गायत्री महिमा

वरदायिनी हे गायत्री माता।
गुणगान तेरे संसार गाता।।

रक्षा करे प्रभु प्राणों से प्यारा।
दुःख दर्द नाशक दुनिया से न्यारा।
मानव प्रभु से ही सुख चैन पाता।।

सारे जगत को जिस ने रचाया।
है वरण के योग्य तू ने बताया।
आवागमन का फिकर छूट जाता।।

उस देव का शुद्धतम तेज धारें।
जीवन की हर एक नस में उतारें।
ऐसी कृपा आप कर दे विधाता।।

ईश्वर हमें नेक रस्ता दिखावे।
सन्मार्ग पर बुद्धियों को चलावे।
सद्ज्ञान देकर तमस् को मिटाता।।

आयु प्रजा प्राण पशुधन दिलावे।
कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चस् को पावे।
मां आपकी शुभ शरण में जो आता।।

तू पावनी सर्व कल्याणकारी।
पावन करे सब को महिमा तुम्हारी।
हम को पथिक नाम तेरा सुहाता।।

वो एक है

काबिरा कुंआ एक है पनिहारी अनेक।
बर्तन सबके न्यानरे हैं पानी सबमें एक।।

एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूल ही सींचिये, फूलहि फलहिं अघाय।।

सब आए इस एक में, डाल पात फल फूल।
रहिमन पीछे क्या रहा, गह पकड़ी जब मूल।।

जै वो एकै जाणियां, तो जाण्या सब जाण।
जै वो एक न जाणिया, तो सब ही जाण अजान।।

कबीरा एक न जाणिया, तो बहु जाण्या क्या होई।
एक तै ही सब होत है, सबहो एक न होई।।

प्रभु नाम एक अंक है सब साधन है शून्य।
अंक लगे दस गुण्य है अंक बिना सब शून्य।।

वैराग्य दोहे

माटी कहे कुम्हार सूं तू क्या रोंदे मोय।
एक दिन ऐसा आएगा मैं रोंदूंगी तोय।।

आए है सो जाऐंगे राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ चले एक बंधे जंजीर।।

मेरा मुझमे कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागे है मोर।।

पत्ता टूटा डाली से ले गई पवन उड़ाय।
अबके बिछड़े कब मिले दूर पड़ेंगे जाय।।

तुम्हारी चाही में प्रभो है मेरा कल्याण।
मेरी चाही मत करों मैं मूरख नादान।।

चलती चक्की देख के दिया कबिरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।

कबिरा जब पैदा हुए जग हंसा तु रोए।
ऐसी करनी कर चलो तू हंसे जग रोए।।

ओ३म् ओ३म् बोल मनवा

ओ३म् ओ३म् बोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल।
जगह-जगह न डोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल।।

जीवन सागर से तरने को।
जन्म मरण के दुख हरने को।
नाम बड़ा अनमोल-मनवा ओ३म् ओ३म् बोल।।

नाम ओउम् का है दुख भंजन।
इस को जपते आप निरन्जन।
मन की कुंडी खोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल।।

प्रीतम पाने जग में आया।
हीरे जैसी तेरी काया।
मिट्टी में न रोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल।।

नाम ओउम् का है सुख कारी।
विघ्न विनाशक संकट हारी।
इसका मीठा बोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल।।

ओ३म है परम् पिता

ओ३म् है परम् पिता का नाम।
भजलो प्यारे ओ३म् का नाम।।

ओ३म् का नाम है अति पावन,
ओ३म् का मन्त्र है अति मन भावन।
ओ३म् का सुमिरन है अनमोल,
ऋषि मुनियों ने देखा तोल।।

ओ३म् है वेदों का वरदान,
ओ३म् का नाद है ब्रह्म समान।
ओ३म् ही जीवन ओ३म् है प्राण,
ओ३म् को सुमिरो आठों याम।।

ओ३म् कहो या कहो ओंकार,
ओ३म् की महिमा अपरम्पार।
ओ३म् कहो तुम बारम्बार,
ओ३म् ही करते भव से पार।।

न तो देर है

न तो देर है न अंधेर है।
तेरे कर्मों का सारा फेर है।।

नेकी की मन में जोत जगा ले,
और जीवन के करले उजाले।
लाखों तीरथ जाके नहा ले,
मिटते नहीं कभी करमों के काले।।

नेकी जगत में जो भी करेगा,
सर पे तेरे वो हाथ रखेगा।
मुख से कुछ भी न कहना पड़ेगा,
बिन मांगे ही वो सब कुछ देगा।।

अपना कर्म ही सुख देता है,
अपना कर्म ही दुख देता है।
कर्म बना जीवन देता है,
कर्म मिटा जीवन देता है।।

रचना : विजय आनन्द

चाँद बादल में छुपा था मुझे मालूम न था,
भूल कर मोह किया था मुझे मालूम न था।
मैंने सोचा था कि दुनिया में रहूंगा कायम,
कब्र मेरा वतन था मुझे मालूम न था।।

तेरो नाम

तेरो नाम सुख की खान।
किरपा कीजो कृपा निधान।।

जो जन जपते तेरो नाम।
उन पर तेरी किरपा महान।।
जाने जाँ मेरे भगवान।
किरपा कीजो कृपा निधान।।

सारे जग के पालनहार।
बिगड़ी किस्मत तू ही संवार।।
खेवन हार मेरे भगवान।
कि।रपा कीजो किरपा निधान।।

तेरे नाम में शक्ति भारी।
तूने तारी सृष्टि सारी।।
तारनहार मेरे भगवान।
किरपा कीजो किरपा निधान।।

तू मेरा स्वामी, दास मैं तेरा।
तेरे बिन कोई न मेरा।।
बख्शो-बख्शो मेरे भगवान।
किरपा कीजो किरपा निधान।।

प्रभु तेरी शरण में

प्रभु तेरी शरण में हम सब आये।
शरण में आए प्रभु शीश झुगाये।।

तेरे ख़ज़ाने भरे मेरे दाता।
क्या मांगे हम तुझसे विधाता।
बिन मांगे ही सब बरसाए।।

फूल मिले या मिले चाहे कांटे।
तेरा प्रसाद है सब तूने बांटे।
सुख दुख हो सब हंस के बिताए।।

माटी या कंचन सब स्वीकारूँ।
तू बिसराए मुझे मैं न बिसारूँ।
तेरे चरणों से रहूँ प्रीत लगाए।।

रचना : कंचन कुमार

दिन जिन्दगी है चार कुछ काम करके जा,
इन्सानियत का ना न बदनाम करके जा।
किसी भूखे को रोटी दे समझ उसको रिझायेगा,
किसी का छीन न खाना बल्कि दान करके जा।।

मेरे प्राणों के आधार

मेरा छोटा सा संसार प्रभु आ जाओ एक बार।
मेरे प्राणों के आधार प्रभु आ जाओ एक बार।।

मैंने बहुत गुनाह जीवन में किए।
अमृत छोड़े और ज़हर पिए।
मेरी नाव पड़ी मंझधार।।

मैं जनम-जनम से तेरी हूं।
तू मेरा है मैं तेरी हूँ।
अब दर्शन दो एक बार।।

विषयों में उमर गंवाई है।
अब याद प्रभु तेरी आई है।
मुझे भव से कर दो पार।।

तेरी याद में आठों याम रहे।
मेरा तेरी शरण में ध्यान रहे।
तेरी कृपा से है संसार।।

सत्संग की नगरी में आता है कोई-कोई।
रोती तो सारी दुनियां है गाता है कोई-कोई।।
रंगरलियों की गलियों में तो जहान घूमता है।
पर प्रेम की गली में आता है कोई-कोई।।

तुम बेसहारा हो तो

फिल्म : अनुरोध मन्नाडे

तुम बेसहारा हो तो किसी कां सहारा बनो।
तुमको अपने आप ही सहारा मिल जाएगा।।
कश्ती कोई डुबती पहुँचा दो किनारे पे।
तुमको अपने आप ही किनारा मिल जाएगा।।

हंसकर जिन्दा रहना पड़ता है।
अपना सुख दुख सहना पड़ता है।।
रस्ता चाहे कितना लम्बा हो।
दरिया को तो बहना पड़ता है।।

तुम हो एक अकेले तो रूक मत जाओ चलो निंकलो,
रस्ते में कोई साथी, तुम्हारा मिल जाएगा ।।

न बस्ती में न वीरानों में।
न खेतों में न खलिहानों में।।
न मिलता है प्यार बाजारों में।
न बिकता है चैन दुकानों में।।

ढूंढ रहे हो तुम जिसको उसको बाहर मत ढूंढो।
मन के अन्दर ढूंढों प्रीतम प्यारा मिल जाएगा।।

जीवन तो एक जैसा होता है।
कोई हंसता कोई रोता है।।
सब्र से जीना आसांन होता है।
कुफ्र से जीना मुश्किल होता है।।

थोड़े फूल हैं कांटे हैं जो तकदीर ने बांटे हैं।
हमको इनमे से हिस्सा हमारा मिल जाएगा।।

फिल्म : अनुरोध मन्नाडे

ओ३म् नाम मन मेरे

तर्ज : परदेसी-परदेसी जाना नहीं

ओ३म् नाम ओ३म् नाम मन मेरे।
गाले ओ३म् नाम जप ले ओ३म् नाम।।
ओ३म् नाम जग में सबसे है प्यारा।
सुख दुख में वो ही है सबका प्यारा।।

तेरे ही जलवे रंगीन नजारों में।
खुश्बू तेरी हवा में चमके सितारों में।।
तू फूलों में कलियों और बहारो में।
तू दरिया की लहरों में तू किनारों में।।
कण कण में भगवन वास तुम्हारा।
तेरा नाम जग में सबसे है प्यारा।।

इस जग का करता तू ही आधार तू ही।
माता पिता बन्धु सबका भरता तू ही।।
जग को देने वाला एक दातार तू ही।
सबका मालिक तू ही पालनहार तू ही।।
तेरा नाम जग में सबसे है प्यारा।
सुख दुख में वो ही है सबका सहारा।।

कोई शब्द कहे कोई कहे नूर है तू।
कहे कंचन पर कुछ न कुछ जरूर है तू।।
बसा सभी के दिल में फिर भी दूर है तू।
कोई न पहचाने पर मशहूर है तू।।
तेरा नाम जग में सबसे है प्यारा।
सुख दुख में वो ही है सबका सहारा।।

रचना : कंचन कुमार

शब्दों में भाव सजे

शब्दों में भाव सजे, सुर में संगीत बजे।
होठों पे भक्ति गीत सजा दो प्रभु जी मेरे।।
भावों की अंजलि से, मन के गंगाजल से।
अभिषेक करूँ मुझे रीत सीखा दो प्रभु जी मेरे।।

तेरी कृपा से प्राणी है जगती पल।
संकट से करता तू ही उद्धार।।
अपनी भक्ति की शक्ति दे मुझको।
ध्यान करूँ निशदिन तेरा करतार।।
कैसे गुणगान करूँ सिमरन तेरा ध्यान करूँ।
इस हृदय में अपनी जोत जगा दो प्रभु जी मेरे।।

तुम करूणा के सागर हो करतार।
निशदिन मैं अपनाऊँ तेरा प्यार।।
सकल चराचर जीवों के स्वामी।
तुम ही पार लगाते हो मंझधार।।
जीवन की राहो पर, मेरे पाँव थके न कभी।
मेरे मन में ऐसी प्रीत जगा दो प्रभु जी मेरे।।

ये दुनिया एक सराय फानी देखी,
हर चीज़ यहां पर आनी जानी देखी।
जो आके न जाये वो बुढ़ापा देखा,
जो जा के न आये वो जवानी देखी।।

इस जग दे विच

इस जग दे विच सब परदेसी
तू होंवे या मैं होवां
कल किसी ने रोणां मैंनू
आज किसी नूँ मैं रोवां

किसको अपना कहता फिरता
कौन किसी का साथी है
मरते दम इस आँख को देख ले
वो भी है कि फिर जाती है
मिट्टी विच सबने मिल जाणां तू होंवे या मैं होंवा

दुनिया एक सराय देखी
हर शय आनी जानी है
जो आके न जाय बुढ़ापा
जाके न आए जवानी है
कहे कंचन सबने चले जाणां तू होवे या मैं होवा

रचना : कंचन कुमार

वे जोगिया जग है एक सराए

वे जोगिया जग है एक सराए।
वे जोगिया जग है एक सराए।

कौन रहा है कौन रहेगा,
एक आए एक जाए।
अपनों का ये मेल है झूठा,
हंस अकेला जाए रे।।

जिसका जितना दाना पानी,
उतना ही वो पाए।
बूंद न सिमटे सागर में कभी,
सागर बूंद समाए रे।।

सुख के उजियारे के पीछे,
दुख के हैं साए।
जान के भी अन्जान बने हैं,
कौन किसे समझाए रे।।

सिर्फ बिजली ही गिरी हो ये जरूरी तो नहीं।
आग गुलशन में बहारें भी लगा सकती हैं।।
किसी आगोश में हो ये सर जरूरी तो नहीं।
नींद तो दर्द के बिस्तर पे भी आ सकती है।।

भजन बिना नर बावरे

भजन बिना नर बाबरे तूने हीरा जन गंवाया।
कभी न आया प्रभु की शरण में न ही प्रभु गुण गाया।।

ये संसार हाट बनिये की, सब जग सौदा लाया।
चातुर माल चौगुना कीन्हों, मूरख मूल गंवाया।।

ये संसार फूल सेमल का, सुआ देख लुभाया।
मारी कोच रूई निकसाई सिर धुन-धुन पछताया।।

ये संसार माया का लोभी ममता महल बनाया।
कहता कबीर सुनो भई साधो हाथ कुछ न ही आया।।

दिलो दिमाग पे छा गई रोटी।
हाय किस मोड़ पर आ गई रोटी।।
आदमी तो उसे खा नहीं सका।
आदमी को ही खा गई रोटी।।

जिसको हर चीज में भगवान नजर आता है।
मुझे वो आदमी इंसान नजर आता है।।

परदेसी हँसा

परदेसी हंसा जिन्दड़ी नू रोग न ला।
झूठे जग दी प्रीत है झूठी,
किसे नाल करी न वफा।।

इस जग दे विच कोई न तेरा।
क्यों करदा है मेरा-मेरा।
इस दिल विच रब नू बसा।।

मानुष चोला सुन्दर मिलया।
माया दे विच रब नूं भुलया।
इस दम दा कोई न विसा।।

जे तू अन्दर झांति मारे।
सत चित आनन्द दर्शन पावे।
जीवन सफल बना।।

तेरे अन्दर प्रीतम प्यारा।
जगमग जोत होए उजियारा।
अन्दर सुरति जगा।।

कोई आए-कोई जाए

कोई आये, कोई जाये ये तरीका क्या है।
कुछ समझ में नहीं आता ये माज़रा क्या है।।

आने वाला तो चला जाता है वापिस लेकिन।
जाने वाला नहीं आता, ये तमाशा क्या है।।

तेरे ऐहबाब तेरे दोस्त तेरे घरवाले।
तुझे मिट्टी में मिला देंगे समझता क्या।।

दम निकलते ही लगा बोझ सभी को मालूम।
जल्दी ले जाओ अब इस ढेर में रक्खा ही क्या है।।

दफन के बाद ये तसल्ली भी दिये जाते हैं।
रफता-रफता सभी आ जायेंगे डरता क्या है।।

दो घड़ी रोंयेगे ऐहबाब तेरे ऐ "कामिल"।
फिर हमेशा को भुला देंगे समझता क्या है।।

शोहरत की बुलन्दी।
पल भर का तमाशा है।
जिस शाख पर बैठे हो,
वो टूट भी सकती है।।

दुनिया फानी

तर्ज : राजा जानी ओए ओए राजा जानी

दुनिया फानी है ये दुनिया फानी।
एक दिन सबको जाना होगा, क्या राजा क्या रानी।।

ये दुनिया है एक सराय।
कोई आए तो कोई जाए।
रहना होगा तब तक यहां पर, जब तक दाना पानी।।

इस जग की झूठी माया।
यहां कोई न रहने पाया।
रावण कंस दुर्योधन जैसे, बड़े-बड़े अभिमानी।।

आयु पल-पल बीत रही है।
तेरे सिर पर मौत खड़ी है।
कोई चीज़ नहीं पुख्ता यहाँ, हर शय आनी जानी।।

जो किसी का ऋणी नहीं है,
जो परदेस में नहीं रहता,
जो यौवनावस्था में दरिद्र नहीं है,
जो दूसरे के घर में नही रहता है,
हे जलचर यक्ष दुनिया में वही सुखी है।

किसने दीप जलाया

किसने दीप जलाया,
किसने दीप जलाया।
दीप जलाकर किया उजाला,
अपना आप छिपाया।।

लहर रहा आंखां के आगे,
सागर ये सुषमा का।
किसने रूप दिया जल थल को,
किसने व्योम सजाया।।

स्त्रोत कहाँ है इस सागर का,
है कितनी गहराई।
सागर ने क्यों अपने भीतर,
अपना स्त्रोत छिपाया।।

है वह कौन कहाँ का वासी,
कैसे कोई बताये।
नहीं किसी ने देखा उसको,
सन्त जनों ने गाया।।

-केन उपनिषद् के आधार पर

एक से फूल गुलिस्ताँ में खिला करते हैं
मगर हर फूल की तकदीर जुदा होती है।।

समय का पहिया

समय का पहिया चलता है,
समय का पहिया चलता है।
इस पहिये के साथ सभी का,
भाग्य बदलता है।।

करे नौकरी मरघट की वो हरिश्चन्द्र सा दानी।
राजकुंवर की लाश को लेकर आई उसकी रानी।
उस राजा का पुत्र भी देखो, बिन टैक्स न जलता है।।

अवधपुरी के रहने वाले दण्डक वन में आए।
चौदह वर्ष सहे दुख वन में फिर भी हैं हरषाए।
माता पिता की आज्ञा से ही राज बदलता है।।

गाण्डीव का धारी वो अर्जुन, भीम गदा का धारी।
भरी सभा में रोती है उन पाँचों की नारी।
देख रहे हैं पाँचों पाण्डव, जोर न चलता है।।

दूसरों को जिन्दगी दे तब मज़ा जीने में है।
ग़मज़दों को खुशी दे तब मज़ा जीने में है।
दोस्तों को दोस्त कहकर तो सब बुलाते हैं।
दुश्मनों को दोस्ती दे तब मज़ा जीने में है।।

अगर तू चाहता है

अगर तू चाहता है कल्याण, तो मेरी शरण में आ-२।
भटक मत दर-दर बीच जहान, तू मेरी शरण में आ-२।।

मोह ममता में पड़कर तूने लाखों कष्ट उठाए-२।
जीवन सारा व्यर्थ गंवाया दर-दर ठोकर खाए।
जो बीता सो बीता नादान, इसे न व्यर्थ गंवा।।

जिनसे तू ने प्रेम बढ़ाया देंगे एक दिन धोखा।
सब तज, देंगे एक दिन तुझको है ये खेल अनोखा।
ये रिश्ते नाते कुछ दिन जान, चित्त तू न भरमा।।

मानव जीवन पाकर भी तू करता रहा मनमानी।
कभी न मेरा सुमिरन किन्हा करता रहा नादानी।
अब भी कर ले सुमिरन ध्यान जो चाहे तू कृपा।।

दस प्रकार के लोग धर्म को नही मानते
नशे में मतवाला, पागल, जो थका हो,
जो क्रोधी हो, जो भूखा हो, जल्दबाज,
जो लोभी, जो कामी तथा जो भयभीत हो।

तेरी उम्र गुज़रती जाए

तेरी उम्र गुजरती जाए, भजन कर ले ओ३म का।
भज ओ३म नाम सुख चाहे, भजन कर ले ओ३म का।।

नाम ओ३म का सबसे प्यारा, सब कष्टों से तारनहारा।
इसी नाम ने तारे अनेको, इसे जप तू भीतर जाए।।
भजन कर के ओ३म का ....

भक्त जपे ये नाम निरन्तर, गाते आठों याम निरन्तर।
मन में जला ले ज्योति नाम की, तेरा जनम सफल हो जाए।।
भजन कर के ओ३म का ....

भजन बिना बीते दिन तेरे, दुख उठाए तूने घनेरे।
जीवन ये अनमोल मिला है, तू ये बार-बार नहीं पाए।।
भजन कर के ओ३म का ....

दरिद्रता, रोग, दुख, बन्धन, व्यसन ये सब दान न देने के फलस्वरूप प्राप्त होते हैं। इनसे बचने के लिए दान करना चाहिए।

हे परमेश्वर

हे परमेश्वर दया करो।
सबके सारे कष्ट हरो।।

सभी जगह दरबार तेरा, खुला हुआ भण्डार तेरा।
खाली दामन सबके भरो, सबके सारे कष्ट हरो।।

हम सब तेरी शरण में आए, हाथ जोड़कर शीश झुकाए।
निज करुणा का हाथ धरो, सबके सारे कष्ट हरो।।

बैठे है हम आस लगा के, मन मन्दिर को साफ बना के।
हर मन मन्दिर में विचरो, सबके सारे कष्ट हरो।।

जग के पालन हार तुम्ही हो, सबके प्राणा धार तुम्ही हो।
तन मन जीवन में उतरो, सबके सारे कष्ट हरो।।

जब विषयों की लू चलती है, तब अन्दर की भू जलती है।
प्यार के बादल बन के झरो, सबके सारे कष्ट हरो।।

अब तो मन की चाह यही, भरा हुआ उत्साह यही।
इक पल भी तुम न बिसरो, सबके सारे कष्ट हरो।।

यारों सफर का कुछ सामान तो करो।
जाना कहां है तुमको, कुछ ध्यान तो करो।।

दया करो भगवान

दया करो भगवान हम पर दया करो।
हे प्रभु कृपा निधान हम पर दया करो।।

हम सब बालक शरण तुम्हारी।
सुन लो भगवन विनय हमारी।
दो बुद्धि का दान-हम पर दया करो।।

शुभ कर्मों में मन को लगायें।
दुष्कर्मों से चित्त हटाये।
हो सबका कल्याण - हम पर दया करो।।

तेरी भक्ति में तन मन हो।
शुद्ध सरल सबका जीवन हो।
जीवन बने महान हम पर दया करो।।

राम कृष्ण की संस्कृति पाले।
सेवा अपना धर्म बना ले।
बने वीर हनुमान-हम पर दया करो।।

वीर बने हम श्रद्धानन्द से।
दयाशील हो दयानन्द से।
दे घातक को दान-हम पर दया करो।।

सकल विश्व को आर्य बनावे।
पावन वैदिक ज्योति जगावे।
करें वेद का गान - हम पर दया करो।।

एक ओ३म् नाम में है

एक ओ३म् नाम में है सदगुण सारे।
ओ३म् साधना कष्ट निवारे, भक्ति मार्ग संवारे।।

भोर गए जब अमृत बेला ओ३म् का हो उच्चारण।
आत्मा परमात्मा में समाए प्रभु का हो बस सुमिरन।।
मन सुख पाए ....

सांझ ढले मन भारी हो, छाई उदासी कारी हो।
ऐसे पल में ध्यान लगा ले सुख छा जाए आए उजाले।।
आशा एक निराली हो ....

कोई पाप या लोभ सताए भूल जा सब ओ३म् जप ले।
दुष्कर्मों का संग जो आए, सत्संगी का संग ले।
चैन मिलेगा पल पल मन में ओ३म् सिमर ले।।

जलती अग्नि से सोने की पहचान होती है।
व्यवहार से साधू की पहचान होती है।
सत्पुरुष की पहचान सदाचार से,
भय से शूर की पहचान होती है।
धीर की गरीबी में तथा
विपत्ती में मित्र की पहचान होती है।

मेरा नाथ तू है

मेरा नाथ तू है मेरा नाथ तू है।
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।।

चला जा रहा हूँ, मैं राह पे तुम्हारी।
राहों मे ंआए जो तूफान भारी।
थामे हुए जो मेरा हाथ तू है।।

मेरा इष्ट तू है मैं तेरा पुजारी।
तेरा खेल मैं हूं तू मेरा खिलाड़ी।
मेरी जिन्दगी की हर एक बात तू है।।

तेरा दास हूँ, मैं तेरे गीत गाऊँ।
तुझे भूल के भी न कभी भूल पाऊँ।
तू ही दीन बन्धु पितु मात तू है।।

भजन बढ़ाना चाहिये तथा, भोजन कम करना चाहिए। जीने की कला है - कम खाओ और गम खाओ।

भगवान मेरी नैया

भगवान मेरी नैया-२, उस पार लगा देना।
अब तो निभाया है-२, आगे भी निभा देना।।

दल बन के साथ माया घेरे जो मुझको आके।
तुम देखते न रहना, झट आके बचा लेना।।

सम्भव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ।
पर नाथ दया करे, मुझको न भुला देना।।

तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक।
ये बात अगर सच है सच करके दिखा देना।।

यारों सफर का कुछ सरो सामान तो करो।
जाना कहाँ है तुमको कुछ ध्यान तो करो।।

जितना कम समान रहेगा।
सफर उतना आसान रहेगा।।

एक मन्त्र जपो रे

एक मन्त्र जपो रे मन
ओ३म् ओ३म् ओ३म्
ओ३म् नाम ही जीवन
ओ३म् ओ३म् ओ३म्
ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म्

दुख में ओ३म् सुख में ओ३म्।
धूप में भी छाँव ओ३म्।।
दूर ओ३म् पास ओ३म्।
आस ओ३म् प्यास ओ३म्।।
ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म्

स्वर है ओ३म् गीत ओ३म्।
प्रेम ओ३म् मीत ओ३म्।।
हर निर्बल का बल है ओ३म्।
ज्ञान ओ३म्, प्रीत ओ३म्।।
ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म्

रचना : कंचन कुमार

तुम मेरे जीवन के धन

तुम मेरे जीवन के धन हो और प्राणाधार हो।
एक तुम दाता दयालु सबके पालन हार हो।।

जागते सोते कभी भी मैं तुम्हे भूलूँ नही।
भेष दो राजा का मुझको या गले मत हार हो।।

भर रहा धन धान से ही सबके ही परिवार को।
देके तुम थकते नहीं हो ऐसी तुम सरकार हो।।

जप रहे तेरा नाम पंछी, गीत गाती है पवन।
रंग रहे रंगों से जग को, अजब रचनाकार हो।।

जिन्दगी की नाव मैंने, सौंप दी, प्रभु आपको।
तुम डुबाओ या बचाओ, मेरे खेवन हार हो।।

दंगा उपद्रव होने पर,
शत्रु द्वारा अचानक आक्रमण होने पर,
भयंकर दुर्भिक्ष में, अकाल में,
दुष्टों का संग होने पर,
जो भागता है वही बचता है।

जिस भजन में

जिस भजन में ओ३म् का नाम न हो
उस भजन को गाना न चाहिए

चाहे बेटा कितना प्यारा हो उसे, सिर पे चढ़ाना न चाहिए।
चाहे बेटी कितनी लाड़ली हो, घर-घर में घुमाना न चाहिए।।

जिस माँ ने हमको जन्म दिया, दिल उसका दुखाना न चाहिए।
जिस पिता ने हमको पाला है, उसे कभी सताना न चाहिए।।

चाहे दोस्त कितना प्यारा हो, उसे भेद बताना न चाहिए।
चाहे भैया कितना बैरी हो उससे राज छुपाना न चाहिए।।

चाहे कितनी अमीरी आ जाए, अभिमान दिखाना न चाहिए।
चाहे कितनी गरीबी आ जाए, दाता को भुलाना न चाहिए।।

पुरुषार्थी के पास दरिद्रता नहीं आती।
जप करने वाले के पास पाप नही आता।।
मौन रहने वाले की कभी लड़ाई नहीं होती।
जागने वाले को कभी भय नहीं रहता।।

पीकर प्याला

पीकर प्याला ओ३म् नाम का,
बन मतवाला रे तू बन बतवाला रे।

ओ३म् नाम का है ये प्याला।
सदा शांति सुख देने वाला।
चारों वेदों ने गाया ये मन्त्र निराला रे।।

ओ३म् नाम की अमृत धारा।
पी प्रह्लाद बना प्रभु प्यारा।
डरा न पाए उसे तीर तलवारे भाला रे।।

दयानन्द ने पिया ये प्याला।
किया जगत पे ज्ञान उजाला।
प्यारी भारत माता का सब संकट टाला रे।।

'अभय' अमर पद निश्चय पाता।
बाधाओं से नहीं घबराता।
कर्मवीर बन कर्म क्षेत्र से टले न टाला रे।।

**मैं तो तेरे दीप का परवाना हूँ।
मैं तो तेरे तेज का दीवाना हूँ।
तू है भण्डार मधुर रागों का
मैं तो एक अर्थहीन गाना हूँ।**

मेरे मालिका

मेरे मालिका मैं जपूं तेरा नाम।
मेरे साहिबा मैं जपूं तेरा नाम।।
जपूं सुबहो शाम, आठों याम।
मेरे दातेया मैं जपूं तेरा नाम।।

करूणा के सागर दया के हो दाता।
तुम्ही सबके तारन हारे सबके विधाता।
शरण लगा, जपूँ तेरा नाम।।

तेरा हो के आ गया रख चाहे मार दे।
बीच भंवर में रख चाहे मुझे तार दे।
कर किरपा, जपूँ तेरा नाम।।

मेरा तो जग में सहारा तेरा नाम है।
दुख दरिया दा किनारा तेरा नाम है।
पार लगा, जपूँ तेरा नाम।।

रचना-कंचन कुमार

करो मन ओ३म् का

करो मन ओ३म् का सिमरन, अगर मुक्ति को पाना है।
अरे बाबा ये वो घर है जो एक दिन छोड़ जाना है।।

न पाँवों से गया सत्संग, किया न दान हाथों से।
जुबाँ से न किया सुमिरन, तेरा किस जाँ ठिकाना है।।

अवस्था जा रही तेरी, बचा ले ओ३म् सिमरन से।
तेरे कर्मो का सब परिचय, तेरे दर पेश आना है।।

जो रिश्तेदार हैं तेरे जिन्हो से है तेरी उल्फत।
उन्होंने रख के अग्नि में तुझे एक दिन जलाना है।।

तेरे दम में जो दम आता तुझे खुद ही नजर आता।
बना ले खर्च ए बन्दे वहाँ जो पहुंच खाना है।।

दिन में ऐसा काम करो कि रात्री में सुखपूर्वक नींद आए। आठ माह में ऐसा काम करो कि वर्षा ऋतु में सुखपूर्वक रह सको। जवानी में ऐसा काम करो कि बुढ़ापा ठीक से बीत सके। लोक में ऐसा काम करो कि परलोक में सुख से रह सको।

हर हाल में दाता का

हर हाल में दाता का जो शुकर मनाते है।
उनके घर खुशियों की होती बरसाते हैं।।

है याद जिन्हे दाता हर दात मिले उनको।
बिन मांगे खुशियों की सौगात मिले उनको।
सुख पाकर भी सुख में, नहीं मन भरमाते हैं।।

ज्यादा में शुकर कीजे थोड़े में सबर कीजे।
फिर उनकी रहमत को दामन में भर लीजे।
ये बातें जो माने वो ही सुख पाते हैं।।

हर सुख देने वाले दाता को न भूलें।
सत्संगत खुशियों के झूले में वो झूले।
आदर्श जो वेदों का इस मन में बसाते हैं।।

बिना अग्नि के जलाते हैं–
पत्नी का विरह, अपनों से अनादर।
बचा हुआ कर्ज, दुष्ट राजा की सेवा।
दरिद्रता तथा मूर्खों की सभा।
ये सब बिना अग्नि के मनुष्य को जलाते हैं।

आओ विचार करें

आओ मिलके विचार करें।
पहले हम आप सुधरे, फिर ओरों का सुधार करें।।

बचें पाप की कमाई से।
सदा शुभ कर्म करें, रहे दूर बुराई से।।

यहाँ सब रह जायेगा।
दिया हुआ जो हाथ से, वही साथ निभायेगा।।

है सभी मेहमान यहाँ।
करके भलाई जो गये, है उनके निशान यहाँ।।

हम भी ऐसे काम करे।
जब तक दुनिया रहे, सूरज की तरह चमके।।

भगवान को याद करें।
जीवन कीमती है, न इसे बरबाद करें।।

यह कामना सेवक की।
प्रभु हमें दो सुमति, यह भावना है सबकी ।।

ओ३म् नाम भज लो

तर्ज : कभी राम बनके कभी ....

ओ३म् नाम भज ले, सुबह शाम भज ले,
मन मेरे अरे ओ मन मेरे।।

निज ओ३म् नाम ईश्वर का,
वो दाता जगती भर का।
उस पे विश्वास कर उसकी ही आस कर,
मन मेरे अरे ओ मन मेरे।।

वो सबका पालन हारा,
जग में उसका उजियारा।
पिता मात वही सखा भ्रात वही,
मन मेरे अरे ओ मन मेरे।।

बिन हाथों जगत रचाया,
कण-कण में वो ही समाया।।
गाते ज्ञानी गुणी, संत योगी मुनि,
मन मेरे अरे ओ मन मेरे।।

जो चाहे तू, सुख पाना,
उस प्यारे को न भुलाना।
उससे प्रीत लगा, गीत उसके ही गा,
मन मेरे अरे ओ मन मेरे।।

गायत्री महिमा दोहे

गायत्री महिमा कहें सुनो सदा मन लाय।
जीवन को सफली करो, वर माता का पाय।।

गायत्री की गोद में, माँ जैसा है प्यार।
प्रातः सायं बैठिये, मोह अभिमान को मार।।

गायत्री देगी सदा, सरे बन्धन खोल।
ये जीवन अनमोल है, बोल इसी के बोल।।

गायत्री माता तुम्हें, सिमरे बारम्बार।
अपना भक्त बनाय के, नाव उतारो पार।।

गायत्री के भक्त में, दया प्रेम का वास।
आगे ही बढता रहे, रहे नही उदास।।

माँ तेरे ही जाप से, मिले प्रभु का प्यार।
जीवन में शक्ति मिले, खुले स्वर्ग का द्वार।।

गायत्री का ध्यान जो, करे सुबह और शाम।
प्रतिदिन के अभ्यास से, मिले उसी का धाम।।

बुद्धि की वृद्धि करो, शक्ति तुम्हारे पास।
हे माँ दो शक्ति हमें, बने तुम्हारे दास।।

गायत्री के जाप से मिले उसी का धाम।
प्रतिदिन प्रातःकाल जो भक्ति करे निष्काम।।

रचना : डॉ० योगेन्द्र शास्त्री

नहीं चाहिये

तर्ज : मुझे प्यार की जिंदगी देने वाले

नही चाहिए दिल दुखाना, किसी का।
सदा न रहा है, सदा न रहेगा जमाना किसी का।।

आएगा बुलावा तो जाना पड़ेगा।
सर तुझको आखिर झुकाना पड़ेगा।
वहाँ न चलेगा बहाना किसी का।।

शोहरत तुम्हारी बह जाएगी ये।
दौलत तुम्हारी रह जाएगी ये।
नहीं साथ जाता खजाना किसी का।।

सुख और दुख में सबर करना सीखे।
अपनी कमाई में गुजर करना सीखे।
न सीखे कभी हक दबाना किसी का।।

एक दूसरे की न पगड़ी उछाले।
खुद की कमी को सदा हम निकाले।
सुनाए न हरदम फसाना किसी का।।

बेटा कहे बाप से तू क्या डाँटे मोय।
एक दिन ऐसा आयेगा, मैं डाटूँगा तोय।।

प्रभु जी जरा

तर्ज : मन रे काहे न धीर धरे

प्रभु जी जरा उपकार करो।
घोर अंधेरा मन में छाया-रौशन राह करो।।
प्रभु जी....

आशाओं के जीवन में प्रभु, हमने दीप जलाये।
क्या पाना था क्या है पाया, हमने होश गंवाये।
सब संताप हरो।। प्रभु जी....

जनम-जनम के साथी हो प्रभु, हम पहचान न पाए।
तुमने हमको लाख जताया, फिर भी जान न पाए।
दुर्गुण दूर करो।। प्रभु जी....

जो सीखो किसी से सिखाते चलो।
दीए से दीए को जलाते चलो।।

हम योग्य बनें, प्रभु की कृपा अपने आप बरसती है।
समुद्र किसी के पास जल मांगने नही जाता।
सभी नदियाँ चलके समन्दर तक स्वयं जाती है।

बहे सत्संग की गंगा

बहे सत्संग की गंगा, अरे मन चल नहा आए।
बुझी ज्योति जो जीवन की, उसे फिर से जगा आए।।

यही बेला है कर ले पान प्यारे ज्ञान अमृत का।
लगा है धर्म का मेला, अरे मन चल दिखा लाएँ।।

तू ही योद्ध तू ही योगी तू ही है रूप संतो का।
जिसे तू भूल बैठा है उसे फिर से दिखा लाए।।

भटकता फिर रहा दर-दर, धराया नाम क्यों चंचल।
करे विश्वास जग तेरा तुझे ऐसा बना लांए।।

मूर्ख शिष्य को पढ़ाने से,
दुष्ट स्त्री का भरण पोषण करने से,
दुखीजनों से व्यवहार करने से,
बुद्धिमान मनुष्य भी दुख उठाता है।

कभी प्यासे को

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं।
बाद आंसु बहाने से क्या फायदा।।

मैं तो मंदिर गया पूजा आरती की।
पूजा करते हुए ये ख्याल आ गया।।
कभी माता पिता की सेवा की ही नहीं।
सिर्फ पूजा के करने से क्या फायदा।।

मैं तो सत्संग गया गुरुवाणी सुनी।
गुरुवाणी को सुनकर ये ख्याल आ गया।।
जन्म मानव का लेकर दया न करी।
फिर मानव कहलाने से क्या फायदा।।

गंगा नहाने हरिद्वार काशी गया।
गंगा नहाते ही मन में ख्याल आ गया।।
तन को धोया मगर मन ने धोया नहीं।
फिर गंगा नहाने से क्या फायदा।।

मैंने वेद पढ़े मैंने शास्त्र पढ़े।
शास्त्र पढ़ते हुए ये ख्याल आ गया।।
मैनें ज्ञान किसी को बांटा नहीं।
फिर ज्ञानी कहलाने से क्या फायदा।।

माता पिता के चरणों में चारों धाम है।
आजा आजा ये ही मुक्ति का धाम है।।
माता पिता की सेवा की ही नहीं।
फिर तीर्थो में जाने से क्या फायदा।।

कुछ पल की ज़िन्दगानी

कुछ पल की जिन्दगानी, एक रोज सबको जाना।
वर्षों की तू क्यों सोचे, पल का नहीं ठिकाना।।

मल मल के तूने अपने तन को जो है निखारा।
इत्रों की खुशबुओं से महके शरीर सारा।
काया न साथ जानी ये बात न भुलाना।।

मन है हरि का दर्पण, मन में इसे बसा ले।
करके तू कर्म अच्छे, कुछ पुण्य धन कमा ले।
कर दान और धर्म तू रब को अगर है पाना।।

आएगी वो घड़ी जब, कोई न साथ होगा।
कर्मों का तेरे सारे एक एक हिसाब होगा।
ये सोच ले अभी तू ये वक्त फिर न आना।।

कोई नहीं है तेरा क्यों करता मेरा मेरा।
खुल जाए नींद जब भी समझो वही सवेरा।
हर भोर की किरण संग हरि का भजन तू गाना।।

कटु बोलने वाली पत्नी हो, धूर्त शठम मित्र हो
उत्तर देने वाला नौकर हो, साँप वाला घर हो
ये सब मृत्यु के समान ही हैं।

वैदिक कीर्तन

तर्ज : छोटी-छोटी गईंया ....

नाम प्रभु का प्यारा ओ३म्।
प्यारा ओ३म् प्यारा ओ३म्।।

अमृत रस की धारा ओ३म्।
प्यारा ओ३म् हमारा ओ३म्।।

कण कण में विस्तारा ओ३म्।
दाता पालन हारा ओ३म्।।

सब दुनिया का अधारा ओ३म्।
हर दुख में है सहारा ओ३म्।।

दिल से कभी क्या पुकारा ओ३म्।
सुन मुक्ति का द्वारा ओ३म्।।

रचना : कंचन कुमार

चार कामों में कोई साथ नहीं देता
ये कार्य स्वयं करने होते हैं -
भोजन, भजन, लग्न, मृत्यु।

ओ३म् जपा करो

तर्ज : तुम्हारा ..... इन्तजार है

ओ३म् जपा करो ओ३म् जपा करो।
सहारा मिल ही जाएगा।।
मन्त्र ये महान है ध्यान तो धरो।
किनारा मिल ही जाएगा।।

क्यों भटक रहे यहाँ किसके वास्ते।
कौन है यहाँ तुम्हारा क्या तलाशते।।
मुक्तसर सवाल है कुछ जवाब दो।
ईशारा फिर ना आएगा।।.... ओ३म् जपा करो

कैसे बात-बात में ढल गई उमर।
वक्त वो न हाथ आए, जो गया गुजर।।
देर हो गई मगर फिक्र न करो।
तुम्हारा दर्द जाएगा।। .... ओ३म् जपा करो

मन है मीन जान ले, मोह जाल है।
फाँस है सुखों की आशा, सर पे काल है।।
जन्म ये अमोल है देर न करो।
दोबारा ये न आएगा।।...... ओ३म् जपा करो

प्रेम के बहाव में तैरते रहो।
जीव जीव में हरि को देखते रहो।।
धर्म की डगर धरो डर सभी तजो।
सितारा जगमगाएगा।।...... ओ३म् जपा करा

अपने मन को जरा

तर्ज : इतनी शक्ति हमें देना दाता

अपने मन को जरा तुम सम्भालो।
वो कहाँ है कहाँ जा रहा है।।
किस तरफ मंजिलें है तुम्हारी।
किस तरफ वो लिए जा रहा है।।

इन्द्रियाँ तो विषय की है प्यासी, वो तो बस मौज ही चाहती है।
किसमें होगी तुम्हारी भलाई, वो जरा भी नहीं जानती है।
नाँव मंझधार में है तुम्हारी, ये भंवर की तरफ जा रहा है।।
किस तरफ मंजिले है ....

ज्ञान अपने लिए है जरूरी, तुम दिखावा किए जा रहे हो।
अपनी जीवन की सारी कमाई, क्यों गंवाते चले जा रहे हो।
उम्र यूं ही ढली जा रही है, मन फंसाता चला जा रहा है।।
किस तरफ मंजिल है ....

कुल की रक्षा के लिए एक का बलिदान,
ग्राम की रक्षा के लिए कुल का बलिदान,
पूरे जनपद शहर के लिए गाँव का बलिदान,
एवं आत्मरक्षा के लिए सारी पृथ्वी को,
छोड़ना पड़े तो छोड़ देना चाहिए।

गम न करो

तर्ज : जाने वो कैसे लोग थे जिनको

गम न करो गर दुनियाँ में, कांटो का हार मिला।
शुक्र करो हर पल तुमको हरि का आधार मिला।।

ग्रह नक्षत्र सितारे बादल बनकर छाते है।
करनी के बीजों पर अपना जल बरसाते हैं।।
सुखदुख अपने कर्मो का तुमको उपहार मिला।
शुक्र करो हर पल तुमको हरि का आधार मिला।।

बिखर गया-२ गर सपना तो तुम उसका गम न करो।
सपनों जैसी दुनिया में अपनो का दम न भरो।
एक हरि सच है सबको जीवन का सार मिला।।
शुक्र करो हर पल तुमको हरि का आधार मिला।।

आशाएँ मन में रखना तो कोई दोष नहीं।
बात न बन पाए तो प्यारे खोना होश नहीं।।
कौन यहाँ ऐसा है जिसको यश हर बार मिला।
शुक्र करो हर पल तुमको हरि का आधार मिला।।

मन हरि ओ३म् गा ले

मन हरि ओ३म् हरि ओ३म् गाले।
नाम जपने की आदत बना लें।।

पुण्य तेरा बढ़े जब सत्संग मिले।
दाता रहमत करे जब सद्गुरु मिले।
इस रीति से सबको रिझाले।।

तुझको जिसने दिया इसका मालिक वही।
मुफ्त में ही कभी नाम जपता नहीं।
कुछ किराया ही उसका चुका ले।।

कौन धड़कन से दिल की चलाए रे मन।
कौन नाड़ी में रक्त बनाये रे मन।
उस दाता का शुकर मना ले।।

जग रिझाने में जीवन गंवाना नही।
एक पल भी प्रभु को भुलाना नही।
उस प्रभु को ही तू भी रिझा ले।।

धन अनीति का सुख तुझको देगा नही।
चोट कुदरत की तू सह सकेगा नहीं
अब भी मौका है खुद को बचा ले।।

प्रेम करने से मंज़िल को पा जाएगा।
ध्यान करने से प्यारा नजर आएगा।
तू घड़ी भर ही गोता लगा ले।।

मनवा ओ३म् नाम तू

मनवा ओ३म् नाम तू गा ले।
सुमिरन कर ले परमपिता को, मूरख अलख जगा ले।।

क्या जाने तू प्रभु की माया,
इस पल धूप तो उस पल छाया।
अवसर ऐसा फिर न मिलेगा,
जीवन सफल बना ले।।

क्या देगी दुनिया दस रंगी,
क्या देंगे ये साथी संगी।
ओ३म् नाम रस पी मतवारे,
ओ३म् नाम फल खा ले।।

तन की क्षण भंगुर नौका पर,
परदेसी आया तू चढ़कर।
ओ३म् नाम पतवार बनाकर,
नौका पार लगा ले।।

हिम्मत ना हारिये

हिम्मत न हारिये, प्रभु न विसारिये।
हँसते मुस्कराते हुए ज़िन्दगी गुजारिये।

हँसते मुस्कराते हुए जीना जिनको आ गया।
टूटे हुए दिलों को सीना जिन को आ गया।।
ऐसे देवताओं के चरणों को पखारिये।
उनकी तरह नेक बन के ज़िन्दगी गुजारिये।। ....

काम ऐसे कीजिये कि जिनसे हो सब का भला।
बातें ऐसी कीजिये, जिनमें हो अमृत भरा।।
मीठी बोली बोल सबको, प्रेम से पुकारिये।
कड़वे बोल बोल के न, ज़िन्दगी गुजारिये।। ....

मुश्किलों मुसीबतों का, करना हो जो खात्मा।
हर समय कहिये तेरा शुक्र है परमात्मा।।
गिले शिकवे कर अपना हाल न बिगाड़िये।
जैसे प्रभु रखे वैसे ज़िन्दगी गुजारिये।। ....

शुभ कर्म करते हुये, दुःख भी अगर पा रहे।
पिछले पाप कर्मों का, भुगतान वो भुगता रहे।।
आगे मत उठाइये, पिछले बोझ उतारिये।
गलतियों से बचते हुए, ज़िन्दगी गुजारिये।। ....

दिल की नोट बुक पे बातें नोट कर लीजिए।
बनके सच्चे सेवक सच्चे, दिल से अमल कीजिए।।
करके अमल बनके कमल, तरिए और तारिए।
जग में जगमगाती हुई, ज़िन्दगी गुजारिये।। ....

परमेश्वर के गुण

तर्ज : दिल लूटने वाले

परमेश्वर के गुण गाने से, खुशियों की दौलत मिलती है।
मन से छल-कपट मिटाने से, खुशियों की दौलत मिलती है।।

दिन रात संवारा करते हो अपने बिगड़े हुए कामों को।
औरों की बिगड़ी बनाने से, खुशियों की दौलत मिलती है।।

सुखियों से हँसकर बोलते हो दुःखियों से भी बातें किया करो।
दुःखियों का दुःख मिटाने से, खुशियों की दौलत मिलती है।।

धन जोड़ जोड़कर रखने से सौ चिन्ताएँ लग जाती हैं।
धन को शुभ अर्थ लगाने से, खुशियों की दौलत मिलती है।।

दुर्जन की संगति करने से बल, बुद्धि, यश और आयु घटे।
सत्संग में प्यारे जाने से खुशियों की दौलत मिलती है।।

कार्य में नियुक्त होने पर नौकरों की,
दुखः की घड़ी में बान्धवों की,
विपत्ती काल में मित्रों की,
तथा धन नष्ट होने पर पत्नी की,
परीक्षा होती है।

जरा तो इतना

जरा तो इतना बता दो भगवन।
लगन ये कैसी लगा रहे हो।।
मुझी में रहकर मुझी से मेरी।
यह खोज कैसी करा रहे हो।।

हृदय भी तुम हो, तुम ही स्पंदन।
प्रेम भी तुम हो तुम ही हो प्रियतम।।
पुकारता मन तुम ही को क्यों है।
तुम ही जो मन में समा रहे हो।।

सीप भी तुम हो तुम्ही हो मोती।
दीप भी तुम हो, तुम ही हो ज्योति।।
तुम्ही को लेकर तुम्ही को ढूंढू।
नयी यह लीला बता रहे हो।।

मन भी तुम हो तुम्ही हो रसना।
गीत तुम हो तुम ही हो रचना।।
स्तुति तुम्हारी तुम्ही से गाऊँ।
नयी यह रीति बता रहे हो।।

कर्म भी तुम हो तुम ही हो कर्त्ता।
धर्म भी तुम हो तुम ही हो धरता।।
निमित्त कारण मुझे बना कर।
यह नाच कैसा नचा रहे हो।।

रे मनवा ईश्वर के गुण गाना

रे मनवा ईश्वर के गुण गाना।
यदि अपनी जीवन नैया को चाहे पार लगाना।।

अबर खरब धन जोड़ के धर ले। दुनिया भर का राज तू कर ले।
इस पारे को अंगारे पर जो चाहे ठहराना।।

द्रव्य धरा से धरा रहेगा और बैंको में भरा रहेगा।
जिसको कहता मेरा मेरा इक दिन होय बेगाना।।

मोह माया में होकर अंधा भूल गया निज करम का धंधा।
जिस दिन पड़े गले में फंदा उस दिन हो पछताना।।

प्राणों का जो प्राण हमारा यदि उसमें हो ध्यान हमारा।
ठाकुर उसकी अमृत छाया बिन नहीं और ठिकाना।।

बहने वाला मृदु जल भी बर्फ बनकर धीरे-धीरे पाषाण बन जाता है और पाषाण द्रवित होकर जल बन जाता है। विधाता की शक्ति से निर्मित मार्ग में किसका स्वभाव स्थिर रह सका है?

तेरा दर्श पाने को जी चाहता है।
खुदी को मिटाने को जी चाहता है।।
ये दुनिया है सारी नजर का ही धोखा।
तुझी में समाने को जी चाहता है।।

मुझे तूने मालिक

मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दिया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा तेरा शुक्रिया है।

न मिलती अगर दी हुई दात तेरी।
तो क्या थी जमाने में औकात मेरी।
यह बन्दा तो तेरे सहारे जिया है,।।
तेरा शुक्रिया है, तेरा.....

यह जायदाद दी है यह औलाद दी है।
मुसीबत में हर वक्त इमदाद की है।
तेरा ही दिया मैंने खाया पीया है।।
तेरा शुक्रिया है, तेरा ....

मेरा भूल जाना तेरा न भुलाना।
तेरी रहमतों का कहाँ है ठिकाना।
तेरी इस मोहब्बत ने पागल किया है।।
तेरा शुक्रिया है, तेरा ....

तेरी बन्दगी से मैं बन्दा हूँ मालिक।
तेरे ही करम से मैं जिन्दा हूँ मालिक।
तुम्ही ने तो जीने के काबिल किया है।।
तेरा शुक्रिया है, तेरा ....

आन बसो मन मेरे

तर्ज : सिर जावे तॉं जावे मेरा वैदिक धर्म न जावे

आन बसो मन मेरे
प्रभु आन बसो मन मेरे।

विषयां ने मैंनू आन दबाया।
एहनॉं तो डर के नस आया।
मैं चरणॉं विच तेरे।
प्रभु आन बसो मन मेरे।

मोह माया ने जाल बिछाया।
काम क्रोध ने घेरा पाया।
डाकू चोर लुटेरे।
प्रभु आन बसो मन मेरे।

तेरे बिना प्रभु होर न कोई।
हुन जो सुने मेरी अरजोई।
वेखेया चार चुफेरे।।
प्रभु आन बसो मन मेरे।

माँ को जाना, पिता को जाना,
भाई को जाना, बहन को जाना, सबको जाना,
पर उसको नहीं जाना जिसके पास जाना।

जीवन की रुलाती घड़ियों में

तर्ज - बाबुल की दुआएं लेती जा

जीवन की रुलाती घड़ियों में मिलता है तुम्हारा प्यार मुझे।
कुछ चाह न बाकी रहती है प्रभु आके तेरे दरबार मुझे।।
जीवन को रुलाती......

मेरे दिल के गगन पर आके कभी जब गम की घटा छा जाती है।
इक पल में प्रभु जी तेरी दया तब बनके हवा आ जाती है।
तुझे रक्षक सब का कहने में फिर क्यों हो भला इनकार मुझे।
जीवन को रुलाती......

प्रभु दर पे तेरे आने वाला झोली अपनी भर लेता है।
तेरे दर से प्रभु मैं क्या मांगू बिन मांगे तू सब कुछ देता है।
जो तेरी इच्छा है दाता हरदम है वही स्वीकार मुझे।
जीवन को रुलाती ....

जब तक मैं 'पथिक' दुनियां में रहूं बस एक यही मेरा काम रहे।
मेरे दिल में तुम्हारी याद रहे होंटों पे प्रभु तेरा नाम रहे।
रहे प्यार तुम्हारे चरणों में चाहे जन्म मिले सौ बार मुझे।
जीवन को रुलाती......

नजर उठे तो दुआ होती है
नजर झुके तो हया होती है
नजर तिरछी हो तो अदा होती है
नजर-नजर से मिले तो कज़ा होती है

उस के चरणों में

तर्ज - इस भरी दुनया में कोई हमारा न हुआ

उसके चरणों में तो हुआ ध्यान तुम्हारा ही नहीं।
तुझ को धन प्यारा है भगवान तो प्यारा ही नहीं।
उस के चरणों में.......

क्यों सुनेगा भला परमात्मा आवाज़ तेरी।
तूने उसको कभी दिल से तो पुकारा ही नहीं।।
उस के चरणों में.......

क्या हुआ कितने ही मैदान अगर मार लिए।
अपने इस मन को तो अब तक तूने मारा ही नही।
उस के चरणों में.......

यह हवा आज तो उलटी ही ज़माने में चली।
भले इनसान का दुनियां में गुजारा ही नहीं।
उस के चरणों में.......

वह क्या उस पार किनारे पे भला पहुंचेगा।
जिसने मंझधार में कश्ती को उतारा ही नहीं।
उस के चरणों में.......

तू है जिसने कभी उसको न 'पथिक' याद क़िया।
वह है जिस ने कभी तुझको तो बिसारा ही नहीं।
उस के चरणों में.......

किसी के काम जो आये

तर्ज - बहारो फूल बरसाओ

किसी के काम जो आए उसे इनसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए उसे इनसान कहते हैं।
किसी के काम जो आए.......

कभी धनवान है कितना कभी इनसान निर्धन है।
कभी सुख है कभी दुःख है इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराये उसे इनसान कहते हैं।।
किसी के काम जो आए.......

यह दुनियां एक उलझन है कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हंस हंस के जीता है कोई जीता है रो रो कर।
जो गिर कर फिर संभल जाये इनसान कहते हैं।।
किसी के काम जो आए.......

अगर ग़लती रुलाती है तो यह राह भी दिखाती है।
बशर ग़लती का पुतला है यह अक्सर हो ही जाती है।
जो ग़लती करके पछताये उसे इनसान कहते हैं।।
किसी के काम जो आए.......

अकेले ही जो खा खा कर सदा गुज़रान करते हैं।
यों भरने को तो दुनियाँ में पशु भी पेट भरते हैं।
'पथिक' जो बाँट कर खाये उसे इनसान कहते हैं।।
किसी के काम जो आए.......

करम खोटे तो

तर्ज - सुहानी चाँदनी रातें

करम खोटे तो ईश्वर के भजन गाने से क्या होगा।
किया परहेज़ न कुछ भी दवा खाने से क्या होगा।।
करम खोटे तो ईश्वर के ......

समय पर एक ही ठोकर बदल देती है जीवन को।
जो ठोकर से भी न समझे तो समझाने से क्या होगा।।
करम खोटे तो ईश्वर के ......

समय बीता हुआ हरगिज़ कभी न हाथ आएगा।
लिया चुग खेत चिड़ियों ने तो पछताने से क्या होगा।।
करम खोटे तो ईश्वर के ......

मुसीबत तो टले अपनी सदा हिम्मत ही रखने से।
मुकद्दर पर भरोसा कर के सो जाने से क्या होगा।।
करम खोटे तो ईश्वर के ......

तू खाली हाथ आया है व खाली हाथ जाएगा।
'पथिक' मालिक करोड़ों का भी कहलाने से क्या होगा।।
करम खोटे तो ईश्वर के ......

प्रभु नाम कीर्तन

तर्ज : रघुपति राघव राजा राम

हे जगदीश्वर हे भगवान।
बहुत निराली तेरी शान।
विश्व विधाता ईश महान्।
बहुत निराली तेरी शान।

अमर अनादि अनन्त अनूपा।
नित्य सनातन सत्य स्वरूपा।
अलख निरजंन शक्तिमान।
बहुत निराजी तेरी शान...

मात पिता बन्धु और भ्राता।
रक्षक पालक तू सुख दाता
तू सब का प्राणों का प्राण
बहुत निराली तेरी शान...

मंगल जनक अमंगल हारी
कष्ट विदारक पर उपकारी
दीन-दयाकार कृपानिधान
बहुत निराली तेरी शान...

पतित सुपावन शंकर स्वामी।
परम सहायक अन्तर्यामी।
"पथिक" करें तेरा गुणगान।
बहुत निराली तेरी शान...

समय बड़ा बलवान रे

समय बड़ा बलवान रे, समय बड़ा बलवान ।
इक दिन सबको जाना होगा निर्धन या धनवान।।

है दुर्लभ ये मानव जीवन, बड़ा कठिन पाना मानव तन।
पाकर धन वैभव यौवन तू, मत करना अभिमान रे।।

जिस दिन आया तू धरती पर, काल चला हमजोली बनकर।
पता नहीं कब धर बैठेगा मूर्ख रूख पहचान रे।।

काम बहुत है जीवन थोड़ा, उस पर मन का चंचल घोड़ा।
रुक जा प्राणी गा ले प्रभु का, सुन्दर प्यारा नाम रे।।

जब चलने का पल आयेगा, कोई रोक नहीं पायेगा।
प्रभु चरणों में शरण तिहारी, सोच समझ नादान रे।।

मुसीबत विपत्ती काल के लिए धन की रक्षा करो, धन से अधिक पत्नी की रक्षा करनी चाहिए, परन्तु धन एवं पत्नी से भी अधिक अपनी रक्षा करनी चाहिए। यदि स्वयं ही नहीं रहे तो धन का और पत्नी का क्या प्रायोजन।

तेरी हीरे जैसी श्वासा

तेरी हीरे जैसी श्वासा बातों में बीती जाये।
मन रे ..... बातें में बीती जाए।।

गंगा यमुना खूब नहाया गया न मन का मैल।
घर धंधों में लगा हुआ था ज्यों कोल्हू का बैल।
तेरे जीवन की ये आशा बातों में बीती जाय।।

पाप गठरिया सिर पर लादे रहा भटकता रोय।
प्रेम सहित उस दाता की की न तू ने खोज।
झूठा करता रोज तमाशा बातों में बीती जाय।।

किया न पौरूष आकर जग में दिया न कुछ भी दान।
मेरी-मेरी करते करते निकल जायेगे प्राण।
जैसे पानी बीच बताशा बातों में बीती जाय।।

नस-नस में वो रोम-रोम में रमा हुआ है ओ३म।
कण-कण में घट-घट में व्यापक उसको तू पहचान।
उससे मिलने की अभिलाशा बातों में बीती जाये।।

जहाँ आदर सम्मान न हो , जहाँ आजीविका के साधन न हों जहाँ बन्धु बान्धव न हो, जहाँ विद्या प्राप्ति की संभावना न हो ऐसे देश को छोड़ देना चाहिए।

बेटियाँ

गजल

शबनम की एक बूँद सी होती है, बेटियाँ।
स्पर्श खुरदरा हो तो रोती है बेटियाँ।।

रौशन करेगा पुत्र तो बस एक ही कुल को।
दो दो कुलों की लाज निभाती हैं बेटियाँ।।

कोई नहीं है दोस्तों एक दूसरे से कम।
हीरा है अगर पुत्र तो मोती है बेटियाँ।।

दुनिया की रस्म है ये विधि का विधान है।
मुट्ठी में भरी नीर सी होती है बेटियाँ।।

सच्चा साथी।

रोगी होने पर जो साथ हो
दुखी होने पर जो साथ हो
अकाल पड़ने पर जो साथ दे
शत्रु से संकट में जो साथ दे
मुकदमें में फंसने पर गवाही दे
और मृत्यु होने पर जो शमशान में साथ दे
वही सच्चा बन्धु है।

तू प्यार का सागर है

तू प्यार का सागर है तेरी इक बूंद के प्यासे हम।
लौटा जो दिया तूने चले जायेंगे जहां से हम।।
तू प्यार का सागर है...

घायल मन का पागल पंछी उड़ने को बेकरार।
पंख है कोमल आँख है धुंधला जाना है सागर पार।
अब तू ही इसे समझा राह भूले थे कहाँ से हम।।
तू प्यार का सागर है...

इधर झूम के गाये जिन्दगी, उधर है मौत खड़ी।
कोई क्या जाने कहाँ है सीमा, उलझन आन पड़ी।
कानों में जरा कह दे कि आये कौन दिशा से हम।।
तू प्यार का सागर है...

इस तरह से न कमाना कि पाप आए
इस तरह से न खर्च करना कि कर्ज आए
इस तरह से न खाना कि मर्ज आए
इस तरह से मत चलना कि देर हो जाए।

साथ ले लो पिता

साथ ले लो पिता, आगे बढ़ जाऊँगा।
वरना सम्भव है मैं भी फिसल जाऊँगा।।

राहे चिकनी खड़ी और पथरीली हैं।
कांटो झाड़ी भरी और जहरीली है।
दो सहारा कि इनमें मैं फँस जाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

भोग विषयों की उठती है इक इक लहर।
मुझ को उलझा डुबाने चली हर प्रहर।
दे दो पतवार वरना न बच पाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

दुनिया इस ओर कहती है आ मौज ले।
पर उधर धर्म कहता है दुःख मोल ले।
तुम कहोगे मुझे जैसा कर पाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

सत्य कहता हूँ भूला जभी मैं तुम्हें।
पायी दुनिया मगर एक न पाया तुम्हें।
बिन तुम्हारे मैं आखिर किधर जाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

प्रार्थना

(दिवंगत आत्मा की शांति हेतु)

हे प्रभु तेरी शरण में आत्मा।
शांति देना तुम इन्हें परमात्मा।।

दुख सहन करने की हमको शक्ति दो।
आत्मा को सद्‌गति या मुक्ति दो।।
कष्ट और सन्ताप का करो खात्मा।
शान्ति देना तुम इन्हें परमात्मा।।

इस जनम की यात्रा पूरी हुई।
सांसों की तनमात्रा पूरी हुई।।
तन कंचन से मुक्त है जीवात्मा।
शांति देना तुम इन्हें परमात्मा।।

कर्म फल ओर आना जाना तेरे हाथ।
तू यहाँ भी ओर वहां भी सबके साथ।।
भक्ति शक्ति मुक्ति तू विश्वात्मा।
शांति देना तुम इन्हें परमात्मा।।

रचना : कंचन कुमार

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।।

जो ध्यावे *फल पावे, दुःख बिनसे मन का।*
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।।

मात पिता तुम मेरे शरण गहूं मैं जिसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं किसकी।।

तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी।।

तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता।।

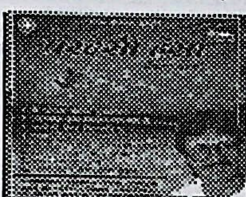
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति।।

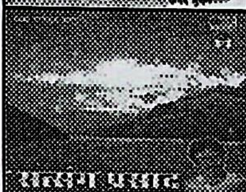
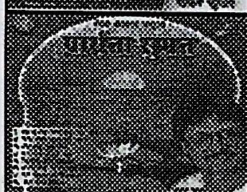
दीनबंधु दुःख हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।
करूणा हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा मैं तेरे।।

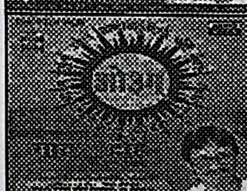
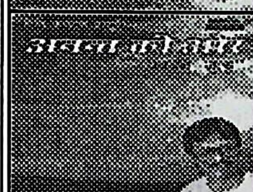
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे

पं. कंचन कुमार के भजन सी.डी./वी.सी.डी./पुस्तकें











त्रैमासिक पत्रिका आनन्द पथ-ओ३म शरणम् के सदस्य बनें। सदस्यता ५०/- रूपये वार्षिक

श्री कंचन कुमार की पुस्तकें

1. उमर का पंछी (वैराग्य भजन) 15/-
वैराग्य भजनों का एक पुस्तक में संकलन।

2. प्रार्थना सुमन (प्रार्थना भजन पुस्तक) 50/-
प्रार्थना भजनों का अद्वितीय संकलन।

3. ऋषि के तराने 25/-
ऋषि दयानन्द गुणगान (भजन)

4. प्रेम पुष्पांजलि (भजन) 20/-
सद्गुरु भजनों का संग्रहणीय संकलन।

5. प्रेरक प्रसंग 25/-
महापुरूषों के जीवन प्रसंग।

6. हास्यमेव जयते (आने वाली पुस्तक)
हास्य प्रसंग

7. अनमोल मोती (आने वाली पुस्तक)
संतो के अनमोल वचन संग्रह

Contact :

Pt. KANCHAN KUMAR
Phone : 011-25217058, 09868717038
Website : www.aryasamajpracharak.com
E-mail : kanchankumar@aryasamajpracharak.com

पं. कंचन कुमार के भजन कैसेट्स/सी.डी. एवं वी.सी.डी.

आडियो कैसेट / सी.डी.		मूल्य कैसेट	सी.डी.
1. उड़ेगा हंस अकेला	(वैराग्य भजन)	25.00	45.00
2. परदेसी हंसा	(वैराग्य भजन)	25.00	45.00
3. ओ३म् जपो	(जाप भजन)	25.00	45.00
4. प्रार्थना सुमन	(प्रार्थना भजन)	25.00	45.00
5. सत्संग प्रसाद 1	(भजन प्रवचन)	25.00	45.00
6. सत्संग प्रसाद 2	(भजन प्रवचन)	25.00	45.00
7. सत्संग सरोवर 1	(भजन प्रवचन)	25.00	45.00
8. सत्संग सरोवर 2	(भजन प्रवचन)	25.00	—
9. अनन्त की ओर	(प्रवचन मृत्यु)	25.00	45.00
10. ऋषि के तरानें	(स्वामी दयानन्द भजन)	25.00	45.00
11. गायत्री महिमा	(गायत्री भजन)	25.00	45.00
12. गायत्री दोहे	(गायत्री जाप सहित)	25.00	45.00
13. अन्तर्यात्रा	(ध्यान संगीत, बांसुरी वादन)	—	45.00
14. ओ३म् शरणम्	(सभी कैसेट के चुने हुए भजन)	25.00	—
15. प्रार्थना प्रदीप	(सभी कैसेट के चुने हुए भजन)	25.00	—
16. सत्संग सरोवर 1	(भजन प्रवचन)	वी.सी.डी.	50.00
17. अनन्त की ओर	(प्रवचन मृत्यु)	वी.सी.डी.	50.00
18. तेरा शुक्रिया है	(भजन प्रवचन)	वी.सी.डी.	50.00
19. ओ३म् आनन्द	(भजन प्रवचन)	वी.सी.डी.	50.00
20. समर्पण	(भजन प्रवचन)	वी.सी.डी.	50.00
21. खोलो दया का द्वार	(भजन प्रवचन)	वी.सी.डी.	50.00
22. विचार संगीत	(भजन)	वी.सी.डी.	50.00

9044 51 3667

कैसेट्स/सी.डी./पुस्तक प्राप्ति स्थान

स्थान/पता	मोबाईल/फोन
1. ओ३म् शरणम् 011–25217058	09868717038
2. मै. विजय कुमार गोविन्द राम हासानन्द	011–23977216
3. आर्य समाज मंदिर (बिलासपुर)	07752–220255
4. श्री सुधीर आर्य (बिलासपुर)	09893121694
5. मै. आर्य प्रकाशन अजमेरी गेट, दिल्ली	011–23233280
6. आर्यसमाज मंदिर (हैदराबाद)	24751658
7. श्री हरीश सखूजा (दिल्ली)	011–26088111
8. आर्य समाज सैजपुरबोघा, अहंमदाबाद	079–22815216
9. आर्य समाज मंदिर से.–22, (चण्डीगढ)	0172–2543374
10. श्री रमेश भाई लखवानी (माउन्टआबू)	09828612409
11. श्री वासू जी, 48, मदार गेट, अजमेर	045–2422849
12. श्री विज़य आर्य, मोहाली, चण्डीगढ़	09876843219
13. आर्यसमाज फल मण्डी सिकंदराबाद	27071818
14. आर्यसमाज अंधेरी मुम्बई	9821527779
15. श्याम शास्त्री मथुरा	9410856898
16. हरि प्रसाद जी हिंडौन सिटी (राज॰)	9460441980
17. मै. ग्रोवर सन्स करोलबाग	011–28758048
18. श्री गणेश दास गोयल नया बाजार	011–65379070
19. आर्यसमाज गांधीधाम कच्छ (गुजरात)	02836–231223
20. वेद ज्ञान भंडार करनाल	09896131272
21. भारती ध्वज संस्थान पहाड़गंज	09810994665



पं० कंचन कुमार

भक्ति, विवेक, वैराग्य, चिन्तन एवं प्रार्थना की तल्लीनता में गाए भजन तन को स्वस्थता, मन को मधुरता एवं बुद्धि को दिव्यता प्रदान करते हैं। श्री कंचन कुमार द्वारा गाए भजनों ने भारत भर में हजारों व्यक्तियों के मानस में भक्ति रस का संचार किया है। देश के हर कोने में आपने भजन-सत्संग से हजारों भक्तों को प्रभावित किया है।

आप 1996 से धर्म प्रचार कर रहे हैं। इस दौरान सम्पूर्ण भारत में आपने भ्रमण किया। आपके भक्ति संगीत सत्संग कार्यक्रम दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं आस्था चैनल पर समय-समय पर प्रसारित होते रहे हैं। आपके भजनों के 15 कैसेट एवं 15 सी.डी. एवं भजनों की चार संकलित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

तीन वर्ष श्रद्धेय आचार्य सुधांसु जी महाराज एवं दो वर्ष श्रद्धेय स्वामी रामदेव जी के सान्निध्य में आप भजन कार्यक्रम प्रस्तुत करते रहे हैं।

श्रद्धेय स्वामी रामदेव जी के सान्निध्य में आपने निरन्तर दो वर्ष तक लगभग दो करोड़ साधकों के समक्ष मंच पर प्रत्यक्ष रूप से भजन प्रस्तुत किये।

वर्तमान में आप स्वतन्त्र रूप में प्रचार कार्य कर रहे हैं।

- निवेदक : गायत्री सत्संग सभा